7. तेलंगाणा के ज़हीराबाद मंडल में वैकल्पिक जन वितरण व्यवस्था पर की जाने वाली पहल से हम क्या सीख सकते हैं? (AS_4)
8. ''पर्यावरण स्थानीय समुदायों के जीवन और आजीविका के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और स्थानीय समुदायों की जीवन शैली पर्यावरण के अनुरूप(Harmonious) होती है।'' स्पष्ट कीजिए। (AS_6)
9. भारत के मानचित्र में नर्मदा नदी, सरदार सरोवर बांध को दर्शाइए। (AS_5)

चर्चा :

कृषि क्षेत्र में, फ़सलों की मात्रा में वृद्धि के नाम पर किसी संहारक औषधी का प्रयोग अधिक होना, क्या श्रेयस्कर है? इस पर चर्चा कीजिए।

परियोजना कार्य

कार्बनिक कृषि में आपने वानस्पतिक खाद के बारे में पढ़ा है। यहाँ एक साधारण विधि दी गयी है जिसका प्रयोग आप अपने विद्यालय और घर में कर सकते हैं।

- एक बड़े आकार का पतीला लीजिए और उसमें पानी की निकासी के लिए कुछ छेद बनाइए।
- उस पर नारियल के रेशों की परत बिछाइए? निकासी के लिए।
- उसे मिट्टी की एक पतली परत से ढक दीजिए।
- सब्ज़ी के अपशिष्टों को परत में मिलाइए।
- मिट्टी की एक अन्य परत बिछाइए।
- फिर से सब्ज़ी के अपशिष्टों को परत में मिलाइए।
- मिट्टी से ढक दीजिए।
- एक सप्ताह के पश्चात इसमें केंचुओं(Earthworms) को छोडिए।
- इस मिट्टी का प्रयोग एक छोटे से बगीचे को बनाने में कीजिए, जिसमें आप अपनी पसंद के पौधे उगा सकते हैं।

SCERT TELANGANA

अध्याय 12

विश्व युद्धों के बीच विश्व
(The World Betweeen the World Wars)

चित्र 12.1 : एरिक हॉब्सबाम

प्रस्तावना

इस अध्याय में हम 20 वीं शताब्दी के विश्व इतिहास का परिचय देंगे। हम दो विश्वयुद्धों के कारणों और परिणामों तथा विश्वशांति और विकास को सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठन की उत्पत्ति के बारे में बातचीत करेंगे।

20 वीं सदी (The Twentieth Century)

एरिक हॉब्सबाम (Eric Hobsbawm), इतिहासवेत्ता ने 20वीं सदी को 'पराकाष्ठा का युग' (Age of extremes) कहा। एक ओर अविवादित शक्तियों के विचारों और अन्य लोगों के घृणा के कारण फासीवाद निरंतर बलशाली वन रहा था। दूसरी ओर प्रजातंत्र की माँग में भी वृद्धि हो रही थी। औषधियों के क्षेत्र में नवीन खोजों के कारण औसत जीवन प्रत्याशा दर में उच्च वृद्धि हो रही थी। फिल्म जैसे कला के नये रूप प्रसिद्ध हो रहे थे। विज्ञान के क्षेत्र में जीवन और परमाणु के बारे में नयी खोजें हो रही थी।

20 वीं सदी में कई महान प्रयोग हुए। कुछ देशों में, समाजवादी समाजों का उदय हुआ। समाजवादी समाजों में लोग समानता और बंधुत्व से रहते थे। कुछ देशों ने उदार प्रजातंत्र को अपनाया था जिसमें लोगों को राजनैतिक स्वतंत्रता और पूँजीवादी आर्थिकता प्राप्त थी।

20 वीं शदी के आरंभ में, विश्व पश्चिमी के विकसित औद्योगिक देशों (ब्रिटेन, यू.एस.ए., जर्मनी, फ्रांस, इटली, जापान आदि मिलाकर) और एशिया और आफ्रिका जैसे उपनिवेशी देशों में विभाजित था। वे विकसित देश जिनके अपने उपनिवेश थे वे एक दूसरे से प्रतियोगिता कर रहे थे। ये देश दो शत्रु समूहों या गुटों में बँट गये थे। एक ओर जर्मनी, आस्ट्रिया और हंगरी थे तो दूसरी ओर ब्रिटेन, फ्रांस और रूस

घटनाक्रम

प्रथम विश्वयुद्ध का आरंभ 1 अगस्त	1914
रूस की क्रांति	1917
प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति	1918
वार्सा की संधि	1919
राष्ट्र संघ का गठन	1919
जर्मनी में हिटलर का उदय	1933
द्विवितीय विश्वयुद्ध का आरंभ	1939
रूस पर जर्मनी का आक्रमण	1942
संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन	1945
दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति	1945

SCERT TELANGANA

चित्र 12.2 : इतिहास में पहली बार WW I पर बम गिराने के लिए विमानों का उपयोग किया गया।

थे। प्रत्येक समूह विश्व पर नियंत्रण करना चाहता था। साथ ही जितना संभव हो सके उतने उपनिवेशों और बाज़ारों पर नियंत्रण करना चाहता था।

प्रथम विश्वयुद्ध 1914 में आरंभ हुआ। वास्तव में यह विश्व युद्ध ही या क्योंकि विश्व के लगभग सभी देशों ने इस युद्ध में भाग लिया था। इनमें से कुछ ने पूर्व से जापान और चीन को और पश्चिम से US अमेरिका को शामिल कर लिया। 1918 में प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो गया। ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी और इसके मित्र राष्ट्रों को युद्ध में हरा दिया। जो विश्व युद्ध का कारण बना।

विश्व युद्ध के कारण (Causes for the World Wars)

आक्रमक राष्ट्रवाद (Aggressive Nationalism)

राष्ट्रीयवाद की विचारधारा एक सकारात्मक आवेग थी। लोगों की सुदृढ़ राष्ट्रीयता की भावना के कारण उनके नये आधुनिक राष्ट्रों का गठन हुआ। यह जर्मनी और इटली के एकीकरण का भी कारण थी। उस विचारधारा ने इन देशों में अहंकार की भावना उत्पन्न कर दी। वे पड़ोसी देशों से घृणा करने लगे।

1923 का इटली का फासीवाद और जर्मनी के नाजियों का राष्ट्रीय समाजवाद, विनाशक रूप में आक्रमक नाजीवाद के अन्य प्रकार थे। फासियों ने आक्रमक राष्ट्रवाद की भावना बढ़ाई और जर्मनी को विश्व पर शासन करने वाले विजेता के रूप में प्रतिबिंबित करने का प्रयास किया। इसने जर्मनी के लोगों यूरोप के अन्य देशों के प्रति भड़काया।

साम्राज्यवाद

औद्योगिक पूँजीवाद की उन्नति से ब्रिटेन, जर्मनी और संयुक्त अमेरिका जैसे यूरोपीय देशों को अपनी वस्तुओं के लिए बाज़ार और कच्चे माल की जरूरत पड़ी। वे उपनिवेशों में अपनी बढ़ती पूँजी का निवेश करना चाहते थे। इसीलिए 19 वीं शताब्दी के अंत तक यूरोपीय देशों में उपनिवेशों की होड़ लग गयी । नयी औद्योगिक शक्तियाँ (जैसे जर्मनी और इटली) जब उभरे तब वे उपनिवेशों का पुनः बंटवारा करना चाहते थे किंतु पुरानी शक्तियाँ इसके लिए तैयार नहीं थी। इस स्थिति ने बड़ा तनाव उत्पन्न किया ने जो कई युद्धों का कारण बना।

SCERT TELANGANA

गुप्त मैत्रियाँ (Secret Alliances)

1870 ई. में फ्रांस को हराने के बाद जर्मनी के चांसलर बिसमार्क ने 1879 में आस्ट्रीया व 1882 ई. में इटली के साथ एक गुप्त संधि की। इसे त्रिगुट संधि कहते है। उनकी समस्याओं के निपटानें के बाद फ्रांस ने 1891 ई. में रूस के साथ और 1904 ई. में ब्रिटेन के साथ एक पारस्परिक मैत्री की। रूस, फ्रांस तथा ब्रिटेन ने 1907 ई. में त्रिपक्षीय गुट (Triple Entente) का गठन किया। त्रिपक्षीय मैत्री गठबंधन का नेतृत्व जर्मनी कर रहा था। इस त्रिपल गठबंधन से यूरोपीय शक्तियों को ईर्ष्या हुई और वे एक-दूसरे पर शक करने लगे। वास्तविक शांति के बजाय, इस गठबंधन ने यूरोप में भय और 'सैन्यशांति' (Armed peace) के वातावरण का निर्माण किया।

आरेख 1 : शस्त्रों की दौड़

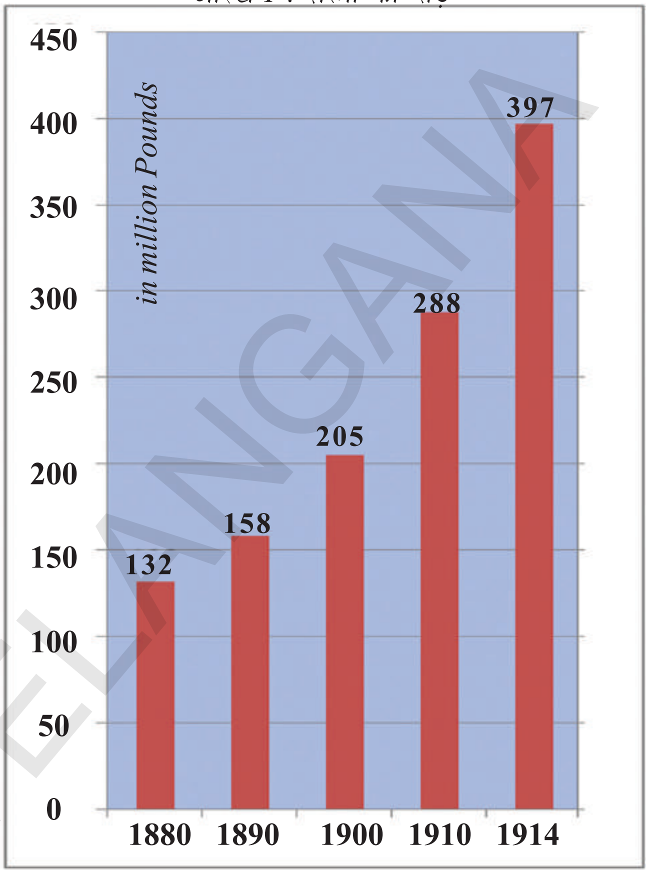

महान् शक्तियों के द्वारा सैन्य खर्च (जर्मनी, आस्ट्रिया - हंगरी, ग्रेट ब्रिटेन, रूस, इटली और फ्रांस 1880-1914) स्रोत : द टाइम्स एटलस ऑफ वर्ल्ड हिस्टरी, लंदन 1978।

सैन्यवाद (Militarism)

सैन्यवाद का मानना था कि सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सैन्य शक्ति और समस्याओं के समाधान के लिए युद्ध एक सही मार्ग है। 1880 से 1914 तक छः बड़ी शक्तियों (जर्मनी, रूस, आस्ट्रिया, इटली, फ्रांस, ब्रिटेन) के सैन्य खर्च में 3 गुना तक वृद्धि हुई। अर्थात् यह £ 132 मिलियन से £ 397 मिलियन हो गया।

सैन्यवाद के संदर्भ में तीन बातें महत्वपूर्ण है। पहली बात, यह थी कि इन सभी देशों ने अपनी सुरक्षा के लिए बहुत बड़ी सेनाओं का गठन किया। दूसरी बात, अपने सैन्य हथियारों में वृद्धि के लिए इन लोगों ने एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा की उन्होंने लोगों को युद्ध में समर्थन देने के लिए प्रोत्साहित किया। तीसरी बात यह थी कि - हथियारों के एक बड़े उद्योग का निर्माण हुआ, जिसके विचार में कूटनीतिक समस्याओं का समाधान युद्ध था। युद्ध प्रायः उनके लाभ में कई गुणा वृद्धि करते थे।

SCERT TELANGANA

बल्कान राजनीति

बल्कान प्रायद्वीप में कई छोटे-छोटे साम्राज्य थे। वहाँ कई वर्गों एवं भाषा के लोग रहते थे। वे तुर्की साम्राज्य के अधीन थे। ओटोमान साम्राज्य के पतन के पश्चात आस्ट्रिया, जर्मनी, तुर्क, रशिया ने उस क्षेत्र पर अधिकार पाना चाहा। दीर्घ काल से रशिया और तुर्क काला सागर और भूमध्य सागर पर अधिकार पाना चाहते थे। इसीलिए उस क्षेत्र में तनाव थी स्थिति उत्पन्न हुई। उस समय आस्ट्रिया बोसनिया में सरबिया बगावत को दबाने में लगा हुआ था जो कि आस्ट्रिया के कानून के विरोध में था।

तत्कालीन कारणः-

28 जून 1914 को बोसनिया के सर्ब ने आस्ट्रिया हंगरी के राजकुमार फर्डिनेण्ड की हत्या कर दी। आस्ट्रिया ने सरबिया ने इसकी जाँच की माँग की। 28 जुलाई 1914 को सरबिया के असंतोष जनक उत्तर पाकर आस्ट्रिया ने उस पर आक्रमण कर दिया। यह प्रथम विश्व युद्ध का तत्कालीन कारण बना। सरबिया ने ब्रिटेन, फ्रांस, रशिया की सहायता से युद्ध किया। जर्मनी और उसके समूह के देश भी आस्ट्रिया की सहायता के लिए युद्ध में कूदना चाहते थे। यह प्रथम विश्व युद्ध कहलाया।

आस्ट्रिया की ओर से लड़ने वाले देश केंद्रीय शक्तियाँ कहलाए तथा दूसरे मित्र देश कहलाए। युद्ध के आरंभ में केंद्रीय शक्तियाँ मित्र शक्तियों पर शक्तिशाली बनी। 1917 में रशिया में आंतरिक विद्रोह के कारण जर्मनी के साथ संधि कर युद्ध को छोड़ना दूसरी ओर 1917 में जब जर्मनी सेना ने लुथुनिया की व्यावसायिक जहाज को डुबा दिया तो U.S. युद्ध में कूद पड़ा। इस प्रकार मित्र देश युद्ध में विजयी घोषित हुए।

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व

वार्सा की संधि, 1919

ब्रिटेन और इसके तीन समर्थकों ने संधि की शर्तों और नियमों को पराजित शक्तियों और अन्य छोटे देशों पर सौंपे। आस्ट्रो-हंगरी और ओटोमैन साम्राज्य समाप्त हो गया और छोटे राष्ट्र राज्यों में बँट गया। पहले ही क्रांतिकारियों ने रुसी सम्राज्य को समाप्त कर दिया था। जर्मन साम्राज्य भी बिखर गया था और इसका स्थान प्रजातांत्रिक गणराज्य ने ले लिया था। ओट्टोमैन साम्राज्य पर तुर्की के गणराज्य का अधिकार हो गया तथा आफ्रिका में इसके जो उपनिवेश थे

SCERT TELANGANA

वे विजित शक्तियों में बँट गये। अधिकांश संख्या में आस्ट्रिया, हंगरी, युगोस्लाविया, चेकोस्लावाकिया, इस्टोनिया, लाटविया, फिनलैण्ड जैसे नये देशों का गठन हुआ।

वार्सा की संधि ने जर्मनी पर दो तरह से भारी हर्ज़ाना थोपा। आर्थिक रूप में जर्मनी को विजयी मित्र राष्ट्रों को युद्ध की क्षतिपूर्ति करनी पड़ी और क्षेत्रीय रूप में जर्मनी को अपना बहुत बड़ा क्षेत्र फ्रांस और अन्य देशों को सौंपना पड़ा।

- आपके विचार से बताइए कि राष्ट्र संघ जैसे संगठन दो देशों के बीच संघर्षों को किस प्रकार सुलझा सकते हैं? संघर्षों को सुलझाने के लिए वे क्या कर सकते हैं?

रूस क्रांती का दिनांक

रूस ने 1 फरवरी 1918 तक जूलियन केलेण्डर को अपनाया। उसके पश्चात देश ने ग्रेगोरियन केलेण्डर को अपनाया जिसका आज हर कोई अनुसरण कर रहा है। ग्रेगोरियन तारीखें,जुलियन कैलेण्डर से 13 दिन आगे है। अपने केलेण्डर के अनुसार फरवरी क्रांति के 12 मार्च को घटी और अक्टोबर क्राँति 7 नवम्बर को।

राष्ट्र संघ - 1920

राष्ट्र संघ सबसे पहली अंतर्राष्ट्रीय संगठन थी जो वार्सा संधि के पश्चात गठित की गई। इसकी स्थापना 11 जनवरी 1920 को की गई। इसकी स्थापना शांति समझौते, निरस्त्रीकरण एवं शस्त्र निर्माण में कमी कर विवादों एवं युद्धों को रोकने के लिए की गई। इसके अतिरिक्त विकास, श्रमिक कल्याण एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्य करने के लिए की गई। इसमें 58 सदस्य थे। इसे सीमित सफलताएँ मिली एवं द्वितीय विश्व युद्ध को रोकने में असफल रहा।

रूस में समाजवादी क्रांति - 1917-1922

20 वीं सदी के प्रारंभ में रूस पर जार निकोलस-II का शासन था। ज़ारिस्ट रूस एक विशाल भूमि का भाग था जो दो महाद्वीपों में फैला था और एक महान यूरो - एशियन शक्ति बनकर उभरा। चीन और भारत के बाद यह जनसंख्या की दृष्टि सो तीसरा बड़ा देश था। लगभग 156 मिलियन। इसमें रूस, यूक्रेन, उज़बोकिस्तान, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कोमानिया, आदि कई देश शामिल थे। अधिकतर रूसी लोगों की जीविका का साधन कृषि था और भूमि पर अधिकार पाना ही किसानों एवं सामंतों के मध्य के संघर्ष का कारण था। सीमांत वर्ग के अधिकार में अधिकतर भूमि थी तथा किसान उस पर किराया देकर कृषि किया करते थे।

ज़ार निकोलस-2 इस विशाल रूसी राज्य के एक निरंकुश शासक थे जो सेना तथा नौकर शाही अधिकारियों की सहायता से राज्य करते थे। किन्तु विश्व युद्ध द्वारा रूस की आर्थिक स्थिति चरम सीमा तक लहूलुहान सी हो गई। रूस की सेना प्रथम विश्व युद्ध से पहले विश्व की सबसे बड़ी सेना थी। किन्तु 1917 तक रूस ने इस युद्ध में अपने दो मिलियन सैनिक एवं नागरिक खो दिए और प्रथम युद्ध में अधिक मानव जीवन गँवाने वाला देश बन गया। युद्ध

SCERT TELANGANA

फरवरी क्रांति में महिलाएँ

मरफा वसिलेवा (Maefa Vasileva) की लोरेन्ज़ टेलिफोन फेक्टरी (Loresy Telephone factory) की महिला कर्मचारी थी जो अधिकतर अपने साथी पुरूष कर्मचारियों से प्रभावित हो कर अकेली हडतालें करती थी। जो सफल भी हुई। उस दिन महिला दिवस के अवसर पर सभी महिला कर्मचारियों ने अपने पुरूष सहयोगियों को लाल फूल भेंट किए। एक महिला मरफा वसिलेवा ने जो एक मशीन आपरेटर थी, काम रोक दिया तथा अचानक हडताल की घोषणा कर दी। उस माले (floor) के कर्मचारी उसका समर्थन करने के लिए तैयार थे। फोरमैन ने प्रबन्धक को सूचना दे दी। जिसने मरफा को एक डबलरोटी भेजी। उसने ब्रेड़ ले ली किन्तु काम पर जाने से मना कर दिया। संचालक (Administrator) ने उससे दुबारा पूछा कि वह काम पर क्यों नहीं जा रही है, तब उसने कहा कि ''मैं अकेली ही अपनी भूख नहीं मिटा सकती जब दूसरे भूखे हो।'' कारखाने के दूसरे विभाग की महिला कर्मचारी भी मरफा के पास आ गए और उसके साथ हडताल में शामिल हो गए। तथा अपना काम बंद कर दिया। पुरूष कर्मचारियों ने भी कुछ ही पल में अपने औज़ार रख दिए और कुछ ही समय में पूरी भीड़, सड़क पर जमा हो गई।

From: Choi Chatterji, Celebrating Women (2002)

चित्र 12.3 :1917 में लेनिन श्रमिको को सम्बोधित करते हुए

भूमि में साधन सामग्री पहुँचाने के कारण शहरों में अनाज की कमी हो गई। 8 मार्च 1917 के दिन लगभग 10,000 महिलाओं ने रूस की राजधानी यस.टी.पीटर्सबर्ग से एक जुलूस निकाला और ''शान्ति एवं रोटी'' (Peace and bread) की माँग की। श्रमिक भी उनके साथ शामिल हो गए। जार निकोलस-2 ने अपनी सेना को इसे कुचलने तथा इन पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। उनपर गोलियाँ चलाने के बदले, सैनिक भी इन प्रदर्शन कारियों के साथ मिल गए। दो दिन में ही स्थिति इतनी बिगड़ गई कि जार अपना सिंहासन छोड़ कर भाग गए और अकुलीनतंत्रीय रूसी लोगों ने एक अल्पकालीन सरकार बना डाली। यह रूस की 1917 की पहली क्राँति थी और इसे मार्च क्राँति कहा जाता है।

अगली इससे बड़ी क्रांति अक्तूबर 1917 में हुई जो बिल्कुल भी अनायास न थी। जार के सिंहासन छोड़कर भाग जाने के उपरान्त जिन उदारवादी एवं कुलीनतंत्रीय लोगों ने रूस पर शासन किया, उन्होंने यह निर्णय किया कि वे युद्ध में भाग लेगें ताकि वे अपने पितृभूमि का मान बनाए रखें। पराजयों एवं आर्थिक कमियों से थके हुए आम आदमी युद्ध नहीं चाहते थे। उन्होंने अपने आप को परिषदों में आयोजित करना प्रारम्भ कर दिया जो सोवियत संघ कहलाने लगे। सैनिकों, औद्योगिक श्रमिकों एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के ये सोवियत संघ, साधारण लोगों की शक्ति की अभिव्यक्ति के साधन बन गए जिसका एक रूसी साम्यवादी पार्टी ने नेतृत्व दिया, जिन्हें बोलश्विक कहा जाता था।

बोलश्विक पार्टी के नेता थे वल्डिमर लेनिन (1870-1924)। बोलस्विक, सोवियतों का (किसानों के परिषद, श्रमिक तथा सैनिकों) विश्वास जीतने में सफल हो गए। क्योंकि इन्होंने बिना किसी शर्त के शांति, संपूर्ण भूमि का राष्ट्रीकरण एवं उसका सभी किसानों में समान बँटवारा तथा दामों पर एवं सभी उद्योग एवं बैंकों को वश रखने की मांग को तुरंत ही स्वीकार कर लिया। बोलश्विक के नेतृत्त्व में इन सोवियतों ने अक्तूबर-नवम्बर 1917 में अल्पकालीन सरकार से सत्ता छीन ली। तथा युद्ध का अंत करके भूमि का दुबारा विभाजन किया। रूस में पूरी तरह से शांति की स्थापना नहीं हुई क्योंकि वहाँ पर गृह-युद्ध प्रारम्भ हो गया जिसका नेतृत्व रूस की सफेद सेना (White Armies) राज भक्त, एवं साम्यवादी विरोधी सैनिक रहे थे जिनकी सहायता ब्रिटेन, फ्राँस, यू.एस.ए. एवं जापान कर रहे थे। इन सब को 1920 तक असफल कर दिया गया। बोलशिवको ने रूसी साम्राज्य के अंत की भी घोषणा कर डाली तथा उसके अंतर्गत विभिन्न राष्ट्रो को स्वतंत्र भी कर दिया। धीरे-धीरे सभी जारिस्ट साम्राज्य के राज्य रूसी समाजवादी गणतंत्र संघ में (यू.यस.यस.आर) शामिल हो गए। जिसका निर्माण 1922 में रूसी सोवियत सरकार ने किया।

अक्तूबर क्रांति और ग्रामीण रूसः दो दृष्टिकोण

1) अक्टोबर 25, 1917 की क्रांतिकारी जाँच अथवा समीक्षा के समाचार गाँव पहुँच गए। जिसका बहुत ही उत्सुकता से स्वागत किया गया। किसानों के लिए उसका अर्थ था; निशुल्क भूमि तथा युद्ध का अंत ...... जिस दिन यह समाचार पहुँचे, जमींदार का विशाल घर लूट लिया गया, उनके भरे हुए गोदाम अधिग्रहित (Requisitioned) कर लिये गए और उनके फलों के बगीचों को काट कर उनकी लकडी किसानों में बेच दी गई। उनके मकान तोड दिए गए और भूमि को किसानों में बाँट दिया गया जो एक नवीन सोवियत जिन्दगी जीना चाहते थे।

फेडोर बिलव, 'सोवियत सामूहिक कृषि का इतिहास'

2) एक जमींदार परिवार के सदस्य का पत्र जो उसने अपने संबंधी को लिखा। यह बताने कि उनकी विशाल भूमि पर क्या हुआ।

"अकस्मात कूप" (तखता पलटना या गद्दी से उतारना) बिना किसी दर्द के, शांति से और खामोशी से हुआ। पहले कुछ दिन असहनीय थे। मिखेल मिखलोविच (Mikhail Mikhailovich) (जमींदार) एकदम शांत थे - उनकी लड़कियाँ भी ...... मैं यह कहना चाहूँगा कि चेयर मैन बहुत ही सही बर्ताव करते हैं और बहुत ही शिष्ट भी है। हमारे पास केवल दो गाय और दो घोड़े रह गए। हमारे नौकर उनसे कहते हैं कि वे हमें तंग न करे। उन्हें जिन्दा रहने दो। हम उनकी सुरक्षा की देखभाल करते हैं और जायदाद की भी। हम चाहते हैं कि उनके साथ जहाँ तक संभव हो मानवतापूर्ण व्यवहार करें..."

ऐसी अफवाह है कि कुछ गाँव इन कमीटियों को बेदखल करने का प्रयास कर रहे हैं और जागीर (Estate) भूसंपत्ति को वापस मिखेल मिखेलोविच को देना चाह रहे हैं। मुझे नहीं पता कि ये होगा भी या नहीं, या फिर ये हमारे लिए ठीक है-लेकिन हम खुश है कि हमारे लोगों में भी अंतरात्मा या विवेक है।

- ऊपर दिए गए दोनों दृष्टिकोण जो देश में क्रांति पर है । सोचिए कि आप इस घटना के गवाह है। इस पर अपने विचार लिखिए : 1) एक जागीर के मालिक 2) एक निर्धन किसान 3) एक पत्रकार की दृष्टि से।

अक्तूबर क्रांति का मध्य एशिया दृष्टिकोण

एम.एन. राय (M.N.Roy) ने कोमिनटर्न (comintern) नामक एक अतंर्राष्ट्रीय संगठन में जो संसार में साम्यवादी क्रांति का बढ़ावा दे रहा थे, एक महत्वपूर्ण पात्र निभाया। वे 1920 के गृह युद्ध के समय मध्य एशिया में थे। उन्होंने लिखा है कि "मुखिया एक उदार वृद्ध व्यक्ति था। उनका सेवक ..... जो एक युवा ..... लडका था और जो रूसी भाषा बोलता था, उसने इस क्रांति के विषय में सुना था। जिसमें ज़ार को सिंहासन से हराकर तथा उन सैनिक अफसरों को भगा दिया गया। जिन्होंने किरगिजो की मातृभूमि को हथिया लिया था। क्रांति का अर्थ था किरागिज दोबारा अपनी मातृभूमि के मालिक बन गए। उस युवक ने नारा लगाया। "क्राँति अमर रहे" जो लगता था कि एक बोलश्विक है। पूरा कबीला उसकी आवाज़ में आवाज़ मिलाने लगा।

एम.एन राय - मेमाइर्स (1964)

रविन्द्रनाथ टैगोर ने 1930 में रूस से लिखा:

मास्को अन्य यूरोपीय देशों से धुँधला दिखाई देता है। सड़क पर चलने वाले लोगों में कोई भी चुस्त या फुर्तीला दिखाई नहीं देता था। पूरा क्षेत्र श्रमिकों का दिखाई देता था। यहाँ पर वे जो सदियों से पीछे छुपे थे आज खुल कर सामने आए हैं। मैं अपने देश के किसान और श्रमिकों के विषय में सोच रहा हूँ। यहाँ पर ऐसे लगता है जैसे यह सब अरेबियन नैट्स (Arabian Nights) की कथाओं के जिनी जैसा है। कुछ दशकों पूर्व ये सब निरक्षर, भूखे और लाचार थे बिलकुल हमारे देश के लोगों की तरह। मुझसे अधिक अभागा भारतीय और कौन चकित होगा जो यह देख रहा है कि किस प्रकार उन्होंने अज्ञान तथा लाचारी की पर्वत जैसी रुकावटों को कुछ ही वर्षों में निकाल फेंका है।

इसी के साथ एक विशाल प्रयोग प्रारम्भ हुआ। एक ऐसे देश के निर्माण का जहाँ कोई सामंत वर्ग, राजा या पूँजीवादी उनका शोषण न करे। सोवियत सरकार (यू.यस.यस.आर) ने एक ऐसे समाज का निर्माण करने का प्रयत्न किया जो औद्योगिक हो, आधुनिक हो और जहाँ पर लोगों में जन्म के आधार पर लिंग एवं भाषा के आधार पर कोई असमानता या बहिष्कार न हो।

स्टालिन का उद्भव (Rise of Stalin)

सन् 1924 में लेनिन की मृत्यु के बाद स्टालिन साम्यवादी पार्टी के नेता बनकर उभरे। अगले दशकों में उन्होंने पूर्ण नियंत्रण की स्थापना की तथा सभी विपक्ष का अंत कर दिया। उन्होंने अपनी पूरी शक्ति USSR की आर्थिक स्थिति सुधारने में लगा दी। यू.यस.यस.आर ने सन् 1928 से अपने पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा आर्थिक प्रगति का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने औद्योगिक प्रगति एवं कृषि के सामूहकीकरण की दोहरी योजना अपनाई।

विश्व पर रूसी क्रांति का प्रभाव

U.S.S.R के अनुभव से विश्व के कई व्यक्ति प्रभावित हुए जो समानता एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता जैसे आदर्शों के लिए समर्पित थे। उनमें से कई लोग साम्यवादी बन गए और अपने

देश में एक साम्यवादी क्रांति करने के प्रयत्न करने लगे। कई लोग जैसे M.N.Roy, रविन्द्रनाथ टैगोर और जवहरलाल नेहरू भी इन से प्रभावित हुए। जबकी वे इनमें से कुछ साम्यवादी विषयों पर जैसे विरोधी दल को पूरी तरह से कुचलने के विचार से सहमत नहीं थे।

- संक्षिप्त में आंकलन कीजिए कि सोवियत संघ विश्व को समानता, स्वतंत्रता और समृद्धि पर आधारित विश्व बनाने के प्रयोग में कितना सफल रहा?
- क्या आप इसे न्यायपूर्ण समझते हैं कि ऐसे प्रयोगों के लिए हजारों लोगों की बली चढाई जाए?
- साम्यवाद के विरोध में कौनसी आलोचनाएँ उठाई गई?

U.S.S.R में बहुदलीय प्रजातंत्र और स्वतंत्रता की अस्वीकृति तथा विपक्षी दलों के दमन के लिए जो हिंसा हुई थी उनसे कई लोग भयभीत थे।

जार्ज ओरवेल ने अपने प्रसिद्ध व्यंग्य उपन्यास 'एनिमल फार्म' (Animal Farm) में लिखा है कि किस तरह रूसी क्रांति के आदर्शों का U.S.S.R में समझौता कर लिया गया।

आर्थिक मंदी 1929-1939

महान विश्व व्यापक दबाव का दौर 1929 के अंत से प्रारम्भ होकर 1939 तक चला जब द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ। इस दशक में संपूर्ण विश्व में आर्थिक गिरावट का दौर चला जिसका कारण था मूल्यों की गिरावट और माँग में कमी। माँग में कमी के कारण कारखाने के उत्पादन में कमी आ गई जिसका अर्थ था लोगों के खरीदने की क्षमता में और कमी जिससे मांग में और गिरावट आ गई। इस चक्रीय प्रभाव के कारण विश्व व्यापक बेरोजगारी तथा साधारण आदमी और सरकार की आय में गिरावट आ गई। इसका आरम्भ अमेरिका के एक स्टाक (Stock Market) मार्केट में गिरावट से हुआ, इसके उपरांत इसका असर विश्व के लगभग सभी देशों पर पड़ा।

लगभग 25% अमेरिकी निरूद्योग थे और बाकी 33% दूसरे देशों बेरोज़गार थे। उद्योग बंद होने के कारण और व्यापार में गिरावट के कारण शहरों में भी गिरावट आ गई। इससे कृषि उत्पादन के मूल्य में भी (60%) गिरावट आ गयी। जिससे किसान निर्धन हो गए और कृषि का कार्य थम गया।

चित्र 12.4 : शेयर बाज़ार में गिरावट के कारण धन की हानि होने के बाद अपनी रोडस्टर को बेचता हुआ न्यूयार्क का व्यक्ति।

यह अब तक का सबसे लंबा और कठिन आर्थिक मंदी का दौर था जिसे आधुनिक अर्थ-व्यवस्था ने देखा। इसके सामाजिक परिणाम बहुत भयंकर थे जैसे निर्धनता में बढ़ौतरी, वीरानी या अकेलापन, बेघर होना आदि।

अर्थशास्त्री एवं राजनैतिज्ञों ने इस आर्थिक मंदी पर लंबे समय से चर्चाएँ है। इनको कैसे रोका जाए तथा भविष्य में दोबारा ऐसा न हो इसके उपाय ढूँढ़े। मार्क्सवादी अर्थशास्त्रियों का यह विचार है कि ऐसी विपत्तियाँ पूँजीवाद के कारण उत्पन्न होती है। इससे केवल समाजवाद की स्थापना से ही मुक्ति मिल सकती है। दूसरी ओर जे.एम. केंस (J.M. Keynes) जैसे अर्थशास्त्री कहते हैं कि एक राज्य का अपनी आर्थिक स्थिति को चलाने में महत्वपूर्ण पात्र है। और अगर वो इसमें असफल हो जाता है तो मंदी की स्थिति का सामना करना पडता है। केन्स के अनुसार आर्थिक मंदी के समय में जब मांग में गिरावट आती है, उस समय राज्य को चाहिए कि वह धन का निवेश करे और रोजगार उत्पन्न करें जिससे जनता को धन कमाने में सहायता मिलेगी और बाजार में उत्पादन की माँग भी बढेगी। इस प्रकार राज्य द्वारा उत्पन्न माँग से आर्थिक स्थिति को सुधारने के अवसर प्राप्त होंगें। लेकिन 1920 और 1930 की पूँजीवादी सरकारें इस प्रकार देश की आर्थिक नीति में दखल नहीं देना चाहती थी जिसके कारण विपत्तियाँ और बढ़ गई।

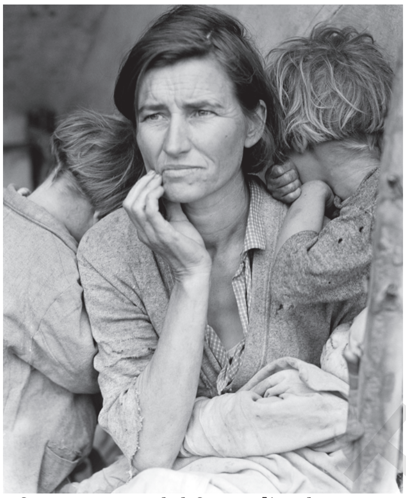

चित्र 12.5 : डोरोथिया लैंज के द्वारा मंदी के समय पोलिश अप्रवासी फ्लौरैंस ओवेंस का प्रसिद्ध चित्र। यह मार्च 1936 में कैलिफोर्निया के अभावग्रस्त पी-पिक्कर्स (pea pickers) का वर्णन करता है। यह क्या सोच रही होगी?

फ्रैंकलिन रूजवेल्ट जो अमेरिका के नए राष्ट्रपति बने उन्होंने नये समझौते ''न्यू डील'' की घोषणा की जिससे आर्थिक मंदी से ग्रसित लोगों को राहत (Relief) वित्तिय संस्थाओं में सुधार (Reform) और सार्वजनिक कार्योद्वारा आर्थिक पुनः प्राप्ति (Recovery) (Three R's) सुनिश्चत करने का वचन दिया। लेकिन वास्तविक आसर युद्ध प्रारंभ के साथ आया और राज्यों में युद्ध के हथियार बनाने और सेना को संभालने का भार बढ़ गया जिससे कारखानों में उत्पादन बढ गया और कृषि की सामग्री की माँग भी बढ गई। उन्होंने अमेरिका को सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान की जिसकी उसे अत्यधिक आवश्यकता थी। उसने एक स्थाई सार्वभौमिक सेवानिवृत पेन्शन बनाई। बेरोजगारी बीमा, तथा विकलांग और जरूरतमंद बच्चों के लिए जिनके पिता न हो उनके लिए कल्याणकारी योजनाएँ बनाई। इससे अमेरिका की कल्याणकारी व्यवसायक के लिए एक ढाँचे का निर्माण हुआ। वास्तविकता में मंदी के दौर से भी पहले जब युद्ध चल रहा था। तब ब्रिटेन ने इस दिशा में पहला कदम उठाया, उसने निरूद्योगों के लिए बीमाकरण तथा वृद्धों के लिए पेन्शन योजनाएँ बनाई। द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने के बाद ब्रिटेन ने भी कुछ सामाजिक सुरक्षा के कदम उठाए जैसे निरुद्योग के लिए, बीमार लोगों के लिए, स्वास्थ सम्बन्धी योजनाएँ, शिशु सुरक्षा के लिए आदि। इन सबके बनाने का यह उपाय था कि एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना हो जहाँ राज्य सभी को एक अच्छे जीवन का आश्वासन दे और उनकी सभी मौलिक आवश्यकताओं का जैसे अन्न, आवास, स्वास्थ, बच्चों और वृद्ध लोगों की देख भाल तथा शिक्षा का खयाल रखें। राज्य ने योग्य नागरिकों को रोजगार दिलाने का भी बड़ी मात्रा में अपने ऊपर भार लिया। इस प्रकार राज्य ने यह प्रयत्न किया कि यह पूँजीवादी बाज़ार में हो रहे उतार चढ़ाव को भी कम करे।

जर्मनी में आर्थिक मंदी

जर्मनी की आर्थिकता को युद्ध के बाद बड़ा धक्का लगा क्योंकि उसे युद्ध का कारक बताया गया और उसे युद्ध की हानियों की भी भरपाई करनी पड़ी। जर्मन सरकार ने तेज़ी से नोट छापने शुरू कर दिए जिससे कभी न सुनी हुई महँगाई बढ़ गई। ऐसा कहा जाता है कि लोग एक डबलरोटी खरीदने के लिए गाड़ी भर कर नोट ले जाते थे।

ऐसे समय में उन्हें ऋण देकर तथा युद्ध की हानियों की जो भरपाई थी उसमें कुछ समय देकर अमेरिका (U.S.A) ने जर्मनी की ओर सहायता का हाथ बढ़ाया। इससे 1928 तक जर्मनी की आर्थिक स्थिति सुधरने में सहायता मिली। किन्तु यह कुछ समय के लिए ही था, क्योंकि अमेरिका खुद 1929 की विश्व व्यापक मंदी से ग्रस्त था और अधिक समय तक जर्मनी की सहायता नहीं कर पाया।

जर्मनी की आर्थिकता को विश्व व्यापक मंदी से गहरा धक्का लगा। 1929 से 1932 तक जर्मनी का औद्योगिक उत्पादन गिरकर 40% कम हो गया। श्रमिक अपनी नौकरी खो बैठे और उनका वेतन भी कम कर दिया गया। निरुद्योगों की संख्या 6 मिलियन हो गई। जर्मनी की गलियों, और सड़कों पर लोग अपने गले में तख्ती लगा कर घूम रहे थे कि ''किसी भी कार्य के लिए तैयार है'' निरुद्योग युवक या तो पत्ते खेलते रहते, सड़कों के किनारों पर बैठे रहते, या रोजगार कार्यालय के आगे लाईन में खड़े रहते। नौकरियाँ नहीं थी, इससे युवा लोग गलत काम करने लगे और हर और निराशा का माहौल छा गया।

आर्थिक संकट के कारण लोगों में गहरी चिंता और डर छा गया। मध्यवर्ग के लोगों में विशेषकर वेतन पाने वाले और पेंशन पाने वाले लोगों ने देखा कि उनकी बचत राशि धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। मुद्रा अपना मूल्य खो रही थी। छोटे व्यापारी, स्व रोजगार, और रिटेलर्स उनके व्यापार के नष्ट होने के कारण काफी पीड़ित थे।

समाज का यह वर्ग इस डर में जीने लगा कि कहीं वे निर्धन न हो जाए, और उनकी स्थिति श्रमिक वर्ग, या फिर उससे भी बुरी स्थिति जैसे निरूद्योग जैसी न हो जाए। केवल संगठित क्षेत्र के कर्मचारी अपना सिर पानी के ऊपर रख सके, लेकिन बेरोजगारी ने उनकी मोल-भाव करने की क्षमता कमजोर कर दी। बड़े व्यापार कठिनाइयों में थे। बड़ी मात्रा में किसानों पर कृषि के मूल्यों में गिरावट के कारण असर हुआ। महिलाएँ अपने बच्चों को पेट भर भोजन न दे सकने के कारण दुखी थी। इन सब का परिणाम यह निकला की जर्मनी में राजनैतिक स्थिरता न रही और एक के बाद एक सरकारें गिरती गई क्योंकि वे एक स्थिर शासन नहीं प्रदान कर पाए।

- अपने आप को श्रमिक सोचो जिसने अचानक ही अपना काम खो दिया हो और अगले कुछ वर्षों तक उसके पास कोई रोजगार भी न हो। अपनी जिन्दगी के एक दिन के विषय में लिखिए।
- अपने आप को एक किसान समझो जिसे यह मालूम पडा है कि उसके अनाज के दाम गिरकर आधे से कम हो गए है। अपनी प्रतिक्रिया 300 शब्दों में लिखिए।
- आपको भारत में आज कल्याणकारी राज्य के कौन से पहलू दिखाई देते हैं?

SCERT TELANGANA

फासीवाद एवं नाजीवाद का उदय

उदारवाद और समाजवाद जैसे राजनैतिक विचारधाराओं के बारे में आप पहले भी पढ़ चुके हैं। फासीवाद एक ऐसा विचारधारा थी जो पहले विश्वयुद्ध के बाद के युग में विशेषकर पराजित देशों में विकसित हुई। अन्य देशों के जीतने और विस्तार करने के लिए इसने राष्ट्रीय एकता के उपाय पर बल दिया। फाजीवादी किसी को संघर्ष करने की स्वीकृति नहीं देते थे। देश में उनके कोई भिन्न-भिन्न तित या रुचियाँ नहीं थी। केन्द्रीय शक्ति के प्रति ईमानदारी और आज्ञाकारिता की सुनिश्चितता के लिए व जनता पर बल प्रयोग करते थे। वे साम्यवाद और उदारवाद दोनों के विरुद्ध थे। निरंकुश राज्य के द्वारा फासीवादी अपने देश में एकता का निर्माण करना चाहते थे। जिससे देश के अधिकांश समुदायों में जन चेतना का विकास हुआ। फासीवाद आंदोलन की कुछ साधारण विशेषताएँ थीं - राष्ट्र की उपासना, हिटलर जैसे शक्तिशाली नेता के प्रति भक्ति, सैन्य विजयों और उग्र राष्ट्रवाद पर बल देना आदि। राष्ट्र को पुनर्जीवित करने के लिए फासीवाद ने राजनीतिक हिंसा, युद्ध और विजयों जैसे साधनों का उपयोग किया। इसने दृढ़तापूर्वक कहा कि शक्तिशाली देशों को यह अधिकार है या उनका कर्तव्य है कि वे पिछड़े या कमज़ोर देशों पर अधिकार कर अपनी सीमाओं का विस्तार करें। इसने राज्य नियंत्रित पूँजीवाद पर बल दिया तथा समाजवाद और साम्यवाद का विरोध किया। सभी निजी के उन्मूलन पर भी इसने बल दिया।

यह विचारधारा पराजित देशों में बहुत प्रसिद्ध हुई क्योंकि ये देश वार्सा की संधि द्वारा थोपी गयी शर्तों और विश्व-व्यापी मंदी के दबाव के कारण स्वयं को अपमानित अनुभव कर रहे थे। यह 1922ई. में सबसे पहले, इटली में बेनीटो मुसोलिनी की जीत से आरंभ हुआ। इसके बाद हिटलर और उसकी नाजी पार्टी 1933 में जर्मनी में सत्ता में आयी। 1939 में प्रजातांत्रिक राज्य के विरुद्ध दीर्घ सैन्य अभियान के बाद स्पेन में जनरल फ्रैंको सभा में आया। इसी समय जापान ने अपनी फासीवादी विचारधारा का विकास कर तथा चीन और कोरिया आदि देशों में सैन्य अभियान करना शुरु किया। ये सभी निरंकुश शासक, कुछ हद तक फासीवादी विचारधारा के अनुयायी थे।

हिटलर एक शक्तिशाली वक्ता था। उसके जुनून एवं शब्दों से लोग प्रभावित हो जाते थे। उसने वचन दिया कि वह एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना करेगा, वार्सेल्स की संधि के द्वारा हुए अन्याय को समाप्त करेगा और जर्मनी वासियों का आत्मसम्मान उन्हें वापस दिलाएगा। उसने लोगों को रोजगार दिलाने का वचन दिया और युवा पीढी को एक सुरक्षित भविष्य का उसने वचन दिया कि वह सभी विदेशी प्रभाव को बाहर निकाल फेंकेगा तथा जर्मनी के विरुद्ध हो रही सभी विदेशी साजिशों को रोक देगा।

उसने एक नई प्रकार की राजनीति को आकार दिया। वह जनचेतना के तरीकों और पहलूओं के महत्व को समझ गया था। लोगों में एकता की भावना लाने तथा हिटलर को ये विश्वास दिलाने की उन्हें जन समूह का पूरा साथ है नाजियों ने विशाल रैलियाँ एवं सार्वजनिक बैठकों को आयोजित किया। स्वास्तिक के चिन्ह वाले लाल झंडे, नाजी सल्यूट और भाषण के बाद तालियों की गड़गड़ाहट ये सब उनके शक्ति के प्रतीक थे।

हिटलर अपने कार्य कर्ताओं को यह विश्वास दिलाकर जागृत करता (Mobilize) कि वह आर्यन जर्मन के जाति समूह को विश्व में सबसे ऊँचा स्थान दिलाएगा। और यहूदियों को जो कि अल्पसंख्यक समूह थे, उन्हें अपना निशाना बनाता और कहता कि सभी समस्याओं की जड़ वही है। वह साम्यवाद और पूँजीवाद का भी विरोधी था और यह कहता था कि ये दोनों भी यहूदी लोगों की साजिशें हैं। उसने वचन दिया कि वह एक ऐसा शक्तिशाली राज्य बनाएगा, जो इन दोनों विचारों का सामना करेगा। उसने मध्य वर्ग से निवेदन किया जो पूँजीवाद एवं विश्व व्यापक मंदी से डरे हुए थे और कार्यकारी समूह के आन्दोलन का विरोध कर रहे थे जिसका नेतृत्व साम्यवादी और समाजवादी कर रहे थे।

हिटलर के भाषण से

हिटलर ने कहा कि विश्व के सबसे शक्तिशाली जाति का यह अधिकार है कि वे विश्व पर राज्य करें। उसे जीत ले। भूमि किसी को भी उपहार में नहीं मिली है। इसे उन्हीं लोगों को इनाम में दिया गया है। जिनके दिलों में इसे हासिल करने की हिम्मत हो, इसकी सुरक्षा करने की शक्ति हो, और इसपर हल चलाने की क्षमता हो। विश्व का प्राथमिक अधिकार है, जीने का अधिकार जब तक कि इसे रखने की क्षमता हो। इस अधिकार के आधार पर एक बलवान राष्ट्र अपनी जनसंख्या के आकार के अनुसार हमेशा अपनी सीमाएं निर्धारित करने का प्रयत्न करते रहेगा।

हिटलर, सीक्रेट, बुक, टेलफोर्ड टेलर -

- क्या हिटलर यहाँ पर विश्व को जीतने के उपाय को प्रोत्साहित कर रहे हैं? आपके अनुसार क्या विश्व उन्हीं का होना चाहिए जिनके पास शक्ति और अधिकार हैं?

ऐसी परिस्थिति में नाजी पार्टी के प्रचार ने लोगों में एक अच्छे भविष्य की आशा की किरण जगाई। हिटलर इसके ऐसे नेता थे जिससे कोई प्रश्न नहीं कर सकता था। सन् 1928 में नाजी पार्टी को जर्मनी संसद रीजस्टेग में केवल 2.6 प्रतिशत से अधिक वोट नहीं मिले। किन्तु 1932, तक 37% वोट के साथ सबसे बड़ा राजनैतिक दल बन गया।

हिटलर जैसे ही सत्ता में आए, उन्होंने तुरन्त ही एक अप्रजातांत्रिक एवं निरंकुश शासन की स्थापना कर डाली और संसद जैसी प्रजातांत्रिक संस्थाओं पर रोक लगा दी। विरोधी दल के नेताओं विशेषकर साम्यवादियों को बंदी बनाना शुरू किया। उन्हें बंदी शिविरों में रखा गया।

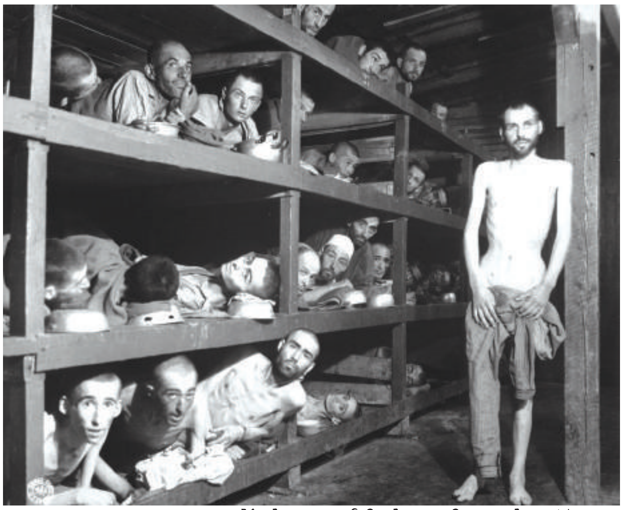

Fig 12.6 : 1945 में जेना जर्मनी के समीप बुचेनवॉल्ड कॉनसेंट्रेशन कैंप में यहुदी गुलाम श्रमिक

प्राक्कथन (भूमिका)

नाजियों ने अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही एक ही दिशा में सोचने के लिए सिखाया कि वे केवल नाजि जाति विचार धारा की महानता, जर्मनी की महानता, हिटलर की महानता एवं यहूदियों से नफरत के विषय में ही सोंचे। यह किस प्रकार किया गया?

छः से दस वर्ष के सभी बालकों को नाजि विचारधारा की ट्रैनिंग दी जाती थी। ट्रैनिंग के अंत में उन्हें हिटलर के प्रति वफादारी की यह शपथ लेनी पडती थी:

इस खूनी ध्वज के समक्ष जो हमारे नेता का या शासक का है मैं प्रण लेता हूँ कि मैं अपनी सारी ऊर्जा और शक्ति अपने देश के रक्षक अडाल्फ हिटलर (Adoll Hitter) को समर्पित करता हूँ। मैं उनके लिए अपने प्राण देने के लिए तैयार हूँ। ईश्वर मेरी सहायता करें।

From W. Shirer, The Rise and Fall of the Third Reich

राबर्ट ले, जर्मन श्रमिक फ्रंट के नेता कहते हैं :

''जब बालक तीन वर्ष का होता है हम तभी प्रारम्भ कर देते हैं। जैसे ही वो सोचना भी शुरू नहीं करता उसे एक छोटा सा ध्वज दे दिया जाता है, हिलाने के लिए। इसके पश्चात पाठशाला आती है, हिटलर युवा सैनिक प्रशिक्षण, लेकिन जब ये सब समाप्त हो जाता है, तब तक हम किसी को भी जाने नहीं देते हैं। तब तक वह इसे थामे रखता है, जब तक कि वे अपनी कब्र में न पहुँच जाए, चाहे उन्हें पसन्द हो या न हो।''

नाजियों के शासन में महिलाएँ

हिटलर ने 8 सितम्बर, 1934 को, न्यूरेम्बर्ग पार्टी की रैली में महिलाओं को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार से कहा :-

हम ये सोंचते हैं कि महिलाओं को पुरूष के संसार में दखल नहीं देना चाहिए। हम इसे प्राकृतिक समझते हैं कि ये दोनों संसार एक दूसरे से अलग रहें। पुरूष जो बहादुरी युद्ध के मैदान में दिखलाता है, स्त्री उसे अपने अमर बलिदान में, दर्द में और अपनी तकलीफ में दिखलाती है। हर शिशु जिसे स्त्री इस संसार में लाती है, उसके लिए एक युद्ध है जो वह अपने लोगों के अस्तित्व के लिए लड़ती है। 8 सितंबर, 1934 को हिटलर ने न्यूरेम्बर्ग पार्टी की रैली में ये भी कहा :

स्त्री अपनी जाति को सुरक्षित रखने का एक दृढ़ तत्व है। उसमें एक विशेष अचूक समझ होती है। सभी महत्वपूर्ण बातों को परखने की यह देखने की कि एक जाति कहीं अदृश्य न हो जाए। क्योंकि इससे उसी की संतान पर असर हो सकता है। इसीलिए हमने स्त्रियों को जातीय समुदायों के संघर्ष में एकीकृत किया। क्योंकि यह प्रकृति और परमात्मा के द्वारा निर्धारित था।

चित्र 12.7 : सार्वजनिक रूप से दण्डित महिलाएँ जिन्हें यहूदियों को बचाने के लिए दोषी ठहराया गया।

- क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि महिलाओं को दर्द सहन करने बच्चों के पालन-पोषण तक स्वयं को सीमित करना चाहिए?
- बच्चों के पालन-पोषण में, कारखानों, कार्यालयों और खेतों में जैसे सभी क्षेत्रों में क्या महिलाओं और पुरूषों को समान रूप से भाग लेना चाहिए? अपने विचार बताइए।

3 मार्च, 1933 के दिन प्रसिद्ध अधिकृत अधिनिय (Enabling Act) लागू किया गया। इस अधिनियम द्वारा हिटलर का निरंकुश शासन स्थापित हो गया। इसके द्वारा हिटलर ने संसद को हरा कर सारे अधिकार अपने हाथ में ले लिए। जर्मनी में सभी विरोधी दलों को तथा व्यापारी संगठनों को बंद कर दिया गया। केवल नाजि पार्टी और उससे जुड़ी दूसरी पार्टियों को ही रखा गया। राज्य की अर्थव्यवस्था, मीडिया, सेना, तथा न्यायपालिका को पूरी तरह अपने आधीन कर लिया।

संघर्ष (Resistence)

पास्टर नई मोयलर (Pastol Niemoellar) जो एक संघर्षकर्ता थे, ने देखा कि जर्मनी के आम नागरिकों में विरोध का अभाव था, एक सहमी हुई खामोशी थी जबकि नाजि साम्राज्य में उनपर घोरअत्याचार हो रहे थे। उन्होंने इस खामोशी का बहुत ही मार्मिक वर्णन किया:

पहले वे साम्यवादियों के लिए आए
पर, मैं एक साम्यवादी न था
इसीलिए मैंने कुछ नहीं कहा।
फिर वे सामाजिक प्रजातांत्रिको के लिए आए
पर, मैं एक सामाजिक प्रजातांत्रिक भी नहीं था
इसीलिए मैंने कुछ नहीं किया
फिर वे व्यापारी संगठनों के लिए आए
किन्तु मैं एक व्यापारी संगठन का सदस्य नहीं था।
और फिर वे यहूदियों के लिए आए,
पर मैं यहूदी नहीं था-
इसीलिए मैंने कुछ न किया
और जब वे मेरे लिए आए
तब वहाँ मेरी सहायता के लिए कोई नहीं बचा था।

नाजि जिस प्रकार चाहते थे उस तरह से विशेष सुरक्षा बलों की नियुक्ति कर समाज में क़ानून बनाने हेतु संगठन बनाए गए। नियमित पोलीस जो हरे यूनिफार्म में होती थी, के साथ-साथ और यस.ए. या स्टार्म ट्रूपर्स के अलावा, अन्य सुरक्षा दल जैसे गास्टपो (Gastapo) (राज्य की गुप्त पोलीस), S.S. (सुरक्षा दल) आराधिक पोलीस और S.D. (सुरक्षा सेवा) भी बनाए गए। इन सभी संगठनों को आवश्यकता से अधिक संवैधानिक अधिकार मिल गए, इसके कारण नाजी राष्ट्र को सबसे भयंकर अपराधिक राज्य का सम्मान मिला। लोगों को अब गेसटापो के शोषण चेम्बरों में बंदी बनाकर रखा जाता था, उन्हें बंदी शिविरों में उनकी मर्जी से या बंदी बनाकर बिना किसी न्यायिक कारवाई के भेज दिया जाता था। पोलिस को पूरी स्वतंत्रता से अधिकार प्राप्त थे।

- नाज़ि विचार धारा बहुमत के सिद्धान्त पर टिकी हुई थी। यहूदी केवल 0.75% थे। यहूियों के अलावा दूसरे भी अगर नाज़ियों का विरोध करते तो उन्हें बन्दी बना लिया जाता था। पास्चर ने इसे कैसे कैद किया?

इन अधिकारों का उपयोग लाखों राजनैतिक कार्यकर्ताओं को, व्यापारी संगठनों के सदस्यों को और अल्पसंख्यक मुख्य रूप से यहूदियों को बंदी बनाकर उन पर अत्याचार करने के लिए किया जाता था। ताकि एक ऐसे राज्य का निर्माण हो जहाँ हमेशा डर और ख़ौफ का माहौल बना रहे।

हिटलर ने राज्य की आर्थिक वसूली का भार एक अर्थशास्त्रज्ञ जालमर चट्ट (Hijalmar Schact) के हाथों सौंपा जिसका ध्येय था राज्य द्वारा नियोजित कार्यक्रम द्वारा संपूर्ण

मान चित्र : 1 द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी

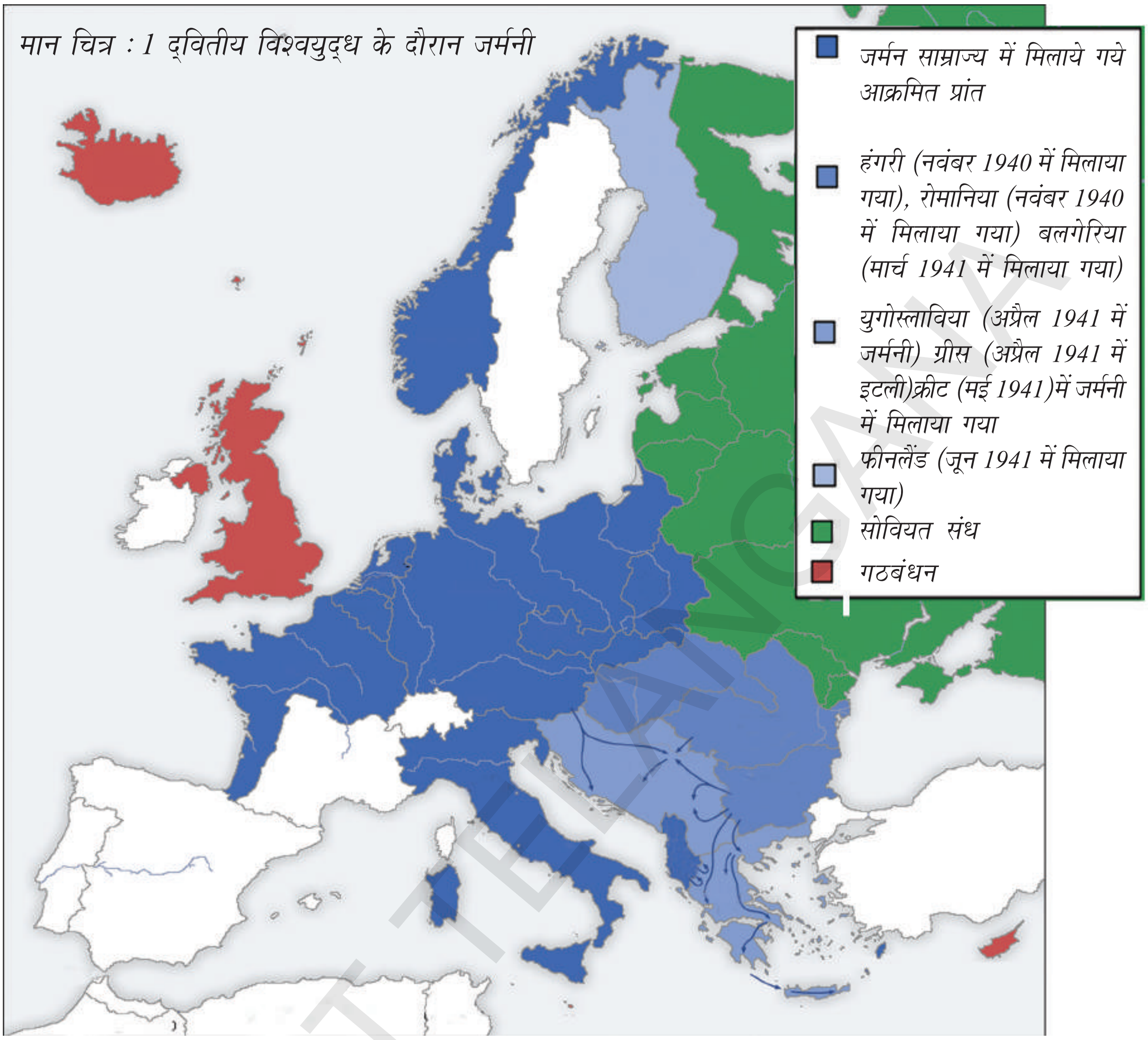

चित्र 12.8 : हिटलर को युद्ध और शांति, दोनों के वेश में दर्शाता कार्टून

उत्पादन एवं संपूर्ण रोजगार। आप ऊपर दिए गए केन्स (Kenes) के दृष्टिकोण को याद कीजिए। इस परियोजना द्वारा जर्मन सुपरहाईवे और लोगों की मोटर कार वोल्कसवागेन (Volks wagen) का उत्पादन हुआ।

इस दौर में जहाँ जर्मनी के एक वर्ग के लोगों के जीवन स्तर में सुधार आया वहीं समाज के और लोग मानवीय स्तर से कम की परिस्थिति में नस्लवादी शासन में जी रहे थे। इसके साथ-साथ युद्ध सामाग्री निर्माण के औद्योगिक क्षेत्रों में अधिक व्यय किया जाने लगा ताकि रोजगार के अवसर प्रदान हो। लेकिन यह तभी हो सकता था जब वे पडोसी राज्यों के साथ युद्ध करें। हिटलर ने प्रथम युद्ध के बाद अपने खोए हुए राज्यों को वापस हासिल करने

के लिए एक आक्रमक विदेश नीति अपनाई। सन् 1939 में उसने पालैण्ड पर आक्रमण कर दिया जिसके कारण द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया।

जैसे - जैसे युद्ध आगे बढ़ता गया नाजी शासन व्यवस्था ने अल्पसंख्यकों को मौत के घाट उतारते हुए जर्मनी जाति की श्रेष्ठता के निर्माण का भयंकर कार्यक्रम प्रारंभ कर दिया।

- द्वितीय विश्व युद्ध किस प्रकार हिटलर की विचार धारा एवं आर्थिक नीतियों का तार्किक परिणाम था?
- होलोकास्ट (Holocaust) शिविर एवं औशविट्टज (Auschwitz) शिविर के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करें और उस पर एक परियोजना रिपोर्ट बनाइए।

द्वितीय विश्व युद्ध की छाया के नीचे जर्मनी ने एक जाति संहार युद्ध किया। जिसका परिणाम था यूरोप के चुने हुए दलों के भोले-भाले नागरिक की भारी मात्रा में हत्याएँ। लगभग 60,000,000 यहूदी लोग मारे गए, 2,000,000 जिप्सी, 10,000,000 पोलैण्ड नागरिक, 70,000 जर्मन जिन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से अपंग घोषित किया गया 10,000 समलैंगिक और इनसे हटकर अनगिनत राजनैतिक विरोधी और दूसरे धर्मों के अनुयायी भी मारे गए। नाजियों ने लोगों को मारने के नए-और अनोखे उपाए खोज निकाले जैसे कि उन्हें गैस केन्द्रों में मारना। उदाहरण के लिए औष्ट्ज़ि (Auschwitz).

दूसरे विश्व युद्ध - 1939-1945

आक्रमक राष्ट्रवाद, सैन्यवाद, साम्राज्यवाद, गुप्त मैत्रित्राँ भी द्विती महा युद्ध के कुछ कारण थे। इनके साथ-साथ द्वितीय युद्ध के विशेष संदर्भ इस प्रकार हैं -

वार्सा की संधि : (The Treaty of Versailles)

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर 1919 में एक शांति सम्मेलन हुआ। यह उस समय का सबसे बड़ा सम्मेलन था क्योंकि इसमें 32 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था जो कि विश्व की जनसंख्या का तीन-चौथाई हिस्सा थे। USA, UK, फ्रांस, इटली और जापान जैसे पाँच शक्तिशाली विजेता देशों ने इसमें भाग लिया।

किंतु समाजवादी रूस और अन्य पराजित शक्तियाँ जैसे : जर्मनी, आस्ट्रिया और तुर्की को इस सम्मेलन में आमंत्रित नहीं किया गया। इसीलिए इन देशों ने सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों का साथ नहीं दिया। जर्मनी को कमज़ोर करने की लिए वार्सा की संधि ने इस पर क्षेत्रीय हर्जाने थोपे और उसके सैन्य खर्चों में कटौती की। सबसे पहले जर्मनी को 1880 उसके द्वारा कब्ज़ा किये गये आफ्रिकी उपनिवेशों तथा अलास्का और लाटेन जैसी यूरोपीय भूमि, जिसे उसने फ्रांस से हासिल किया था, को लौटाने के लिए कहा गया। दूसरा, जर्मनी को उसकी सैन्य क्षमता को 100,000 करने के लिए कहा गया जो प्रथम विश्व युद्ध-I के दौरान 900,000 थी। जर्मनी

SCERT TELANGANA

को पनडुब्बियाँ रखने के लिए मना कर दिया गया। इसकी नौसेना की शक्ति को घटाने के लिए इसमें 10,000 टन से कम के छह लड़ाकू जहाज, एक दर्जन तोरपेड़ो (torpedo) जहाज़ और विध्वंसक तक ही सीमित कर दिया गया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं था कि जर्मनी के लोगों ने समझा कि वार्सा की संधि उनपर बलपूर्वक थोपी जा रही है, इसीलिए उन्हें न तो इसके प्रति आदर था और न ही उन्होंने इसका उत्तरदायित्व लिया।

राष्ट्र संघ की विफलता (Failure of The League of Nations)

वार्सा की संधि ने भविष्य में युद्धों को रोकने के लिए राष्ट्र संघ की भी स्थापना की। जर्मनी और रूस को संघ की सदस्यता के लिए आमंत्रित नहीं किया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका भी इसका सदस्य नहीं बन सका। इसके राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन संघ के सक्रिय सदस्य थे किंतु फिर भी संयुक्त राज्य अमेरिका की कांग्रेस ने उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। इसी कारण जब यह बहुत ऊंचाई तक पहुँच चुका था तब तक भी इसके केवल 58 सदस्य थे । इन देशों को आशा था कि संघ 'सामूहिक सुरक्षा' द्वारा युद्धों को समाप्त करेगा और बातचीत या वार्ताओं द्वारा विवादों और समस्याओं को हल करेगा। कल्याणकारी कार्यों के लिए संघ ने स्वास्थ्य, श्रम कल्याण जैसी अनेक अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों और देशों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की स्थापना की।

इसने अनेक वादे किये थे और इससे बहुत आशाएँ थी फिर भी यह जर्मनी और इटली को अंतर्राष्ट्रीय समझौता को तोड़कर दूसरे देशों पर आक्रमण करने से रोकने में असफल रहा।

प्रतिशोधी आधिपत्य को जर्मनी की चुनौती (German challenge to vengeful domination)

1919 में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद जर्मनी की पराजय के बाद, विजयी गुट जर्मनी को दंड देना और निर्बल बनाना चाहते थे ताकि वह फिर न उठ सके। वार्सा की संधि द्वारा जर्मनी पर जो शर्तें थोपी गयी थी उससे वे अपने आपको गुलाम समझने लगे थे। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप जर्मनी में हिटलर और उसकी नाज़ी पार्टी का उदय हुआ। वार्सा की संधि द्वारा उन्होंने जो क्षेत्र खो दिया था, उसे वे वापस लेना चाहते थे। वे फिर से मध्य यूरोप पर अपना वर्चस्व स्थापित करना तथा जर्मन शस्त्रों पर लगे प्रतिबिंब को हटाना चाहते थे। नाज़ियों के नेतृत्व में जर्मनियों ने अपने उद्योगों का पुनर्निमाण किया। एक विशाल सेना तथा शस्त्र उद्योग का विकास किया जो केवल युद्ध में सेवा प्रदान कर सकता था।

समाजवाद का भय और USSR

प्रथम विश्व युद्ध के विध्वंसक परिणामों ने पूरे यूरोप में एक बड़ा सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न किया। सारे श्रमिक समाजवादी और साम्यवादी विचारधारा की ओर झुकने लगा। पूरे यूरोप में शांति आंदोलनों ने जोर पकड़ा। रूस में 1917 में एक क्रांति हुई जिसके कारण

साम्यवादी राज्य बन गया। नयी सरकार का सबसे पहला काम था। रूस को युद्ध में भाग लेने से रोकने और शांति वार्ताओं की शुरूआत करना। (1924 में रूस सोवियत समाजवादी राज्यों का संघ बना USSR।) पश्चिमी पूँजीवादी देशों को भय था कि ऐसी ही क्रांतियाँ यूरोप के अन्य देशों में भी हो सकती है। इसीलिए उन्होंने हिटलर और नाजीयों को मिलकर USSR का विरोध करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह हिटलर की अपीज़मेंट (Appeasement) की नीति कहलाई। USSR के विरुद्ध हिटलर का समर्थन प्राप्त करने के लिए वे उसे खुश करना चाहते थे।

1939 ई. में जर्मनी ने USSR के साथ एक अनाक्रमक (Non Aggression pact) समझौता किया और हिटलर ब्रिटेन तथा फ्रांस जैसे मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध हो गया। इस स्थिति ने विश्व युद्ध-II को जन्म दिया। अब अधिकांश पश्चिमी यूरोपीय महाद्वीप पर हिटलर का नियंत्रण स्थापित हो गया।

1942 ई. में इसने यू.एस.एस.आर पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। ठीक उसी वर्ष जर्मनी के मित्र राष्ट्र जापान ने USA पर आक्रमण किया। फलस्वरूप USA और USSR जर्मनी के विरूद्ध युद्ध में सम्मिलित हो गये।

तत्कालिक कारण

1 सितंबर 1939 को जर्मन टैंकों का पोलैण्ड में प्रवेश द्वितीय विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण था। पोलैण्ड ने डेजिंग का बंदरगाह जर्मनी को सौंपने से इंकार कर दिया। इसीलिए पोलैण्ड को दंड देने के लिए जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। पोलिश का क्षेत्र जर्मनी के दो भागों के बीच स्थित है। हिटलर ने सोचा था कि पोलैण्ड पर कब्जा एक छोटी सैन्य कार्यवाही होगी पर पोलैण्ड ने ब्रिटेन के साथ एक सुरक्षा समझौता किया था। इसीलिए ब्रिटेन ने पोलैण्ड का साथ दिया और एक दिन बाद फ्रांस भी आकर मिल गया। यह विश्व युद्ध -II की शुरुआत को इंगित करता है।

अधिकांश फासीवादी देशों ने एक दूसरे का समर्थन किया और पड़ोसी देशों पर सैन्य अभियान आरंभ कर दिया। इससे एक ओर जर्मनी इटली और जापान के नेतृत्व वाली ध्रुवीय शक्तियों (Axis poweres) और दूसरी और इंग्लैण्ड, यू.एस, फ्रांस और यू.एस.एस.आर के नेतृत्व वाली मित्र शक्तियों (Allied powers) के बीच द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ। 1941 में जापान जो जर्मनी का मित्र देश था वह यू.एस.ए. के पेरल हार्बर पर आक्रमण किया। हिटलर ने 1942 में यू.एस.एस.आर पर आक्रमण किया। इससे यू.एस.और यू.एस.एस.आर. ने मिलकर जर्मनी और जापाना के विरुद्ध युद्ध शुरू किया।

पराजय और अंत

युद्ध की आरंभिक अवधि में जर्मनी को अनेक विजयें मिलती गई किन्तु 1943 प्रसिद्ध स्टालिंगग्रेड (Stalen grad) युद्ध में जर्मनी की हार हो गई। अब U.S.S.R और मित्र

SCERT TELANGANA

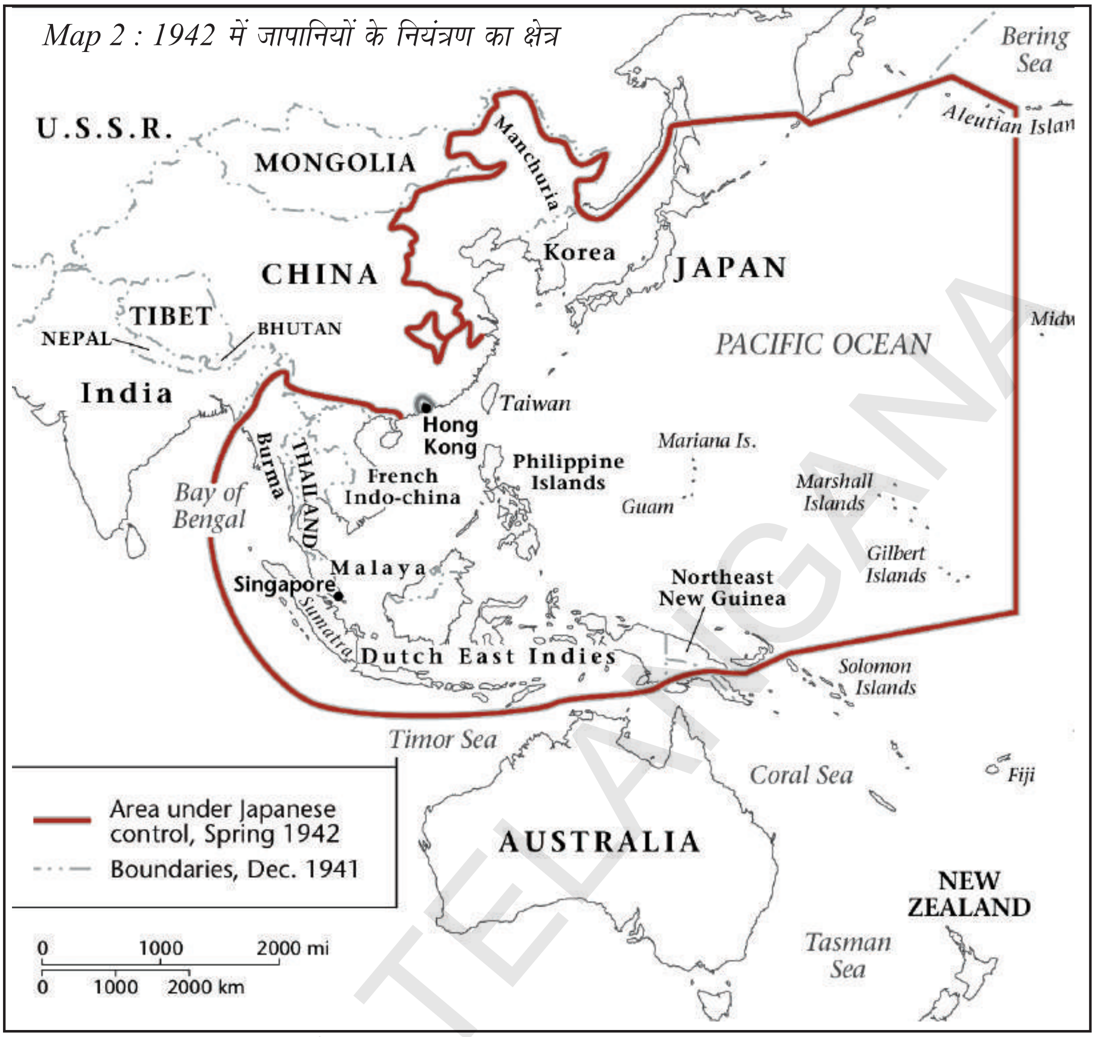

शक्तियों ने जर्मनी को घेर लिया। सम्पूर्ण पूर्वी यूरोपने, जो नाजी शासन से घृणा करने लगा था, सोवियत सेना का स्वागत किया क्योंकि ये घृणात्मक नाजी शासन से मुक्ति पिलाने वाले थे। हिटलर तथा उसके करीबी अनुयादियों ने आत्म हत्या कर ली। ताकि उन्हें कोई बन्दी न बना ले और उन पर कारवाई न हो। आखिरकार जर्मनी दो हिस्सो में बटं गया। पूर्वी जर्मनी जिसका नाम था, GDR याने प्रजातांत्रिक गणतंत्र जर्मनी और पश्चिमी भाग जिसका नाम था, संघात्मक गणतंत्र जर्मनी (FRG) GDR, रूस के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत आता है और FRG अमेरिका के प्रभाव के अंतर्गत आता है।

सुदूर पूर्व में जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर बमों को बरसाया गया तथा जापान को समर्पण के लिए विवश होना पड़ा। अमेरिकी सेना ने जापान पर कब्जा कर लिया लेकिन जापानी नागरिकों की भावनाओं को देखते हुए जापान के सम्राट को ही राज्य करने दिया। परन्तु उन्होंने वहाँ पर इंग्लैंड की तरह एक संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना कर डाली। जापान पर निर्वाचित सरकार को राज्य करने का अधिकार था जो संसद के लिए उत्तरदायायी रहेगी। (DIET)।

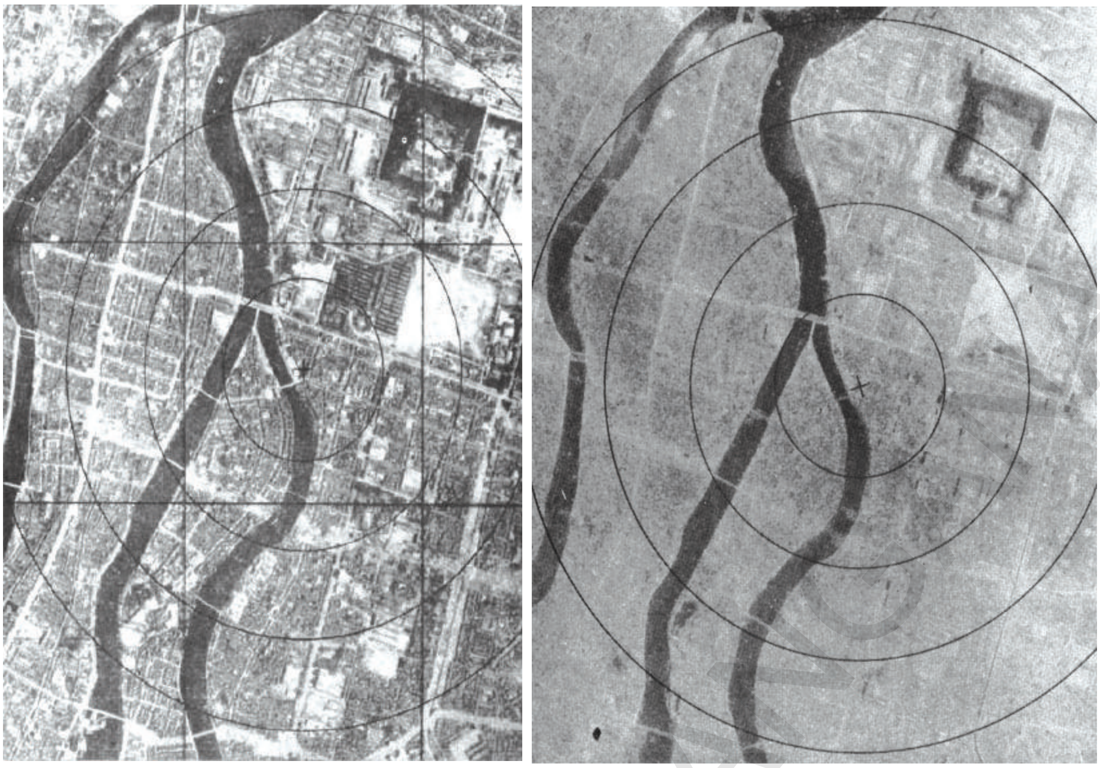

चित्र 12.10 :नागासाकी परमाणु बम गिराये जाने के पहले और बाद में

अनेक नाजि जनरल और नेता बंदी बना लिए गए और उन पर नूरेम्बर्ग (Nuremberg) में मुकद्दमे चले। केवल 11 नाजियों को इस नूरेम्बर कचहरी ने मौत की सजा दी। कई और लोगों को आजीवन कारावास का दंड मिला। नाजियों को सज़ा तो मिली पर वो उनकी क्रूरता और अपराधों के आगे कम थी। जैसे कि आप पिछले अध्यायों में पढ़ चुके हैं। मित्र देश जर्मनी पर प्रथम विश्व युद्ध की तरह अधिक कठोर भी नहीं होना चाहते थे। इसी कारण जर्मनी एवं जापान को आर्थिक संकट स्थिति से मुक्त कराने के लिए अमेरिका ने मार्शल योजना की घोषणा की ताकि उन्हें आर्थिक सहायता देकर उनका आर्थिक नव-निर्माण कर सकें। इसी प्रकार रूस ने भी पूर्वी यूरोपीय देशों की आर्थिक सहायता के लिए योजनाएँ बनाई।

- आपने हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम बरसाने की घटना को सुना होगा। कक्षाकक्ष में इस जानकारी को अपने मित्रों के साथ बाँटिए और परमाणु युद्ध के आतंक पर चर्चा कीजिए। फासीवादी शत्रु देश के विरुद्ध भी क्या ऐसे हथियारों का प्रयोग होना चाहिए? अपने विचार बताइए।

विश्वयुद्ध के परिणाम

विश्वयुद्धों का विश्व की राजनीति, समाज व अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा। निम्नलिखित अंशों के आधार पर हम उन्हें जान सकते हैं।

20 वीं शताब्दी के पहले भाग का अंत हिरोशिमा एवं नागासाकी पर बमबारी जैसे भयंकर

घटनाओं के साथ हुआ। तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना से जिसने कुछ उम्मीद जगाई। जिस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध ने राजतंत्र वादी साम्राज्यों का अंत देखा उसी प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के अंत से विश्व में ब्रिटेन, फाँस, जापान, इटली एवं जर्मनी के उपनिवेशी साम्राज्य भी समाप्त हो गये। 1950 तक भारत, चीन, इन्डोनेशिय, वियतनाम, मिश्र (Egypt) नाईजेरिया आदि देश स्वतंत्र हो गए। ब्रिटेन जो युद्ध से पहले सबसे शक्तिशाली देश था अब दूसरे स्थान पर आ गया। विश्व में दो नए देश विश्व नेता बनकर उभरे। वे थे अमेरिका एवं रूस। रूस (USSR) जिसने हिटलर के युद्ध से अधिकतम हानियाँ उठाई थी दुबारा अपनी आर्थिक स्थिति मज़बूत बनाने में सफल हुआ। उसकी विजय ने विश्व में उसकी प्रतिष्ठा बड़ा दी। और अब उसके साथ एक विशाल ''समाजवादी शिविर'' के निर्माण में । सम्पूर्ण पूर्वी यूरोप और चीन भी इसमें मिल गये।

अत्याधिक मानव क्षति

दोनों विश्वयुद्धों का पहला परिणाम यह था कि - असंस्थ लोग मरे और अनेक घायल हुए। जैसे की पहले ही बताया जा चुका है कि प्रथम विश्व युद्ध में 10 मिलियन लोग और द्वितीय विश्व युद्ध में 20-25 मिलियन लोग मारे गये। मरने वालों में अधिक पुरूष थे जिनकी आयु 40 से भी कम थी। दोनों विश्वयुद्धों से शस्त्रों की होड़, विशेषकर नाभीकिय और रासायनिक शस्त्रों की प्रतिस्पर्था आरंभ हुई। ऐसे हथियारों के आकस्मिक प्रयोग पर भी विश्व में जीवन के कुल नाश का भय छाया हुआ था।

आरेख 1 : युद्ध से संबंधित मृत्यु (1500 - 1999 CE)

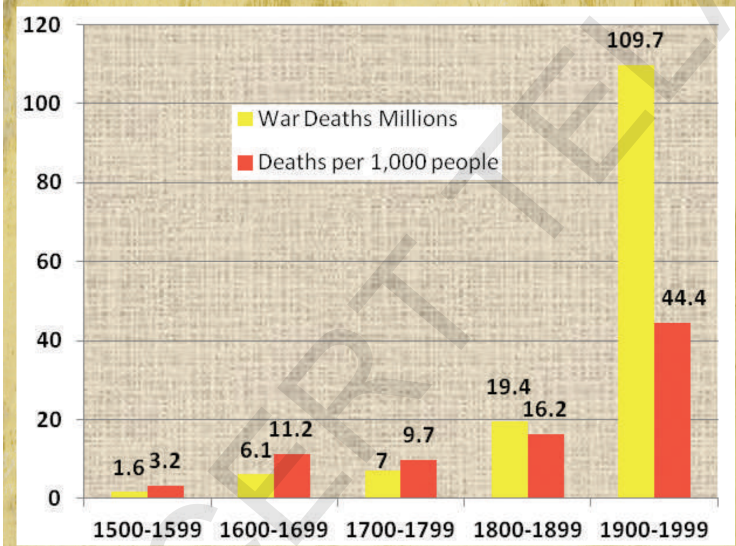

स्त्रोतः लेस्सर आर.बी. अट अल स्टेट ऑफ दी वर्ल्ड 1999 - *चिरस्थायी समाज की ओर प्रगति पर वर्ल्ड वॉच रिपोर्ट (लंदन अर्थस्केन प्रकाशन,* 1999)

उपर्युक्त आरेख से हमें युद्ध में मृत्यु के अनुपात का पता चलता है। उन सदियों में जीवित प्रति हज़ार व्यक्तियों पर युद्ध मृतकों की संख्या/16 वीं सदी में हज़ार में चार से कम व्यक्तियों की मृत्यु होती थी जबकि 20 वीं सदी तक यह संख्या 44 लोगों से अधिक हो गयी - लगभग 4.5% लोग।

प्रजातंत्रीय सिद्धांतो का महत्व बढ़ाना

दोनों युद्धों के बाद विश्व को अप्रजातांत्रिक सरकार से होने वाले खतरों का पता चला। इससे प्रजातंत्र की माँग में वृद्धि हुई। प्रथम विश्व युद्ध से कई साम्राज्य (आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य, रूसी साम्राज्य, ओटोमन साम्राज्य और जर्मन साम्राज्य आदि) समाप्त हो गये। रूस जैसे देशों में

समाजवादी क्रांतियाँ हुई। जर्मनी जैसे देशों ने तानाशाही को निकाल फेंका और वीमर गणराज्य (Weimer Republic) बन गये। तुर्की में ओटोमन साम्राज्य का स्थान प्रजातांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष राज्य ने ले लिया। इसी प्रकार, प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान उपनिवेश स्वशासित बन गये। विश्वयुद्ध-II के बाद उपनिवेशों को स्वतंत्रता मिली जिसके कारण एशिया और आफ्रिका में नये देशों का जन्म हुआ।

शक्तियों के संतुलन में परिवर्तन

विश्वयुद्ध-I से जर्मनी, आस्ट्रो, हंगेरियन, रूस और तुर्की साम्राज्यों की समाप्ति हो गयी। राष्ट्रीयता, आर्थिक क्षमता और सैन्य सुरक्षा के आधार पर पूर्वी और मध्य यूरोप के मानचित्र को फिर से बनाया गया। जब विश्व युद्ध-II समाप्त हुआ तब विश्व का मानचित्र फिर से बदल गया क्योंकि पूर्व के उपनिवेश देश स्वतंत्र देश बन गये थे।

महिलाओं को मतदान का अधिकार (Enfranchisement of women)

बहुत लंबे आंदोलन और संघर्ष के बाद इंग्लैंड की महिलाओं को 1918 में मतदान का राजनैतिक अधिकार प्राप्त हुआ। विश्वयुद्ध बहुत लंबे समय तक चले थे किंतु औद्योगिक उत्पादन और अन्य सेवाएँ भी अनिवार्य थीं। अधिकांश पुरुषों के युद्ध में व्यस्त होने के कारण, महिलाओं को कारखानों, दुकानों, कार्यालयों, स्वयंसेवी सेवाओं, अस्पतालों व पाठशालाओं में काम करना पड़ा। इस प्रकार रोज़ी-रोटी कमाने के आत्मविश्वास के साथ ही महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के समान समानता के लिए अपनी आवाज़ उठायी। मतदान का अधिकार इस दिशा में बहुत बड़ा कदम था।

नवीन अंतर्राष्ट्रीय संगठन :

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर विवादों को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ एक विश्व सरकार थी जिसके चार सिद्धांत यह थे - शांति बनाये रखना, मानव अधिकारों की रक्षा करना, अंतर्राष्ट्रीय कानून का आदर करना और सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहित करना आदि। यूनिसेफ (UNICEF), यूनेस्को (UNESCO), डब्ल्यू.एच.ओ. (WHO), आई.एल.ओ (ILO) आदि अंगों की सहायता से यह कार्य करता है। इनके बारे में आप सुन चुके होंगे और उनके कार्यों को देख भी चुके होंगे। हालांकि संयुक्त राष्ट्र संघ को USA और USSR जैसी महान् शक्तियों की कठपुतली माना जाता है फिर भी वह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद युद्धों को रोकने में सफल रहा है। हम 19 वें अध्याय में संयुक्त राष्ट्र संघ के बारे में विस्तृत रूप से पढ़ेंगे।

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द

औद्योगिक पूँजीवाद	गठबंधन	समाजवाद	नाजीवाद
सत्ता का केंद्रीकरण	आक्रमक राष्ट्रवाद	सैन्यवाद	फासीवाद
साम्राज्यवाद	आंदोलन	बोल्शेविक	

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1) तालिका बना कर दर्शाइए- मित्रशक्तियाँ, ध्रुवीय एवं केंद्रीय शक्तियाँ, विश्व युद्ध में विभिन्न पक्षों में कैसे भाग लिये - आस्ट्रिया, USSR (रूस), जर्मनी, ब्रिटेन, जापान, फ्रान्स, इटली, USA (AS_2)
2) किसी प्रकार विश्व युद्ध राष्ट्रीय राज्य एवं राष्ट्रवाद की इच्छा को उत्पन्न करता है? (AS_1)
3) दोनों विश्व युद्धों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। क्या आप सोचते है कि आज भी विश्व में अनेक देशों में ये विशेषताएँ प्रचलित है। कैसे? (AS_4)
4) रूसी क्रांति ने उनके समाज में कई परिवर्तन लाए। वे क्या थे? और उन्होंने किन चुनौतियों का सामना किया? (AS_1)
5) आर्थिक मंदी के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टि डालिए, इनमें से आप किसे समर्थन देगे और क्यों? (AS_1)
6) जर्मनी नाजीवाद के काल में यहूदियों को कैसे प्रताड़ित किया गया? क्या आप सोचते है कि प्रत्येक देश में कुछ व्यक्ति अपनी अलग पहचान बनाते हैं? (AS_4)
7) आर्थिक मंदी के काल में कल्याणकारी उपायों की सूची बनाइए। (AS_1)
8) आर्थिक मंदी के काल में जर्मनी ने किन चुनौतियों का सामना किया और किस प्रकार नाजी शासकों एवं हिटलर ने इसका इस्तेमाल किया? (AS_4)
9) पृष्ठ 169 का पहला अनुच्छेद पढ़िए .... ‘‘इसी के साथ .... बहिष्कार न हो’’ इस पर अपने विचार लिखिए। (AS_2)
10) पृष्ठ 181 के मानचित्र 2 को देखिए और उत्तर दीजिए। (AS_5)
    1) किन्हीं दो देशों को बताइए जो जापान के अधीन नहीं थे?
    2) किन्हीं दो देशों को बताइए जो जापान के अधीन थे और पश्चिमी दिशा में हो।
11) विश्व के मानचित्र में निम्न स्थानों को दर्शाइए। (AS_5)
    1) जर्मनी, 2) इटली, 3) आस्ट्रिया, 4) USA 5) चीन, 6) रूस, 7) ब्रिटेन
12) युद्ध की रोकथाम एवं शांति को बढ़ावा देने के लिए कुछ नारे तैयार कीजिए। (AS_6)

चर्चा :

कक्षा-कक्ष में युद्ध के पीड़ितों के परिवार की स्थिति और उनके कष्टों पर चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय
13

उपनिवेशों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन

(National Liberation Movements in the Colonies)

नीचे दिये गये उपनिवेशों के मानचित्र को देखिए। आठवीं कक्षा में आपने पढ़ा है कि 19वीं सदी तक किस प्रकार यूरोपीय देशों ने लैटिन अमेरिका, आफ्रिका और एशियाई देशों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया था। इस अध्याय में हम यह पढ़ेंगे कि किस प्रकार इन देशों ने स्वतंत्रता के लिए लड़ाई की। आप ब्रिटेन के उपनिवेशों को गुलाबी रंग, फ्रांस के उपनिवेशों को नीले रंग और हालैण्ड के उपनिवेशों को हल्के भूरे रंग में देख सकते हैं। एशिया और आफ्रिका के कुछ देश जो निरंतर स्वतंत्र थे, उन्हें स्लेटी (Grey) रंग में दर्शाया गया है। विश्व के आधुनिक मानचित्र की सहायता से इन सभी देशों को पहचानिए।

- ब्रिटेन के एक एशियाई और एक आफ्रिकी उपनिवेश को पहचानिए।
- हॉलैण्ड के एक एशियाई और एक आफ्रिकी उपनिवेश को पहचानिए।
- फ्रांस के एक एशियाई और एक आफ्रिकी उपनिवेश को पहचानिए।
- ऐसे दो एशियाई और एक आफ्रिकी देश की पहचान कीजिए जो किसी भी शक्ति के उपनिवेश नहीं बने थे?
- आस्ट्रेलिया किसका उपनिवेश था?

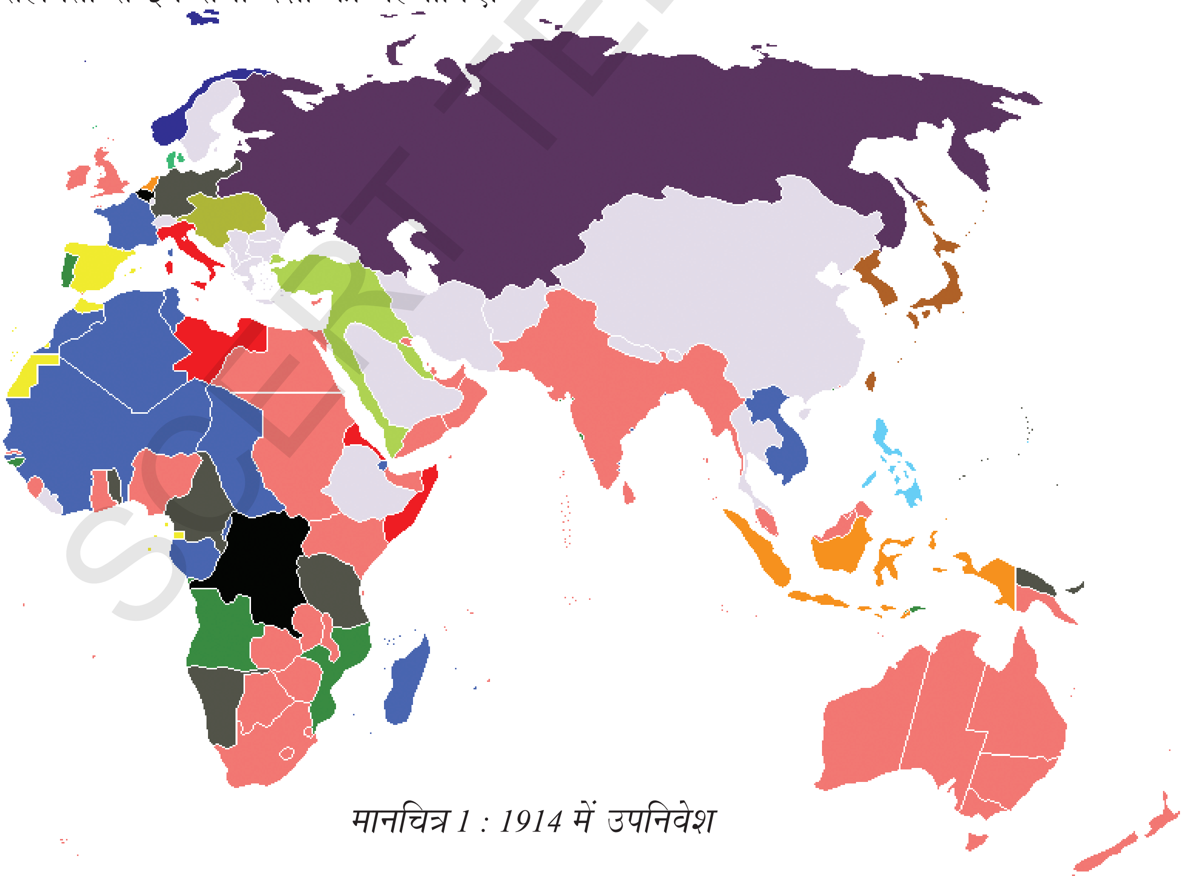

मानचित्र 1 : 1914 में उपनिवेश

SCERT TELANGANA

चीन जैसा स्वतंत्र देश भी वास्तव में असंख्य उपनिवेशी शक्तियों के नियंत्रण में था। उसकी स्वतंत्रता केवल नाम मात्र के लिए थी। इस अध्याय में हम उपनिवेशों की दुर्दशा (Plight) और यूरोपीय शक्तियों के उपनिवेशी प्रभुत्व के विरूद्ध उनके द्वारा किये जाने वाले संघर्ष के बारे में पढ़ेंगे। इन देशों में अधिकतर विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले, विभिन्न धर्मों का अनुकरण करने वाले, भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग रहते थे, तथा वे स्वयं को एक देश का नहीं मानते थे। लगभग इन सभी देशों के पारंपरिक शासक राजा या सम्राट थे जिन्होंने कभी भी प्रजातंत्र और स्वतंत्रता के प्रति सहानुभूति नहीं जताई थी। जैसे ही नये आंदोलनों ने आकार लेना आरंभ किया, वैसे ही ये लोग भी यूरोप में प्रचलित नये विचारों जैसे राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र और यहाँ तक कि समाजवाद से प्रोत्साहित हुए। हम इन देशों में से कुछ के अनुभवों के बारे में पढ़ेंगे और इन उपनिवेशों के लाखों लोगों के जीवन में हुए परिवर्तनों की तुलना अपने देश से करेंगे।

- राष्ट्रीयतावाद की विचारधारा का गठन किसने किया और इसका उद्गम कैसे हुआ? यह जानने के लिए नवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक का पुनःस्मरण कीजिए।
- यदि इन देशों के पारंपरिक शासक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते थे तो किस प्रकार की राजनैतिक व्यवस्था उत्पन्न होती थी?
- उपनिवेशों में किस सामाजिक वर्ग ने स्वतांत्रता के लिए लडाई की? उनके लिए समानता और प्रजातंत्र के आदर्श क्यों महत्वपूर्ण थे?

चीनः दो विभिन्न चरण (China; two different phases)

20 वीं शताब्दी के आरंभ में चीन पर मंचू राजवंश के शासकों का शासन था जो पश्चिमी उपनिवेशी शक्तियों के सामने चीन की सुरक्षा करने में शक्तिहीन बन गये थे। इन शक्तियों ने चीन के विभिन्न भागों में ये शक्तियाँ बहुत शक्तिशाली और प्रभावशाली बन गयी। इन शक्तियों ने वहाँ के शासकों पर अल्प आयात कर, चीनी कानूनों से प्रतिरक्षा और सशस्त्र बलों के प्रबंध जैसे आर्थिक और राजनैतिक छूट देने की ज़बरदस्ती की। साधारण जनता और प्रशासक दोनों ही राज्य के इन मामलों से अप्रसन्न थे । प्रशासकों द्वारा सुधार के अनेक प्रयास किये गये और लोगों नें पश्चिमी शक्तियों के आधित्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

गणतंत्र की स्थापना (Establishing the Republic)

मंचू साम्राज्य का तख्त पलट गया और 1911ई. में. सून यात-सेन (1866-1925) के अधीन गणतंत्र की स्थापना हुई। सून यात-सेन आधुनिक चीन के संस्थापक माने जाते हैं। इनका संबंध एक निर्धन परिवार से था। इनका अध्ययन मिशनरी विद्यालयों में हुआ था, जहाँ इनका परिचय प्रजातंत्र और ईसाई धर्म से करवाया गया। इन्होंने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किया था पर वे चीन के भाग्य को लेकर बहुत चिंतित थे। इन्होंने चीन की समस्याओं का अध्ययन किया और उनके संबंधित क्रियात्मक कार्यक्रमों को बनाया। इनके कार्यक्रम को 'तीन सिद्धांत'(सन मीन चूई) की संज्ञा दी गयी। वह कार्यक्रम ''राष्ट्रीयतावाद'' से संबंधित था। जिसका तात्पर्य था-विदेशी साम्राज्यवादियों के साथ-साथ विदेशी राजवंशों के पैसे खर्च करने वाले मंचू राजवंश की समाप्ति, ''प्रजातंत्र'' और प्रजातांत्रिक सरकार की स्थापना और उद्योगों पर नियंत्रण करके , भूमिहीन किसानों में भूमि के वितरण के लिए भू-सुधार करके ''समाजवाद'' की स्थापना करना। गणतंत्र की घोषणा और मंचू राजवंश के तख्त पलटने के बाद सून यात सेन के नेतृत्व वाली गणतंत्रात्मक सरकार स्वयं को संगठित रख नहीं पायी। देश पर प्रांतीय सैन्य शाक्तियों का नियंत्रण स्थापित हो गया। इन्हें 'युद्ध स्वामी'(War Lords)कहा जाता था।

SCERT TELANGANA

सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ निरंतर अस्थिर होती गयी। 4मई 1919 में वार्साय शांति सम्मेलन के निर्णयों के विरोध में बीजींग में एक क्रांतिकारी प्रदर्शन हुआ। ब्रिटन के नेतृत्व में विजयी दल का हिस्सा होने पर भी चीन को जापान द्वारा अधिकृत अपने क्षेत्र हासिल नहीं हो सके। यह विरोध आंदोलन में बदल गया जिसे 4 मई का आंदोलन (May fourth Movement) कहा जाता है। आधुनिक विज्ञान, प्रजातंत्र और राष्ट्रीयतावाद के द्वारा प्राचीन परंपराओं पर आक्रमण करने और चीन को बचाने के लिए एक पूर्ण पीढ़ी के लोग आगे आये। क्रांतिकारी चाहते थे कि विदेशी चीन छोड़ दे क्योंकि देश के संसाधनों पर उनका नियंत्रण हो गया था। वे चीनी समाज से गरीबी और असमानता को भी दूर करना चाहते थे। उन्होंने साधारण भाषा और लिपि का प्रयोग, पैरों को बाँधने की प्रथा का उन्मूलन (यह एक प्रकार की क्रूर प्रथा थी जिसमें स्त्रियों को पूर्ण विकसित पैर रखने की स्वीकृति नहीं थी) स्त्रियों की अप्रधानता की समाप्ति जैसे सुधारों का प्रतिपादन किया। उन्होंने विवाह में समानता और गरीबी को दूर करने के लिए आर्थिक सुधारों की माँग की।

चित्र 13.1 : 'चार मई के आंदोलन' में विरोध करते छात्र

- चीनी युवा पुरानी पारंपरिक प्रथाओं और विदेशी शक्तियों के विरूद्ध लड़ना क्यों चाहते थे? अपने विचार बताइए।
- क्या भारत में भी कभी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हुई?

गणतंत्रात्मक क्रांति के पश्चात् देश ने उपद्रवों के काल में प्रवेश किया। गियोमिनडांग (नेशनल पीपुल्स पार्टी जिसे कियो-मिन-टांग के एम टी भी कहा जाता है) और चीनी साम्यवादी दल का उदय, देश की एकता के निर्माण और उसे स्थिर बनाने के लिए दो प्रधान शक्तियों के रूप में हुआ। गियोमिनडांग ने सन-येत-सेन के विचारों पर आधारित राजनीतिक दार्शनिकता का अनुकरण किया। उन्होंने कपड़ा, भोजन, आवास और परिवहन जैसी 'चार महान आवश्यकताओं' की पहचान की। सून की मृत्यु के पश्चात चियांग कईशेक का (1887-1975) उदय गियोमिनडांग के नेता के रूप में हुआ। इसने 'युद्ध स्वामियों', अधिक ब्याज खाने वाले क्षेत्रीय नेताओं और साम्यवादियों को हटाने के लिए एक सैन्य प्रचार आरंभ किया। युद्ध स्वामी ऐसे क्षेत्रीय नेता थे जिन्होंने सत्ता पर बलपूर्वक नियंत्रण कर लिया था। यह देश का सैन्यीकरण करना चाहता था। जनता से इसने कहा था कि आदर और प्रवृत्तियाँ के एकीकृत व्यवहार का विकास करें।

चित्र 13. 2 : उत्तर काल का पोस्टर जिसपर लिखा था-'प्राचीन विश्व का नाश करो और नये विश्व का निर्माण करो।''

गियोमीनडंग का सामाजिक आधार शहरी क्षेत्रों में था। औद्योगिक वृद्धि बहुत धीमी और सीमित थी। शंघाई जैसा शहर बाद में आधुनिक वृद्धि का केन्द्र बन गया था। 1919 तक इसे 5,00,000की संख्या वाले औद्योगिक श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। ये शहर बाद में आधुनिक वृद्धि का केन्द्र बन गये। इनमें से जहाज निर्माण जैसे आधुनिक उद्योगों में बहुत कम प्रतिशत लोगों को नौकरी दी गयी। इनमें से अधिकतर 'तुच्छ और विनम्र' (क्जीयाओ शिमिन) व्यापारी और दुकानदार थे। शहरी श्रमिको में विशेषकर महिलाओं को बहुत कम वेतन दिया जाता था। अब इन लोगों ने स्वयं को व्यापारी संघों के रूप में संगठित करना आरंभ कर दिया। काम के घंटे ज्यादा थे और कार्य की स्थिति बहुत खराब थी। जैसे ही स्वतंत्रता के विचारों की प्रसिद्धि हुई, वैसे ही महिलाओं के अधिकारों, समानता के आधार पर परिवार निर्माण के तरीकों तथा प्रेम प्रसंगों पर चर्चा जैसे विषयों पर ध्यान दिया जाने लगा। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों (पैकिंग विश्वविद्यालय की स्थापना 1902 ई.में हुई) के विस्तार ने सामाजिक और संस्कृतिक परिवर्तनों में मदद की। नची विचार धाराओं की ओर बढ़ते आकर्षण को प्रतिबिंबित करने के लिए पत्रकारिता का विकास हुआ।

चियांग रूढ़िवादी था और उसने स्त्रियों को 'पवित्रता, आकृति, भाषण और कार्य' जैसे चार सद्गुणों का विकास करने के लिए प्रोत्साहित किया। उसकी दृष्टि में स्त्रियों की भूमिका घरेलू कार्यों तक ही सीमित थी। हेमलाइन (स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाली फ्रॉक जैसी पोशाक) की लंबाई भी निर्धारित की गयी। कारखानों के मालिकों को प्रोत्साहित करने के लिए उसने व्यापार संघ आंदोलनों को दबाने का प्रयास किया। गियोमीनडांग ने देश में एकता स्थापित करने का प्रयास किया, किंतु उसके संकुचित सामाजिक आधार और सीमित राजनैतिक दृष्टिकोण के कारण उसे सफलतता प्राप्त नहीं हुई। पूँजी पर नियंत्रण और भूमि का समानीकरण सूनयातसेन के कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य था, किंतु कृषक वर्ग और बढ़ती असमानताओं पार्टी द्वारा नजर अंदाज किये जाने के कारण इसके पूरा नहीं किया जा सका। जनता की समस्याओं को सुनने के बजाय उनके ऊपर सैन्य आदेशों को अधिक थोपा गया।

- इस काल के दौरान किन-किन प्रमुख राजनैतिक दलों का उद्गम हुआ।
- इस प्रकार के लामबंदियों के सदस्य कौन थे?
- उनके द्वारा सोचे गये सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों का स्वभाव क्या था?

चीन में साम्यवादी दल का उदय (The Rise of the Communist Party of China)

1937 ई.में जब जापान ने चीन पर आक्रमण किया, तो गियोमिनडांग ने कदम पीछे हटा लिया। लंबे समय तक चलने वाले युद्धों ने चीन को कमजोर कर दिया था। 1945 से 1949 के बीच मूल्यों में प्रतिमाह 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिससे साधारण लोगों का जीवन पूरी तरह नष्ट हो गया। ग्रामीण चीन में दो समस्याएँ उत्पन्न हुई- एक पारिस्थितिक (Ecological) जिसमें मिट्टी का अपरदन, वनों का अपक्षय और बाढ़ शामिल थे। दूसरी -सामाजिक और आर्थिक समस्या-जिसका उदय अत्याचारी भू-कालिक प्रणाली , उधारी, प्राचीन प्राद्योगिकी और संचार साधनों की अल्पता के कारण हुआ।

रूस की क्रांति के तुरंत बाद 1921 ई.में चीन में साम्यवादी दल (CCP) की स्थापना हुई। रूस की सफलता ने समूचे विश्व पर शक्तिशाली प्रभाव डाला। लेनिन जैसे नेताओं ने मार्च 1918 में कमीन्टर्न की स्थापना का बीड़ा उठाया, ताकि अत्याचारों की समाप्ति के लिए एक विश्व सरकार की स्थापना हो सके। कमीन्टर्न(Comentern) और सोवियत संघ दोनों ने ही विश्व में साम्यवादी दल का समर्थन किया था। वे पारंपरिक मार्क्सवाद के अवबोध से प्रेरित थे और उसका मानना था कि यह क्रांति शहरों में श्रमिक वर्ग द्वारा ही चलायी जा सकती है।

SCERT TELANGANA

माओ ज़ेडांग(1893-1976) एकप्रमुख साम्यबादी नेता थे। इन्होंने किसानों की दशा को अपने क्रांतिकारी कार्यक्रमों का प्रमुख आधार बनाकर अलग तरीके से काम करना शुरू किया। ज़मींदारी के उन्मूलन के लिए संघर्ष करने के लिए इसने चीनी किसानों को संगठित किया और किसानों की एक सैना तैयार की। लाखों भूमिहीन किसान साम्यवादी दल द्वारा चलाये जाने वाले संघर्ष में शामिल हो गये। इसकी सफलता ने साम्यवादी दल को शक्तिशाली राजनैतिक बल बना दिया जिसके कारण अंत में गियोमिनडांग पर विजय हासिल की गयी।

चित्र 13.3 : 1944 में येनान में माओ जनता को संबोधित करते हुए

माओ ज़ेडांग की उदारता जियंक्सी (Jiangxi)में पर्वतों से पता चलती है जहाँ उन्होंने गियोमिनडंग से हमलों से बचने के लिए 1928 से 1934 के बीच का समय विताया था। एक शक्तिशाली किसान परषिद् (soviet) का गठन हुआ। यह परिषद जमींदारों की ज़मीनों के जब्तीकरण (Confiscation) और उनके पुनःवितरण के द्वारा एकीकृत होकर बनी थी। माओ ने, अन्य नेताओं से अलग एक स्वतंत्र सरकार और सेना के गठन पर बल दिया। इसने महिलाओं की समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की और ग्रामीण महिला संगठनों के उत्थान का समर्थन किया। आयोजित विवाहों पर रोक लगाने, विवाह समझौतों के क्रय और विक्रय पर रोक, तथा तलाक की प्रक्रिया को आसान करने के लिए, उसने नये विवाह-संबंधी कानून बनाये।

गिमोमिनडांग की नाकाबंदी के कारण साम्यवादी सोवियत दल को अपने लिए अन्य आधार तलाशने के लिए मजबूर होना पड़ा। जिसके फलस्वरूप उन्हें (1934-35) के बीच शांक्जी(Shonxi) तक 6,000 मील की दुर्गम, कठिन और लंबी यात्रा करनी पड़ी।यनान (Yanan) में इन लोगों ने अपना नया पड़ाव डाला। यहाँ युद्धस्वामित्व को समाप्त करने, भू-सुधारों को चलाने और विदेशी साम्राज्यवाद से संघर्ष करने के लिए एक नये कार्यक्रम का विकास किया। भू-सुधारों और राष्ट्रीयकरण के दो एजेंडो के कारण वे शक्तिशाली सामाजिक आधार को प्राप्त करने में सफल हुए।

1937 औरे 1945 के बीच जापान ने चीन पर आक्रमण किया और उसके बहुत बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। उन्होंने चीन पर एक क्रूर उपनिवेशी सैनिकशासक को लादने का प्रयास किया। इसका चीनी समाज और अर्थव्यवस्था पर हानिकारक प्रभाव पड़ा। जापानी अधिकार के विरोध में गियोमिनडांग और चीन के साम्यवादी दल ने मिलकर संघर्ष किया। अगस्त 1945 में US के सामने जापान के आत्मसर्मपण के पश्चात् गियोमिनडांग और चीनी साम्यवादी दल दोनों ने चीन पर नियंत्रण करने के लिए लड़ने का प्रयास किया। अंत में चीन साम्यवादी दल को चीन की मुख्य भूमि पर अपना शासन स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई। गियोमिनडांग को ताइवान द्वीप में बलपूर्वक अपनी सरकार बनानी पड़ी।

नये प्रजातंत्र की स्थापना:1949-1954 (Establishing the new democracy : 1949-1954)

चीनी सरकार के जन गणतंत्र की स्थापना 1949 ई. में. हुई। यह 'नये प्रजातंत्र' के सिद्धांतों पर आधारित था। ये सिद्धांत साम्राज्यवाद और भू.स्वामित्ववाद का विरोध करने वाले सभी सामाजिक वर्गों के गठबंधनों पर आधारित थे। अर्थव्यवस्था के समस्यात्मक क्षेत्र सरकार के नियंत्रण में रखे गये। एक बार सत्ता में आने पर चीनी साम्यवादी दल ने अनेक सुधारात्मक कदम उठाये। उन

लोगों ने ज़मींदारों की भूमि को ज़ब्त कर लिया और उसे गरीब किसानों में बाँट दिया। नयी सरकार ने भी महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने और बहुपत्नीवाद के उन्मूलन के लिए अनेक कानून बनाये। इसके द्वारा महिलाओं को नयी भूमिकाएँ निभाने और विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के समान अधिकारों को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

भू-सुधार (Land Reforms)

चित्र 13.4 : भूमि-दस्तावेजों को जलाते हुए लोग

ग्रामीण परिस्थितियों को समझने और कृषक संगठनों के गठन के शांति प्रयासों के दो वर्षों के पश्चात 1950-51 में भूमि-सुधार उचित रूप से आरंभ किये गये। इसके प्रमुख कदम थे : गाँव के निवासियों के वर्ग की पहचान की गयी। भू-स्वामियों की भूमि और अन्य उत्पादक संपत्तियों का जब्तीकरण और पुनःवितरण किया गया। देश-स्तरीय भू-सुधार समिति द्वारा भेजे गये कार्यकारी दल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कृषकों के संगठनों का निर्माण और उन्हीं में से स्थानीय नेतृत्व को निभाने के लिए कुछ लोगों का चयन करना इस दल के प्रमुख कार्य थे। नये नेतृत्व को, प्रमुख रूप से गरीब तथा मध्य वर्गीय किसानों में से चुना गया। अनेक क्षेत्रों में, अपने कौशलों की श्रेष्ठता के आधार पर, मध्यमवर्गीय किसान आधिपत्य स्थापित करने में सक्षम हुए। इसके साथ ही, भू-स्वामियों के विरोध में जनसभाओं और मुकद्दमों द्वारा कार्यकारी दलने जन साधारण को जागृत करना आरंभ किया।

इस प्रकार के कार्यों से भू-स्वामियों का जनता में अपमान हुआ और इन मुकद्दमों के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण पैमाने पर भू-स्वामियों के वर्ग में से लगभग 10 से 20 लाख व्यक्तियों को फाँसी की सजा दी गयी।

एक आर्थिक सुधार कार्यक्रम के द्वारा भू-सुधारों के अंतर्गत चीन की 43 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि को लगभग 60 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या में पुनःवितरित किया गया। निर्धन किसानों ने पर्याप्त रूप से अपनी खेती बाड़ी में वृद्धि की किंतु अपनी शक्तिशाली आरंभिक स्थिति के कारण वास्तविक रूप में मध्यमवर्गीय किसान अधिक लाभान्वित हुए ।

गाँव के निर्धन और मध्यमवर्ग में से एक नये संभ्रांतवर्ग के उदय होने पर पुराने संभ्रांत वर्ग को अपने सभी आर्थिक साधनों और सत्ता का त्याग करना पड़ा। इन निर्धन और मध्यवर्गीय लोगों को राजनैतिक कार्यों में लाने का श्रेय चीनी साम्यावदी दल को जाता है। भू-सुधारों के साथ-साथ साक्षरता और राजनैतिक शिक्षा के प्रचार के लिए प्रौढ़ कृषक विद्यालयों की स्थापना के बहुत अधिक प्रयास किये गये। इसके साथ ही सभी गाँवों में छोटे बच्चों और प्रौढ़ों के लिए प्राथमिक विद्यालय भी स्थापित किये गये।

अधिकांश विद्वानों का यह मानना था कि सफलतापूर्वक चलाये गये भू-सुधारों और क्रांति के आरंभिक-वर्षों में प्राप्त शिक्षा के सार्वभौमिकरण ने चीन के भावी विकास के लिए ठोस आधार तैयार किया। क्रमशः चीनी साम्यावादी दल ने एक दलीय शासन की स्थापना की जिससे सर्वोच्च नेता या 'सभापति' के पास सारी शक्तियाँ होती थीं। सभी विपक्षी गतिविधियों को ठुकरा दिया गया।

- भू-सुधारों कार्यक्रमों ने किसप्रकार चीनी साम्यवादी दल को युद्ध में जीत हासिल करने में सहायता दी?
- चीन से चलाये गये भू-सूधारों की तुलना भारत के भू-सुधारों से कीजिए। उनमें क्या समानताएँ और विषमताएँ थी?
- क्या आप इस विचार से सहमत हैं. कि देश की स्वतंत्रता और विकास के लिए स्त्री और पुरूषों की समान सहभागिता और उनको समान अवसर प्राप्त होने चाहिए?

SCERT TELANGANA

वियतनामः दो उपनिवेशियों के विरूद्ध
(Vietnam: Against two colonisers)

उपनिवेशी अनुभव

19वी. शताब्दी के मध्य में वियतनाम प्रत्यक्ष फ्रांसीसी शासन के अधीन हो गया।वियतनाम के शासक फ्रांसिसियों के हाथ की कठपुतली बन गये। फांसीसियों ने उसीप्रकार वियतनाम पर शासन किया, जिसप्रकार अंग्रेजों ने भारत पर किया था। इन लोगों ने वियतनाम के लोगों के जीवन को उसी प्रकार प्रभावित किया जिसप्रकार अंग्रेज़ों ने भारतीयों के जीवन को प्रभावित किया था।

चित्र 2 : वियतनाम

निर्यात, जमींदारी और किसान

फ्रांसीसी, वियतनाम को चावल के निर्यातक के रूप में विकसित करना चाहते थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने तीन प्रकार की युक्तियाँ अपनायी। पहली युक्ति थी सिंचाई साधनों में सुधार करना, दूसरी युक्ति थी जमींदारों को प्रोत्साहन देना, तीसरी युक्ति थी चावल और रबर जैसे कृषि उत्पादों के लिए बाज़ारों की सुविधा उपलब्ध कराना आदि। फसलों में वृद्धि के लिए फ्रांसीसियों ने मेकांग डेल्टा में नहरों की खुदाई और परनाले बनाने का काम शुरू किया। सिंचाई कार्यों की वृहत् व्यवस्था के अंतर्गत नहरों और परनालों का निर्माण ज़बरदस्ती करवाया गया। इससे चावल के उत्पादन में वृद्धि हुई और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में चावल का निर्यात होने लगा। वियातनाम ने अपने चावल उत्पादन के दो-तिहाई भाग का निर्यात किया और इस तरह वह 1931 तक वह विश्व का तीसरा बड़ा चावल का निर्यातक देश बन गया। इसके साथ ही व्यापार और वस्तुओं के परिवहन, सैन्य छावनियों के चालन और समूचे क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए अंतःसंरचनात्मक परियोजना (सड़कों और रेलों)का आरंभ किया गया। वियतनाम को उत्तरी और दक्षिणी भाग को चीन से जोड़ने के लिए एक ट्रांस-इंडो-चीन रेल नेटवर्क की शुरूआत की गयी।

वियतनाम की उपनिवेशी अर्थव्यवस्था प्राथमिक रूप से फ़्रांसीसियों और कुछ वियतनामी संभ्रांत व्यक्तियों के स्वामित्व वाली चावल की खेती और रबर के वृक्षारोपण पर निर्भर थी। रबर के वृक्षारोपण में बंधुआ मज़दूरों का वृहत् रूप से उपयोग किया जाता था। अर्थ व्यवस्था के औद्योगिकीकरण के लिए फ्रांसीसियों ने बहुत कम ध्यान दिया। ग्रामीण क्षेत्रों में सामंतवाद फैल गया। इन सामंतों (जमीदारों) ने छोटे किसानों की जमीनों पर अधिकार कर लिया और उन्हें 'किरायेदार किसान' बना दिया। परिणामस्वरूप किसानों का जीवन-स्तर गिरने लगा।

फ्रांस के उपनिवेशियों के संबंधों के कारण भूमि पर विशाल और धनी भू स्वामियों का अधिकार था। भूमिहीन होने के कारण वियतनाम के किसान कर्जदार हो गये। भू स्वामी जो गाँव के संभ्रांत (कुलीन) व्यक्ति भी थे, उनके द्वारा लगाये गये ब्याजदरों, भू-किरायों और दमघोंट् करों से किसान मुक्त नहीं हो पा रहे थे। 1930 ई.में.भूमि विहीनता और भू-स्वामित्व पर दिये गये आँकड़ों से, वियतनामी किसानों की दुर्दशा का करूण चित्र दृष्टिगोचर होता हैं। अन्नाम में, 1938 ई.में. लगभग 38% परिवार भूमि से बदखल कर दिये गये। टोंकीन और कोचिनचीना में लगभग 58% और 79% परिवार क्रमशः पूर्णरूप से भूमिविहीन हो गये थे।

SCERT TELANGANA

बहुसंख्यक परिवार, जिनके पास बहुत अधिक भूमि थी, 1930 तक वे भूखमरी के कगार पर आ गये थे तो कल्पना कीजिए कि भूमिहीन किसानों की स्थिति कैसी होगी?

वे किसान, जिन्होंने जमींदारों की भूमि किराये पर ली थी, उन्हें किराया दो रूपों में देना पड़ता था। उन्हें अपने उत्पादन का भाग जमींदारों को किराये के रूप में देना पड़ता था। उन्हें जमींदारों के खेतों और घरों में भी काम करना पड़ता था। साथ ही साथ उन्हें ज़मींदारों के द्वारा लगाये गये करों का भी भुगतान करना पड़ता था। इसी कारण किसानों ने जमींदारों से चावल और धन उधार लेना शुरू किया तथा वे कर्ज़ के बोझ तले दबते चले गये।

- फ्रांसीसियों के द्वारा वियतनाम में रेलमार्गों और नहरों का विकास क्यों किया गया?
- भूमिहीन किसान और भूमिहीन श्रमिकों के बीच क्या अंतर हैं?
- आपने भारत में ब्रिटिश शासन में किसानों की दशा के बारे में पढ़ा है। भारतीय किसानों और वियतनाम के किसानों की दशा में क्या समानताएँ थी?

''नागरिकीकरण मिशन''The "Civilising Mission"

अंग्रेज़ों की तरह फ्रांसीसी उपनिवेशियों ने यह महसूस किया कि उपनिवेशों के लोग असभ्य हैं, और उनके शासन का मुख्य उद्देश्य आधुनिक सभ्यता के लाभों को लागू करना है। 'देशीय'(Natives) लोगों को सभ्य बनाने का एक साधन था-शिक्षा। फ्रांसीसियों को एक शिक्षित स्थानीय श्रमिक बल की आवश्यकता थी किंतु उन्हें शिक्षा द्वारा समस्याओं के उत्पन्न होने का भी भय था कि एक बार शिक्षित होने पर वियतनामी लोग उपनिवेशी प्रभुत्व के बारे में प्रश्न करने लगेंगे। वियतनाम में रहने वालों को फ्रांसीसी नागरिकों (जिन्हें कोलोन कहा जाता था।)को भय था कि शिक्षित वियतनामियों के कारण वे शिक्षक, दुकानदार और पुलिस की नौकरियाँ को खो देंगे। इसीलिए उन्होंने वियतनाम के लोगों को फ्रांसीसी शिक्षा सुलभ करवाने वाली नीतियों का विरोध किया। प्राथमिक स्तर पर वियतनामी शिक्षा सिखलायी जाने के बावजूद भी, उच्च शिक्षा फ्रेंच में ही दी जाती थी। जनसंख्या के बहुत छोटे भाग और वियतनामी संभ्रांत व्यक्तियों को ही इन विद्यालयों में प्रवेश इसमें प्रवेश ले सकते थे। प्रवेश लेने वालों में से कुछ लोग ही अंत में विद्यालयी निकासी-परीक्षा उत्तीर्ण कर पते थे। विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में फ्रांसीसियों का गुणगान था..और वे उपनिवेशी शासन को न्यायसंगत बताती थी।

- भारत में अंग्रेजों द्वारा अपनायी जाने वाली नीतियों को याद कीजिए। भारत में अंग्रेजों द्वारा अपनायी गयी उपनिवेशी नीतियों की तुलना, वियतनाम में फ्रांसीसियों द्वारा अपनायी जाने वाली नीतियों से कीजिए। दोनों के बीच कौन-कौन सी सामानताएँ और विषमताएँ थी?

वियतनामी राष्ट्रीयतावाद का उदय (Emergence of Vietnamese Nationalism)

शिक्षकों और छात्रों ने फ्रांसीसियों द्वारा दिये गये पाठ्यक्रम का अंधानुकरण नहीं किया। कभी-कभी वहाँ खुले तौर पर विरोध होता था तो कभी-कभी खामोशी से प्रतिरोध किया जाता था। छोटी कक्षाओं में वियतनामी शिक्षकों की संख्या में वृद्धि होने से, वास्तव में क्या पढ़ाया जा रहा है, इसपर नियंत्रण रखना कठिन हो गया। शिक्षण के समय वियतनामी शिक्षक विषयवस्तु में अक्सर सुधार कर देते थे और फ्रांस के शासक के बारे में जो लिखा गया है उसकी आलोचना भी करते थे । वियतनामीयों को सफेदपोश नौकरियों (White Collor Jobs) की योग्यता प्राप्त करने से रोकने वाले उपनिवेशी सरकार के प्रयन्नों का छात्रों ने विरोध किया। वे देशभक्ति की भावना से प्रेरित थे और वे दृढ़तापूर्वक इस बात को मानते थे कि पढ़े-लिखे लोगों को समाज के हित के लिए लड़ना चाहिए। इन विचारों के कारण उनमें तथा फ्राँसीसियों और पारंपरिक संभ्रांत व्यक्तियों, के बीच विवादों ने जन्म लिया तब से ही दोनों को स्थितियाँ खतरे में पड़ती दिखाई दी।

SCERT TELANGANA

1920 तक, छात्र विभिन्न राजनैतिक पार्टियों का निर्माण कर रहे थे, जैसे यंग अन्नम (Young Annam) की पार्टी वे अन्नामीस स्टूडेंटस (Annamese Students) जैसी राष्ट्रवादी पत्रिकाओं का प्रकाशन भी कर रहे थे।

20वीं सदी के प्रारंभ से वियतनामी छात्र आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जापान गये इनमें से अनेकों का प्राथमिक उद्देश्य वियतनाम से फ्रांसीसियों को निकाल फेंकना था, कठपुतलीय शासक को हटा देना और ग्यूयेन (Nguyen) साम्राज्य को पुनःस्थापित करना, जो फ्रांसीसियों के द्वारा हटा दिया गया था।

चीन में सुन यात सेन (Sun Yat-Sen) की प्रजातांत्रिक क्रांति के पश्चात वियतनामी भी वियतनाम में गणतंत्रीय और प्रजातांत्रिक शासन की स्थापना के लिए प्रेरित हुए। अब कई छात्र अध्ययन और नयी राजनैतिक योजनाओं के बारे में जानने के लिए चीन, फ्रांस, और तत्पश्चात USSR गये।

महिलाएँ विद्रोही के रूप में

वियतनाम की महिलाएँ पारंपरिक समानता के अधिकार का आनंद उठाती थी, विशेष रूप से निचले वर्ग की। लेकिन उन्हें अपना भविष्य निश्चित करने की बहुत ही सीमित स्वतंत्रता थी और वे सार्वजनिक जीवन में कोई भूमिका नहीं निभाती थी।

जैसे ही राष्ट्रीय आंदोलन बढ़ा, महिलाओं की स्थिति पर प्रश्न उठने लगे और नारीप्रकृति का एक नया रूप सामने आया। लेखकों और राजनैतिक विचारकों ने उन महिलाओं को आदर्श बनाना आरंभ कर दिया था जिन्होंने सामाजिक नियमों का विरोध किया था। 1930 ई. में नहाट तिन्ह के समय, लिन्ट के द्वारा लिखा गया एक उपन्यास लोकनिंदा का कारण बना क्योंकि उसमें एक महिला को दिखाया गया था जो बलपूर्वक किये जाने वाले विवाह को छोडकर अपने मनपसंद व्यक्ति से विवाह कर रही थी, जो राष्ट्रीय राजनीति में संलग्न था। वियतनाम के सामजिक नीतियों के विरोध यह नयी महिला के आगमन को इंगित करता है।

1930 के समय की आर्थिक मंदी ने वियतनाम पर अत्यधिक प्रभाव डाला। रब्बर और चावल के मूल्य में गिरावट आयी , जिसके फलस्वरूप ग्रमीण ऋण, बेरोजगारी और ग्रामीणीकरण में बढ़ोतरी हुई। फ्रांसीसियों ने इस बढ़ोतरी का दमन क्रूरता से किया। यहाँ तक कि प्रदर्शनकारियों के ऊपर बम बरसाने के लिए हवाईजहाज का उपयोग किया।

फरवरी 1930 में, हो चि मिन्ह (Ho Chi Minh) (जिसने फ्रांस और रूस में समय बिताया था।) ने वियतनामी साम्यवादी पार्टी (Vietnam Cong San Dang) स्थापित करने के लिए प्रतिस्पर्धक राष्ट्रवादी दलों को एक किया। जिसका पुनर्नाम इंडो-चीन साम्यवादी पार्टी (Indo-Chinese Communist Party) रखा गया। यह यूरोपीय साम्यवादी पार्टियों के उग्रवादी प्रदर्शन से प्रेरित थे।

1940में जापान ने दक्षिण पूर्वी एशिया पर नियंत्रण के लिए अपने साम्राज्यवादी अभियान के भाग के रूप में वियतनाम पर आधिपत्य जमा लिया। इसीलिए राष्ट्रवादियों को जापानियों और फ्रांसीसियों की विरूद्ध लड़ना आवश्यक था। अब भी फ्रांस कमजोर स्थिति में था क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के समय हिटलर ने सम्पूर्ण फ्रांस पर अधिकार जमा लिया था। स्वतंत्र वियतनाम (Vietnam Cong San Dang) के नये बनाये गये संघ , जिसे वियतमिनह कहा

- चावल के मूल्य की कमी के कारण ग्रामीण ऋणों में बढ़ोतरी क्यों हुई?
- वियतनाम और चीन दोनों में युवकों और छात्रों ने राष्ट्रवाद के प्रकट होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उनमें समानता और विभिन्नताओं पर चर्चा कीजिए।
- आपके विचार में वियतनाम में स्वतंत्र सरकार के द्वारा भूमि किराये में कमी करना प्रथम प्रयासों में से एक क्यों था?

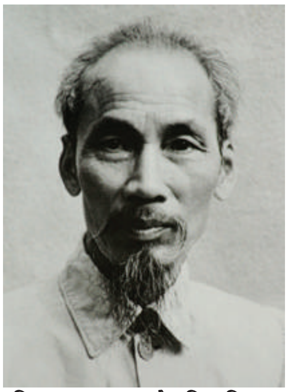

चित्र 13.5 : हो चि मिन्ह

जाने लगा था। इस संघ ने जापानी अधिकार के लिए लड़ाई की और सितंबर 1945 में हनोई पर पुनः कब्जा कर लिया। वियतनाम के प्रजातांत्रिक गणराज्य का निर्माण हुआ और हो चि मिन्ह चैयरमैन बने। अगस्त 1945 में जब वियतनाम सत्ता में आया उसने तुरंत भूमि किराये में 25% कटौती की सूचना जारी की। सभी माध्यमिक किरायों को रद्द करने और किरायेदारों द्वारा 1945 से पहले के किराये की बकाया धनराशि रद्द करने के लिए एक सूचना पत्र जारी किया। उन्होंने सांप्रदायिक भूमि और फ्रांसीसी और वियतनामी देशद्रोहियों के स्वामित्व की भूमि के पुनः वितरण की नीति भी अपनायी।

वियतनाम का नया गणराज्य (The New Republic of Vietnam)

नये गणराज्य को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। फ्रांसीसियों ने राजा, बाओ डाई(Bao Dai) को अपनी कठपुतली बनाकर, उसके द्वारा अपना नियंत्रण फिर से प्राप्त करने का प्रयास किया। फ्रांसीसियों की सेना के कारण, वियतनामियों को पीछे हटकर पहाड़ों पर जाना पड़ा। लड़ाई के आठ वर्ष पश्चात, 1954 में डेन बीन फू (Dien Bien Phu) में फ्रांसीसी हार गये और लगभग 16000 फ्रांसीसी सैनिक और अफसर बंदी बना लिये गये।

फ्रांसीसियों की हार के बाद जिनेवा में एक शांति समझौता हुआ। इसमें वियतनामियों को देश के विभाजन को स्वीकार करने के लिए मना लिया गया। उत्तर और दक्षिण बँट गये : हो चि मिन्ह (Ho Chi Minh) और साम्यवादियों ने उत्तर पर अधिकार स्थापित कर लिया। दक्षिणी भाग पुराने राजा के सुपुर्द कर दिया गया जिसे जल्द ही न्गो डिन्ह डीम (Ngo Dinh Diem) के द्वारा हटा दिया गया। उसने दमनकारी और सत्ताधारी सरकार का निर्माण किया। जो कोई भी उसका विरोध करते थे उन्हें जेल में डाल दिया जाता था। उसके तानाशाही शासन का विरोध राष्ट्रीय स्वतंत्रता मोर्चा (National Liberation Front) (NLF)के बैनर के अन्तर्गत एक हुए बहुसंख्यक विरोधी दल ने किया।

उत्तरी वियतनाम में इस समय तक वियतमिन्ह (Vietminh) ने भूमि सुधार के संबंध में नम्र नीति अपनायी। इसने भूमि किराये में कटौती निश्चित करने के लिए अपने आपको सीमित रखकर और केवल उन जमींदारों की भूमि जब्त की जिन्होंने खुले रूप से फ्रांसीसियों और जापानियों का साथ दिया था। फिर भी 1954 के पश्चात उत्तरी वियतनाम में भूमि सुधार का एक नया युग आरंभ हुआ। जमींदारों की भूमि जब्त करके भूमि के भूखे, भूमिहीन किसानों और गरीब किसानों में बाँट दी गयी। वियतनामी किसान जिनका अपनी स्वयं की भूमि पर स्वामित्व का अपना स्वप्न पूरा हुआ था, वियतमिन्ह को समर्थन देना आरंभ किया।

- इस प्रकार के भूमि सुधारों का वियतनाम समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न सामाजिक वर्गों के दृष्टिकोण से चर्चा कीजिए।
- चीन, वियतनाम और भारत में भूमि सुधारों की प्रकृति की तुलना कीजिए।

युद्ध में US प्रवेश (The Entry of the US into the War)

उत्तर में हो चि मिन्ह सरकार की सहायता से,NLF ने देश के एकीकरण के लिए लड़ाई की। US इस गठबंधन को भय से देख रहा था। साम्यवादियों की बढ़ती शक्ति से डर कर, उसने सेना और हथियार भेजकर, हस्तक्षेप करने का निश्चय किया।

SCERT TELANGANA

एजेंट ऑरेंजः घातक विष (Agent Orange: The Deadly Poison)

एजेंट ऑरेंज, एक डेफोलियंट (Agent Orange is a defoliant), पेड़-पौधे नाशक हैं। इसका ऐसा कहलाने का कारण यह है कि इसे नारंगी (orange) पट्टी (band) लगे ड्रमों में रखा जाता है। 1961से 1971 के बीच,US सेनाओं के द्वारा कार्गो हवाइज़हाजों से लगभग 11 मिलियन गैलोन इस रसायन का छिड़काव किया गया। उनकी योजना खेतों और जंगलों को नष्ट करने की थी, ताकि यदि लोगों के छिपने के लिए जंगल न होंगे तो उनकी हत्या करने में आसानी होगी। इस विष से देश की लगभग 14प्रतिशत कृषि भूमि प्रभावित हुई। इसका प्रभाव इतना अधिक था कि, आज भी लोग उससे प्रभावित हो रहे हैं। डायोक्सिन (Dioxin) एजेंट आरेंज का एक तत्व है, जो बच्चे के मस्तिष्क को क्षति पहुँचाने और कैंसर का कारण माना जाता है। तथा अध्ययन के अनुसार, छिड़काव किये गये क्षेत्र में पायी जाने वाली शारीरिक विकृति के कई मामलों का कारण भी यह ही है।

वियतमनाम में US के हस्तक्षेप (अधिकतर नागरिकों के लक्ष्य के विरूद्ध) के समय उपयोग में लाये गये रासायनिक हथियार, बमों की क्षमता इतनी अधिक थी कि सम्पूर्ण द्वितीय विश्व युद्ध में इसका उपयोग किया गया।

युद्ध में US का प्रवेश एक नये चरण की शुरूआत थी जो वियतनामियों और साथ ही अमेरीकनों के लिए महँगा सिद्ध हुआ। 1965से 1972 के बीच, लगभग 34,00,000US सेनाओं ने व्यक्तिगत रूप से वियतनाम में लड़ाई की। US के पास उन्नत तकनीक और अच्छी चिकित्सा आपूर्ति होने के बावजूद भी, उच्च क्षति पहुँची। युद्ध में लगभग 47,244 लोग मारे गये और 3,03,704 घायल हुए।(घायलों में से 23,014 को वियतनामी प्रशासन ने 100 प्रतिशत अक्षम (disabled) घोषित कर दिया)

US के साथ संघर्ष का यह चरण पाशविक था। भारी हथियारों और टैंको तथा टाइम - B52sके अधिकतम शक्तिशाली गोलाबारों के नेतृत्व में हज़ारों की संख्या में US सेना यहाँ पहुँची। दूर-दूर तक हुए आक्रमणों और रासायनिक हथियारों जैसे - नापाम (Napalm) (एक घातक बम जो मनुष्य को तीव्र क्षति पहुँचाता है) का उपयोग, एजेंट ऑरेंज (जो वनस्पतियों और पेडों को नष्ट कर देता है और लंबे समय तक भूमि को बंजर बना देता है।) और फास्फोरस बमों - ने कई गाँवों को नष्ट किया और जंगलों का विनाश किया। बड़ी संख्या में नागरिक मारे गये ।

चित्र 13. 6 : (अ) खेतों पर रसायन का छिड़काव करती US सेना।(आ) चित्र का वास्तविक अनुशीर्षक: "प्रत्येक के लिए उपयोग।" ड्रम को लुढ़काती लड़की तत्पश्चात धातु का उपयोग छोटे डिब्बे और चम्मचों को बनाने के लिए किया गया।

SCERT TELANGANA

US नीति-निर्माताओं ने वियतनाम में राष्ट्रवाद की शक्ति को बहुत कम आंका। राष्ट्रवाद ने लोगों को क्रियाशील बनाने उन्हें अपने घर और परिवार का बलिदान करने, भयंकर परिस्थितियों में रहना, और स्वतंत्रता के लिए लड़ना आदि के लिए प्रेरित किया। उन्होंने संसार की तकनीकी रूप से अत्यधिक उन्नत देश के साथ छोटे देश की शक्ति को कम आँका। जमींदारों के द्वारा कई पीढ़ियों के शोषण के पश्चात हाल ही में अपनी भूमि प्राप्त करने वाले लाखों गरीब किसानों के प्रतिबद्धता को भी कम आँका। ये किसान राष्ट्रीयवाद से प्रेरित थे और भूमि सुधार से बहुत प्रसन्न थे। इन्होंने शक्तिशाली सेना को हराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

युद्ध के प्रभाव US के भीतर भी दिखाई दिये । कई लोगों ने युध्द में भाग लेने के लिए सरकार की आलोचना की, जिससे बचाव करना कठिन था। जब युवकों को युद्ध के लिए भेजा गया तो गुस्सा बढ़ गया। युद्ध के लंबे समय तक चलने से US के भीतर भी गंभीर प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न हुई। सरकार की नीतियों पर बड़ी मात्रा में उठे प्रश्न चिह्न से युद्ध को समाप्त करने के लिए समझौते के लिए बढ़ायी जाने वाली गति को बल मिला। जनवरी 1974 में पेरिस में शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। इससे US के साथ लड़ाई खत्म हुई लेकिन साइगोन प्रशासन और NLF के बीच लड़ाई चलती रही । 30 अप्रैल 1975 में NLF ने राष्ट्रपति महल पर अधिकार स्थापित कर लिया और अंत में वियतनाम को एकीकृत किया।

- क्या आपके विचार में नागरिक जनसंख्या और जंगलों पर नापाम जैसे रासायनिक हथियार और एजेंट ऑरेंज का उपयोग करना न्यायोचित था?
- वियतनाम जैसे छोटे देश द्वारा शक्तिशाली USA का सामना करना कैसे संभव हो सका ?
- वियतनाम से वापस लौटने के US सरकार के निर्णय लेने में USA में शांति आंदेलन का क्या योगदान था?

नाइजिरिया : उपनिवेशीयों के विरूद्ध एकता का निर्माण

(Nigeria: forming unity against the colonisers)

अब हम अफ्रीका में उपनिवेशीकरण और राष्ट्रीयकरण की ओर मुड़ेंगे और पश्चिती तट पर नाइजिरिया का अध्ययन करेंगे । इस देश को मानचित्र में दर्शाइए। आपने कक्षा VII में उस देश के बारे में क्या पढ़ा है उसका पुनः स्मरण कीजिए।

ब्रिटिश उपनिवेशवाद और राष्ट्र का निर्माण

Map 3 : नाइजिरियोका मान चित्र

संसार के अन्य लोगों की तरह ही राष्ट्र राज्यों का उपाय अफ्रीका के देशों के लिए भी नया था। यह प्रायः जनजाति पहचान है, जो लोगों को करीब लाती है। उपनिवेशवादियों ने कुछ क्षेत्रों को मनमाने ढंग से मिलाकर अपने नियंत्रण में कर लिया। आज हम नाइजिरिया के नाम से जो देश को जानते हैं उसे वास्तव में ब्रिटिशों ने नाइजर नदी के चारों ओर विशिष्ट प्रदेशों में रहने वाले विभिन्न जनजातीय दलों को एक जगह लाकर निर्मित किया था।) उत्तरी नाइजिरिया पर हौसा-फुलानी लोगों का प्रभाव था, जो विशिष्टतया मुसलमान थे।

SCERT TELANGANA

नाइजिरिया का दक्षिण पूर्वी भाग इग्बो (जिसका उच्चारण ईबो-ebbo) जनजाति के अधिकार में था जबकि दक्षिण पश्चिमी भाग योरूबा जनजाति के प्रभाव में था। जबकि दक्षिणी क्षेत्र लंबे वर्षों तक मिशनरी क्रियाकलापों के कारण विशिष्टतया ईसाई था, कई लोग अब भी जनजाति धार्मिक विश्वासों को मानते थे। एक आम प्रजातांत्रिक राजनैतिक व्यवस्था के निर्माण के पूर्व, आधुनिक नाइजीरिया ने इन तीनों क्षेत्रों के बीच बहुत सारे संघर्षों का सामना किया। नाइजीरिया के प्राकृतिक संसाधनों विशेषतः पेट्रोलियम पर यूरोपीय नियंत्रण होने के कारण आज भी यहाँ उपनिवेशवाद दृष्टिगोचर होता है।

नाइजर नदी का क्षेत्र अफ्रीकी देशों के अत्यधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में से एक था, जो विभिन्न प्रकार के उपनिवेशी शासनों से पीड़ित था। 16 वीं.शताब्दी से यह अमेरीका के लिए गुलामों का मुख्य स्रोत था। आंतरिक क्षेत्रों में जनजाति किसानों को पकड़ लिया जाता था और यूरोपीयन गुलामों के व्यापारियों को बेच दिया जाता था। 19 वीं. शताब्दी में गुलाम व्यापार पर प्रतिबंध लगाने के साथ ही, इस क्षेत्र के कृषि उत्पादों, मुख्य रूप से खजूर का तेल (Palm Oil) और कोका (Cocoa) के व्यापार में नयी रूचि का विकास हुआ। 1861 में ब्रिटिशों ने तटीय प्रदेशों पर अपना शासन स्थापित कर लिया और पश्चिमी अफ्रीका में लागोस (Lagos) को एक महत्वपूर्ण प्रशासन, व्यापार और शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित किया। लागोस में भी उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष शुरू हुआ तथा पान आफ्रिकावाद और नाइजेरियन राष्ट्रवाद का यहाँ उदय हुआ।

19 वीं शताब्दी के अंत में और 20 वीं. शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश उपनिवेशी शासन में प्रजातिवाद का पुनरूत्थान हुआ। शिक्षित अफ्रीकियों को नागरिक सेवाओं से बाहर कर दिया गया। यहाँ आफ्रिकी उद्‌यमकर्ताओं के विरुद्‌ध भी भेदभाव किया जाता था। उसी समय उपनिवेशीय अधिकारी जनजाति मुखिया और संभ्रांत लोगों को बढ़ावा देने और उन्हें अपने लोगों पर नियंत्रण स्थापित करने की अनुमति देने में लगे हुए थे।

दक्षिण नाइजीरिया में आधुनिक शिक्षा प्रशासनीकिय आधुनिकरण की सुलभता थी। जबकि उत्तर में वह अब भी पूर्व-आधुनिक परंपराएँ थी। इसी कारण क्षेत्रीय विभिन्नताएँ उत्पन्न हुई और उत्तर एक आधुनिक शिक्षित सामाजिक स्तर के रूप में विकसित नहीं हो सका। 1939 में ब्रिटिशों ने यारूबा (Yoruba) और ईबो (Igbo) क्षेत्रों को भी पश्चिमी और पूर्वी नाइजिरिया में विभाजित कर दिया और तीन मुख्य जनजाति दलों में स्पर्धा और झगड़ों को बढ़ावा दिया ताकि देश में 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपना सके।

इसकी प्रतिक्रिया में पश्चिमी शिक्षित संभ्रातों के एक वर्ग ने सामान्य नाइजिरिया राष्ट्र के उपाय का विकास किया और ब्रिटिश शासन से लड़ाई आरंभ की। हरबर्ट मैकॉले (Herbert Macaulay) ने 1923 में नाइजिरिया राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक पार्टी (Nigerian National Democratic Party)

पान अफ्रीकीवाद

पान अफ्रीकीवाद एक विचार है जो देश या जनजाति के भेदभाव के बिना अफ्रीका के सभी लोगों की एकता को प्रोत्साहित करता है। इस एकता का उपयोग केवल उपनिवेशवाद से लड़ाई के लिए ही नहीं बल्कि, समानता, सामाजिक न्याय और मानवीय प्रतिष्ठा के आधार पर महाद्‌वीप पर निवास करने वाली जनजातियों और समुदायों के बीच एकता का निर्माण करना था। इससे संबंधित एक मुख्य व्यक्ति घाना क्वामे नूक्रूमाह (Ghana Kwame Nkrumah) स्वतंत्रता संग्रामी था।

SCERT TELANGANA

(NNDP) की नींव रखी। यह प्रथम नाइजिरिया राजनैतिक पार्टी थी। 1923, 1928 और 1933 के चुनावों में NNDP ने सभी सीटें जीती। 1930 के समय मैकॉले ने ब्रिटिश उपनिवेशी सरकार पर उग्रवादी हमलों का भी समर्थन किया। नामदी आज़ीकिव (Nnamdi Azikiwe) ने 1936 में नाइजिरिया युवा आंदोलन (The Nigerian youth movement) (NYM) की नींव रखी। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को नजरअंदाज़ करके सभी नाइजिरियों से अपील की और शीघ्र ही शक्तिशाली राजनैतिक आंदोलन के रूप में बदल गया। 1944 में मैकॉले और NYM नेता अजीकीव, नेशनल काउंसिल ऑफ नाइजिरिया एंड द कैमरून (NCNC) के निर्माण के लिए तैयार हो गये। अजीकीव प्रबल राष्ट्रवादी नेता बन गया, उसने पान-अफ्रीकीवाद और एक पान-नाइजिरी पर आधारित राष्ट्रवादी आंदोलन का समर्थन किया।

चित्र 13.7 : नामदी आज़ीकिव

नाइजिरियन राष्ट्रवाद द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् लोकप्रिय हुआ और शक्ति में उन्नत बना। क्योंकि नाइजिरी अर्थव्यवस्था को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। इस आंदोलन का आधार स्तंभ वे सैनिक और व्यापारी संघ के नेता थे जो द्वितीय विश्व युद्ध के ब्रिटिशों के लिए युद्ध करते हुए वापस लौट आये थे। 1945 में मौलिक राष्ट्रवादी व्यापारी संघ के लोगों ने राष्ट्रीय सार्वजनिक हड़ताल का आयोजन किया।

- क्या आपके विचार में पान-आफ्रीकीवाद का विचार राष्ट्रवाद के भिन्न था? चर्चा कीजिए। क्या आप के विचार में राष्ट्रवाद का विचार सीमित था?
- उपनिवेशी शासन से क्षेत्र का असमान विकास हो सकता है। भारत में भी बंगाल, मद्रास और बंबई जैसे तटीय क्षेत्र अधिक विकसित हुए। आपके विचार में ऐसा असमान विकास क्यों हुआ?

नाइजिरियन राष्ट्रवादियों के पास दो कार्य थे। एक तो ब्रिटिशों से लड़ाई और दूसरा विविध और विरोधी सजातीय दलों को जोड़ना था। राष्ट्रीय आंदोलन उत्तर की अपेक्षा दक्षिण में ज्यादा शक्तिशाली था और इससे उत्तर-दक्षिण में विभाजन हुआ। दक्षिण में भी, योरूबा और ईबो (Igbos) के बीच सजातीय लड़ाइयों के द्वारा राष्ट्रवाद का विस्तार हुआ। 1950 तक ये तीन क्षेत्रों के पास, क्षेत्रीय पार्टीयों के नेतृत्व में उनके स्वयं के उपनिवेश विरोधी आंदोलन थे। ये क्षेत्रिय पार्टियाँ थीं, उत्तर में रूढ़िवादी नार्थन पीपुल्स कांग्रेस (Northern People's Congress) (NPC), पूर्व में - द नेशनल काउंसिल फॉर नाइजिरिया एंड द कैमरून्स (The National Council for Nigeria and the Cameroons) (NCNC) और पश्चिम में द एक्शन ग्रुप (Action Group) (AG).

स्वतंत्र और निर्बल प्रजातंत्र (Independence and weak democracy)

राष्ट्रवाद की लहर को ध्यान में रखते हुए, अंग्रेजों ने नाइजिरिया को अधिकार वापस लौटाने का निश्चय किया और एक जटिल संघीय प्रणाली के लिए कार्य किया जिसने इन के तीन मुख्य क्षेत्रों को स्वायत्तता प्रदान की थी। 1अक्तूबर 1963 के दिन नाइजिरिया स्वतंत्र हो गया। दुर्भाग्य से न्यायसंगत और प्रजातांत्रिक संतुलन नहीं बन सका और शीघ्र ही नाइजिरिया

SCERT TELANGANA

गृहयुद्ध और सैन्य शासन में फँस गया जिसने बड़े पैमाने पर उत्तर के प्रभाव को प्रबल बनाया। नागरिक और प्रजातांत्रिक सरकारों को लाभ पहुँचाने के कई प्रयास किये गये लेकिन यह बार-बार असफल हुआ। सैन्य शासन व्यवस्था और बहुराष्ट्रीय तेल कार्पोरेशन, जो भ्रष्ट शासकों को वित्तीय सहायता देते थे ने साथ मिलकर काम किया। उन्होंने नाइजीरिया में भ्रष्टाचार और मानव अधिकारों के दमन को बढ़ावा दिया।

चित्र 13.8 : बाइफेरियन युद्ध

सैन्य तानाशाही के लंबे युग के पश्चात्, नाइजिरियों ने 1999, में प्रजातांत्रिक सरकार का चयन किया। प्रजातांत्रिक नाइजिरिया के निर्माण में इसने चुनौतियों का सामना किस प्रकार किया, इसके अवशेष देखे जा सकते हैं।

तेल, पर्यावरण और राजनीति (Oil, environment and politics)

नाइजर डेल्टा में 1950 में तेल की खोज की गयी और जल्दी ही डच शैल कंपनी के नेतृत्व में विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने तेल निकालने का अधिकार प्राप्त किया। आज यह नाइजिरिया का सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक स्रोत है। अधिकतर तेल के कुँए इन कार्पोरेशनों के अधीन हैं जिन्होंने नाइजिरियन तेल निकाला और इसके लाभ का कुछ अंश सैन्य शासकों के साथ बाँटा। लेकिन सामान्य लोगों को इससे अधिक लाभ नहीं हुआ। इसके साथ ही विदेशी तेल कंपनियों के द्वारा पर्यावरण की परवाह किये बिना लापरवाही से तेल निकालने से तटीय पर्यावरण में विनाश की स्थिति उत्पन्न हुई। तेल के कुँओं से तेल छलकने के कारण पारिस्थितिक(ecosystem) प्रणाली पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। मैनग्रोव (mangrove) वनों के बड़े क्षेत्र जो विशेषरूप से तेल से प्रभावित थे, नष्ट हो गये थे। ऐसा इसीलिए हुआ क्योंकि तेल को मिट्टी में रखा जाता था और वर्ष में पुनः छोड़ दिया जाता था। अंदाजन 5–10% नाइजीरी मैंग्रोव पारिस्थितिक प्रणाली वृक्ष काटने या तेल से समाप्त हो गयी। तेल के छलकने के कारण भूगर्भ का जल और मिट्टी के प्रदूषित होने से फसल और जल संवर्धन दोनों पर प्रभाव पड़ा। पेयजल भी अधिकतर प्रदूषित होता था, और कई स्थानीय जलाशयों में भी चमकता तेल दिखाई दिया। इस प्रदूषित पानी से यदि स्वास्थ्य पर तत्काल प्रभाव न भी पड़ा हो, तो भी लंबे समय में इसके कारण कैंसर की बीमारी भी हो सकती है। समुद्र तट से दूर तेल का छलकना, जो प्रायः अधिक मात्रा में होता था, तटीय क्षेत्र के पर्यावरण को प्रदूषित करता था और इसके कारण स्थानीय मछली उत्पादन में गिरावट आयी।

चित्र 13. 9 : तेल गिरना

चित्र 13.10 : केन सारो विवा

1990 के आरंभ के प्रत्येक चरण में सार्वजनिक अशांति बढ़ती गयी, विशेषकर नाइजर डेल्टा क्षेत्र में, जहाँ विभिन्न पारंपारिक दलों ने वर्षों से पर्यावरणीय क्षति और अपनी भूमि के

SCERT TELANGANA

> • नाइजिरिया के अधिकतर तेल के स्रोत दक्षिण पूर्वी क्षेत्र में है। ईबू चाहते थे कि उन्हें तेल के लाभांश का अधिकतम भाग प्राप्त हो। उन्होंने उत्तर में विकास के लिए तेल की पूँजी के उपयोग का विरोध किया। आपके विचार में इस समस्या का उचित और न्यायसंगत समाधान क्या हो सकता है?

तेल स्रोतों पर नियंत्रण के लिए क्षतिपूर्ति की माँग करनी आरंभ कर दी थी। इस अशांति ने स्वयं को शांतिपूर्ण कार्यकारी संगठनों के रूप में प्रकट किया। जिन्होंने अपने सदस्यों को पारंपारिकता के आधार पर संगठित किया था। 1990 में स्थिति सिर तक पहुँच गयी थी, जब अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरोध के बावजूद सैन्य सरकार के द्वारा एक प्रसिद्ध मानव अधिकार कार्यकर्ता और पर्यावरणकर्ता केन सारो वीवा को फाँसी पर लटका दिया गया था।

इस तरह आपने देखा कि नाइजिरिया अब भी एक राष्ट्र के रूप में संगठित, एक स्थिर प्रजातांत्रिक प्रणाली के रूप में कार्य और अपने सामग्रीय संसाधनों पर नियंत्रण पाने का प्रयत्न कर रहा था।

मुख्य शब्द

भूमि-सूधार	सामंतवाद	नया प्रजातंत्र	मजबूरश्रमिक
रासायनिक हथियार	दुर्बल प्रजातंत्र	पानअफ्रीकीवाद	

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें।

1. जोड़ियाँ बनाइए (AS_1)

o सुन यात-सेन	देश का सैन्यीकरण
o चियाँग कैशेक	पर्यावरणीय आंदोलन
o माओ ज़िडोंग	राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र और समाजवाद
o केन सारो विवा	किसान क्रांति

2. पिछले दशकों में चीन में महिलाओं की भूमिका में आये परिवर्तनों का पता लगाइए? यह USSR और जर्मनी के समान या भिन्न क्यों हैं? (AS_1)
3. राजतंत्र को समाप्त करने के पश्चात, चीन में दो विभिन्न प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ थीं। वे किस प्रकार समान या भिन्न थी? (AS_1)
4. अध्याय में चर्चित देश अधिकतर कृषि पर निर्भर थे? इन व्यवस्थायों में परिवर्तन लाने के लिए इन देशों में क्या कदम उठाये गये? (AS_1)
5. ऊपर चर्चित देशों में उद्योगों के मालिक कौन थे और व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए कौनसी नीतियाँ अपनायी गयीं? उनकी तुलना करने के लिए एक तालिका बनाइए। (AS_1)
6. भारत और नाइजिरिया के राष्ट्रीय आंदोलनों की तुलना कीजिए। क्या आप बता सकते हैं कि यह भारत में प्रबल क्यों था? (AS_1)
7. स्वतंत्र नाइजीरी राष्ट्र को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा? स्वतंत्र भारत ने जिन चुनौतियों का सामना किया, उससे यह किस प्रकार समान या भिन्न थी? (AS_1)
8. वियतनाम और भारत के विपरीत नाइजिरिया को अत्यधिक संघर्ष का सामना नहीं करना पड़ा। क्या आप इसका स्पष्टीकरण कर सकते हैं? (AS_1)
9. ऊपर चर्चित देशों के राष्ट्रीय आंदोलनों में पाठशालाओं ने क्या भूमिका निभायी? (AS_6)
10. इन देशों के स्वतंत्रता संघर्ष में शासकों के साथ युद्ध भी शामिल था। इसके प्रभाव का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।(AS_1)
11. पृष्ठ संख्या 193 में 'नागरिकीकरण मिशन'' में से प्रथम पाँच पंक्तियों का अध्ययन कीजिए। इस विचार से आप किस प्रकार सहमत हैं? क्यों ? (AS_2)

SCERT TELANGANA

अध्याय
14

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन-विभाजन एवं स्वतंत्रता (1939-1947)

(National Movement in India – Partition & Independence : 1939-1947)

इस अध्याय में हम राष्ट्रीय आंदोलन के अंतिम चरण के विषय में पढ़ेंगे व इस बात को समझने का प्रयास करेंगे कि किन स्थितियों ने भारत विभाजन को जन्म दिया जिसके कारण देश की जनता के सामने ऐसे प्रश्न उभरे जिनके समाधान ने वर्षों तक की जटिलता पैदा कर दी।

क्या युद्ध में भारतीय सर्मथन प्राप्त था - 1939-42

आपने द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में पढ़ा है। 1939 में जब युद्ध प्रारंभ हुआ तब अधिकतर प्रांतों में कांग्रेस के मंत्रियों का शासन था। ब्रिटिश सरकार ने स्वशासन के सिद्धांत को स्वीकारते हुए 'द गवर्नमेंट ऑफ इंडिया 'एक्ट' 1935 को ब्रिटिश संसद में पारित किया। इसके अनुसार ब्रिटिशाधिन प्रांतों में चुनाव कराए जायेंगे तथा जीते हुये राजनीतिक दल द्वारा शासन चलाया जायेगा। इसीके अंर्तगत एक सीमित मात्रा में जनता को मत देने का अधिकार दिया गया। 12% प्रांतीय विधान सभाओं की सीटों और 1% केन्द्रीय संसद के लिये। जब 1937 में ब्रिटिशाधिन 11 प्रांतों में चुनाव कराये गये तब कांग्रेस ने उत्तम प्रदर्शन किया तथा 8 प्रांतों में उनके 'प्रधान मंत्री ' बने जो ब्रिटिश गवर्नर के निरीक्षण में कार्य करते थे।

- क्या आपको लगता है कि भारतीयों ने एक्ट 1935 से प्राप्त अधिकारों से खुशी अनुभव की?
- क्या उस समय हिटलर मानवतावाद के लिये एक चुनौती था और भारत को अपने स्वतंत्रता आंदोलन को छोडकर विश्व को स्वतंत्र कराने के विचार को प्रमुखता देनी चाहिए थी?
- आपके अनुसार द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन के समर्थन व विरोध के क्या कारण हो सकते हैं?

एक जटिल प्रश्न कांग्रेस दल के सामने खड़ा हो गया कि क्या वो ब्रिटेन को जर्मनी, जापान, इटली आदि धुरी शक्तियों के विरुद्ध समर्थन दें? ब्रिटेन ने भारत के युद्ध में भाग लेने के विषय में कांग्रेस से पूछा तक नहीं था। युद्ध में भाग लेने व न लेने दोनों विषय में कांग्रेस में अनेक मत थे कांग्रेस इस विषय में असमंजस में थी। कई कांग्रेस नेता हिटलर के विरोधी थे, और मुसोलिनी के फासिस्ट सिद्धांतों से नाराज़, जो सार्वभौम (स्वतंत्र) देशों पर विजय चाहता था। कांग्रेस अंग्रेज़ों के इस रवैये से भी नाराज़ थी कि वह इस बात का आश्वासन नहीं दे रहे थे कि यदि भारत फासिस्टों के विरोध में उनका समर्थन करेगा तो वह भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करेंगे ब्रिटिशों ने इसे समझा पर आसानी से वह अपने प्राप्त अधिकार को खोना भी नहीं चाहते थे। ब्रिटेन में युद्ध के समय विभिन्न राजनीतिक दल थे। युद्ध के समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल सभी पार्टियों

SCERT TELANGANA

हिटलर के नाम पत्र

जर्मन हिटलर

बर्लिन

जर्मनी

प्रिय दोस्त

मेरे मित्र मुझे इस बात का दबाव डाल रहें कि मैं आपको मानवता के हित में पत्र लिखूँ परंतु मैने उन लोगों के अनुरोध को ठुकरा दिया क्योंकि मेरे यह भाव थे कि मेरे द्‌वारा लिखागया पत्र धृष्टता न कहलाये परंतु फिर मुझे लगा कि अधिक विचार न करते हुये मेरे निवेदन को पेश करना ही चाहिए चाहे उसका मूल्य कुछ भी हो।

यह तो एक पूर्णतः सत्य है कि आप दुनिया के एक वह इंसान हैं जो भीषणता से मानवता को कम करने वाले युद्‌ध को रोक सकते हैं। क्रियात्मक रूप में आपको वह मूल्य भी प्राप्त होगा जो आपने किया। क्या आप उस इंसान के अनुरोध को सुन सकते हैं जो युद्‌ध के ऐसे तरीके को जानता है जिसमें विजय के भाव का महत्व कम होता है?

यदि पत्र लिखकर मैंने कोई गलती की है तो मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ।

सदैव आपका

संवेदक मित्र

एम. के. गाँधी

Source: स्त्रोत : महात्मा गाँधी के कार्य संचयन द्‌वारा

UOI . 76 : 31 मे 1939 -15 अक्तूबर 1939

द्‌वारा समर्थित थे जो कंजरविटिव पार्टी के थे। यह पार्टी भारत पर जब तक संभव हो शासन बनाये रखना चाहती थी। इसके विपरित लेबर पार्टी भारतीयों की स्वतंत्रता के समर्थन में थी।

युद्‌ध उपरांत ब्रिटिश भारतीयों को अंतरिम स्वतंत्रता देने के पक्ष में थे, पर कांग्रेस पूर्ण स्वतंत्रता का वचन चाहती थी। इसके साथ ही केन्द्र में तत्कालिक राष्ट्रीय सरकार के निर्माण के पक्ष में थी पर ब्रिटिशों ने यह कह कर विरोध किया कि कांग्रेस भारत के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व नहीं करती विशेषकर मुसलमानों का। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस अनेक भारतीयों की हितों को नज़रअंदाज़ कर रही है और ब्रिटिश सभी समूहों के हितों की रक्षा करना चाहती है।

चित्र 14.1 1937 में रॉयल इंडियन आर्मी इरावती नदी को पार करते हुए

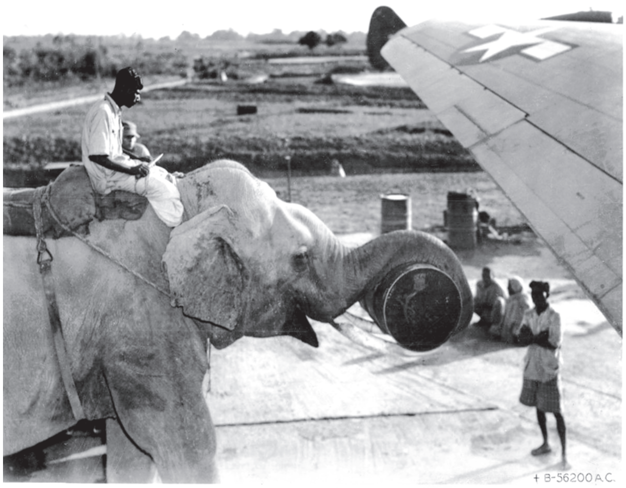

चित्र 14.2 हाथियों द्वारा 6 - 46 विमान में माल भरवाना - द्वितीय विश्व युद्ध के समय

कांग्रेस ब्रिटिशों के इस रवैये से नाराज हुयी और उनके सभी प्रांतीय सरकार के मंत्रियों ने 1939 में त्यागपत्र दे दिये जो 1937 में चुने गये थे।

ब्रिटिश सरकार ने युद्‌ध में जीत हासिल करने के लिए और कानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिए स्वयं को युद्‌ध के समय के विशेष अधिकार दे दिये। यदि कोई ब्रिटिश सरकार का इस समय विरोध करता तो उसे तुरंत लंबे समय के लिये जेल भेज दिया जाता। भाषण की स्वतंत्रता भी छीन ली गयी। 1940 और 1941 में युद्‌ध की समाप्ति पर स्वतंत्रत्रा देने का वादा करने के लिए दबाव डालने हेतु कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रहों का आंदोलन प्रारंभ किया। इस समय कोई बड़ा सामूहिक आंदोलन नहीं हुआ।

- आपके विचार में क्या कांग्रेस ब्रिटिशों के रवैये के विरुद्ध अन्य कदम भी उठा सकती थी?
- ब्रिटिशों ने भारतीयों के सहयोग को प्राप्त करने के लिए वादा क्यों नहीं किया, हालांकि 1939 में बात केवल वादे की ही थी? कक्षा में मिलजुल कर चर्चा कीजिए।
- जब मंत्रियों ने त्यागपत्र दे दिया तो कौन दैनंदिन के सरकारी कार्य संपन्न कर रहा था?
- कल्पना कीजिए कि यदि ऐसे समय में कांग्रेसी नेता ब्रिटिश सरकार का विरोध करते तो क्या होता? क्या यह स्वतंत्रता की लड़ाई को और मज़बूत बना सकता था।

कौन भारत की जनता का प्रतिनिधित्व करता है?

ब्रिटिश भारतीयों से परेशान थे, जो उनके शासन का विरोध कर रहे थे। इसके साथ ही वह उन रास्तों की खोज कर रहे थे जिससे कांग्रेस को कमज़ोर कर सके, जिसका जनता पर काफी प्रभाव था। उन्होंने कांग्रेस के विषय में लोगो में भ्रम फैलाना शुरु कर दिया कि कांग्रेस देश की पूरी जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। यहाँ से और स्पष्टता से अंग्रेजों ने ‘‘फूट डालो और राज करो’’ नीति का अनुसरण शुरू कर दिया।

इसी योजना के तहत अंग्रेजों ने मुस्लिम लीग को महत्व देना और कांग्रेस को नज़र अंदाज करना शुरू किया। यह वही समय था जब मुस्लिम लीग के नेता जैसे मोहम्मद अली जिन्हा आदि जनता में ज्यादा सक्रिय थे।

मुस्लिम लीग

इस पार्टी की स्थापना 1906 में हुयी और 1930 तक यह अधिकतर मुस्लिम हितों का प्रतिनिधित्व करती थी और जनता में इनका समर्थन कम था। इन्होंने माँग की थी कि ब्रिटिश सरकार अलग से ऐसे क्षेत्र बनाये जिन सीटों से मुस्लिम मत को महत्व मिले और वह मुस्लिम हितों की रक्षा करे। उनका मानना था कि हिन्दू बहुसंख्यक होने के कारण वे कौंसिल में मुस्लिम हितों की रक्षा करने में असमर्थ हैं। इसलिए यदि मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र से यदि मुसलमान प्रतिनिधि चुन कर आयेगा तो वह मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा कर सकेगा। कांग्रेस ने भी इसे स्वीकार किया। 1990 में अलग से मुस्लिम विधायक क्षेत्र घोषित किये गये। जब 1937 में प्रांतीय

SCERT TELANGANA

सरकार के चुनाव हुए तब मुस्लिम लीग ने 482 मुस्लिम विधान क्षेत्रों में से 102 क्षेत्रों में विजय पायी। यद्यपि कांग्रेस ने भी अपने प्रतिनिधियों को इन क्षेत्रों से खड़ा किया क्योंकि कांग्रेस स्वयं को एक राष्ट्रीय पार्टी मानती थी न कि हिंदू पार्टी उसने अपने 58 उम्मीदवारी सीटों में से 26 सीटों में विजय पायी।

- चर्चा कीजिए क्यों बहुसंख्यक आधारित चुनाव अल्पसंख्यक हितों की रक्षा में सहायक नहीं होते?
- केवल अलग विधान चुनाव क्षेत्र ही क्या अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा कर सकते हैं? आपके विचार में और ऐसे कौनसे रास्ते हैं जो इस उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं?
  जैसे उदाहरण के लिये क्या एक गैर मुस्लिम कौंसिल मेंबर अपनी मुस्लिम जनता से मिल कर उनकी समस्या और मुद्दे को समझ नहीं सकता है?
  जब इस तरह का तरीके का उपयोग हो तो, वह कब प्रभावी और कब नाकाम हो सकता है?

1937 में मुस्लिम लीग ने केवल 4.4% मुस्लिम मत ही प्राप्त किये। मुस्लिम लीग उस समय संघीय प्रांत मुम्बई और मद्रास में प्रसिद्ध थी तथा 301 प्रांतों जैसे बंगाल नार्थवेस्ट फ्रांटियर पाकिस्तान (NWFP) पंजाब और सिंध में कमज़ोर थी। जहाँ पर अगले दस वर्षो बाद स्थिति बदली और 1946 में जब चुनाव कराये गये तब मुस्लिम सीटों पर अधिक बहुलता से मुस्लिम लीग ने विजय प्राप्त की।

ऐसा क्या हुआ जिससे 1937 से 1947 के बीच में मुस्लिम जनता की सोच में अंतर आया। मुस्लिमलीग में कई ऐसे मुद्दे उठाये और कांग्रेस पर संवेदनहीनता का आरोप लगाया हो। जैसे उदाहरण के लिए कांग्रेस ने केंद्रीय प्रांतो में मुस्लिम लीग के साथ मिलकर सरकार बनाने से इंकार कर दिया जहाँ से मुस्लिम लीग ने बहुत सी सीटें प्राप्त की थी तथा कांग्रेस ने अपने सदस्यों को मुस्लिम लीग की सदस्यता लेने से इंकार किया, जबकि उसके सदस्य हिंदू महासभा की सदस्यता प्राप्त कर सकते थे। परंतु 1938 में इसे भी समाप्त कर दिया गया क्योंकि उनके मुस्लिम सदस्य मौलाना आज़ाद ने इसका विरोध किया था। मुस्लिम लीग ने जनता में यह प्रचारित किया कि कांग्रेस एक हिन्दू पार्टी है जो मुसलमानों के साथ शक्ति का बँटवारा नहीं चाहती है।

हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक RSS

इसी समय हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक संगठन) वैदिक प्रचार में व्यस्त थे। यह संघ सभी हिन्दुओं में जाति और वर्गों से ऊपर एकता चाहता था। इसके साथ ही वह यह संदेश भी देना चाहते थे कि भारत हिन्दू बहुसंख्यक देश है। कई कांग्रेसी संघ के इन कार्यों से प्रभावित थे। कांग्रेस अपने सदस्यों में तटस्थता की भावना चाहती थी। वह मुस्लिम जनता के मध्य अपनी छवि सुधारना चाहती थी। और मुसलमानों की सुरक्षा का वचन देना चाहती थी। वह मुस्लिम लीग हिन्दु महासभा, RSS के अलगाव के प्रचार

SCERT TELANGANA

को रोकना चाहती थी। उसने कहा कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग देशों के नहीं है बल्कि एक ही देश भारत देश के हैं। पर ब्रिटिश मुस्लिम लोगों के धर्म संबंधी डर को बढ़ावा देकर उन्हें मुस्लिम सुरक्षा के रास्ते बताने में ज्यादा आतुर थे।

''पाकिस्तान'' विचार आंदोलन

कई लोगों की अब तक यह सोच बन चुकी थी कि मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए जैसे मशहूर उर्दू शायर मोहम्मद इकबाल जिन्होंने 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा'' लिखा, उन्होंने भी 1930 में मुस्लिम लीग के अपने अध्यक्षीय भाषण में ''उत्तर पश्चिम भारतीय मुसलमान प्रांत'' के बारे में कहा।

पाकिस्तान नाम पाक-स्तान (पंजाब, अफगान, कश्मीर, सिंध और बलुचिस्तान) इस दावे को कैम्ब्रिज के एक पंजाबी मुस्लिम विध्यार्थी चौधरी रहमत अली ने 1933 और 1935 में कर पत्रों पर लिख कर बाँटा। किसीने उस पर ध्यान नहीं दिया और मुस्लिम लीग और मुसलमानों ने इसे एक बच्चे का दिवा स्वप्न माना। जैसे कि पहले भी बताया गया कि कांग्रेस इस बात में असफल रही है कि वह मुसलमानों को मुस्लिम लीग और ब्रिटिशों के फूट डालो और राज करों के प्रभाव से बचा सके।

डॉ. बी.आर अंबेडकर, पाकिस्तान या भारत का विभाजन ''प्रस्तावना''1940

'पाकिस्तान एक ऐसी योजना है जिसपर ध्यान देना आवश्यक हैं। यह बहुत आगे का प्रश्न है। मुसलमान भी इसके लिए ज़ोर दे रहे थे। अंग्रेज़ उग्र हिंदू बहुसंख्यकों के सामने अपनी शक्ति का उपयोग नहीं करना चाहते थे, इसीलिए उन्हें इस मुद्दे को अपने स्वार्थ के लिए अल्पसंख्यकों पर छोड़ दिया।

इस तरह राजनीतिक बदलाव आया और 23 मार्च 1940 को लोगों ने भारत उपमहाद्वीप के भीतर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में मुस्लिम स्वायत्तता की माँग की। यहाँ पर कहीं भी पाकिस्तान के विभाजन का जिक्र नहीं था। पर बीतते वर्षों में यही पाकिस्तान आंदोलन कहलाया। यहाँ पर यह समझ लेना चाहिए कि कई लोगों ने इस समस्या के सामाधान का प्रयास किया। कई चर्चाओं, परिचर्चाओं ने अलग राष्ट्र पाकिस्तान की माँग को एक आधार दे दिया तथा कांग्रेस भी अब मोहम्मद अली जिन्हा और मुस्लिम लीग के नेताओं को समझाने में कठिनाई महसूस कर रही थी।

1940 से 1946 के मध्य तक लीग मुसलमानों को यह विश्वास दिलाने में सफल रही कि उनके हितों के लिए अलग देश आवश्यक है। किसान भी हिन्दू जमींदारों, साहुकारों के शोषण से बच जायेंगे। और व्यापारियों और नौकरियों में उनको हिन्दू व्यापारियों और बेरोज़गारों का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह मुसलमानों के लिये बहुत ही उत्तम रास्ता होगा। वह जैसा शासन

SCERT TELANGANA

- लोगों ने मुस्लिम लीग के राजनीतिक लाभ को कैसे समझा? क्या उन्हें कोई संशय थे? और किस तरह के प्रश्न उनके पास थे चर्चा कीजिए।

चाहे वैसे शासन को पा सकते हैं। 1942 और 1945 के मध्य कई कांग्रेसी नेता जेल में थे जिसका लीग ने फायदा उठाया और जनता में लोकप्रिय बने।

किसने ''ब्रिटिशों भारत छोडो'' की माँग की

1941 तक जापान दक्षिण पूर्वी एशिया में विस्तार कर रहा था। यह भारत के लिए भी चुनौती थी। ब्रिटेन जापान के विरुद्ध भारत का साथ चाहता था। 1942 के मध्य ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने अपने मंत्रियों को सर स्ट्रोर्फोड क्रिप्स के साथ भारत भेजा ताकि वो गाँधीजी और कांग्रेसियों से बात करें। वार्ता विफल रही क्योंकि कांग्रेस चाहती थी कि प्रबंध समिति में एक भारतीय भी हो।

क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के विरुद्ध एक बड़ा आंदोलन छेड़ना चाहा। यही आंदोलन 'भारत छोडो' आंदोलन कहलाया जो अगस्त 1942 में शुरू हुआ। गाँधीजी को फिर एक बार जेल हुई। युवा कार्यकर्त्ताओं ने सारे भारत भर में हडताल की और कालेज छोड़ जेल भरो आंदोलन में भाग लिया। कई समाजवादी विचारधारा के कांग्रेसियों जैसे जयप्रकाश नारायण ने कई आंदोलन किये। पश्चिम में सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर में स्वतंत्र सरकार की रचना भी की गयी। ब्रिटिशों ने इसे दबाने के लिये काफ़ी ज़ोर लगाया। इस आंदोलन के बंद होने में एक वर्ष से भी अधिक समय लगा।

भारत की साम्यवादी पार्टी ने ब्रिटिशों की मदद करने का फैसला लिया क्योंकि वह सोवियत रूस के विरुद्ध नाजी युद्ध को विश्व स्तर पर एक खतरा मान रहे थे और इसे जनता की लड़ाई मान रहे थे। गाँधीजी भी यह समझ रहे थे कि अंग्रेज़ों के भारत छोड़ने के बाद भारतीय जापान को अपने तरीके से मना सकते है।

जापान द्वारा अमेरिका और यूरोपीय देशों पर जीत का भारतीयों पर बडा असर पडा।

1) भारतीयों को लगा कि यूरोपीय उपनिवेशों को जल्द से हराया जा सकता है
2) जापान एक एशियाई देश है जो यूरोपीय उपनिवेशों के विरुद्ध खड़ा हुआ।
3) भारतीयों ने भी यह महसूस किया कि वह भी ब्रिटिशों के विरुद्ध लड़ सकते हैं।
4) ब्रिटिशों द्वारा बनायी गयी जातीय प्रभुसत्ता भंग हो गयी।

सुभाष चन्द्र बोस ब्रिटिशों की विकट परिस्थितियों से लाभ उठाना चाहते थे और वह भारत की स्वतंत्रता को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे जिसके लिए वो जापान की मदद लेने को भी तैयार थे वह गुप्त रूप से पहले जर्मन गये फिर जापान और वहाँ पर 1942 में भारतीय सेना का गठन किया।

प्रश्न यह उठता है कि यह सैनिक कौन थे? यह वह सैनिक थे जो पहले ब्रिटिश सेना में थे और जिन्हें जापान ने बंदी बना लिया था जब ब्रिटिश बर्मा और मलाया में हारे थे। वे सभी युद्ध बंदी थे (POW-Prisoners of War) बोस ने उन्हें अपनी सेना में भर्ती कर लिया जिसे उन्होंने ''आज़ाद हिन्द फौज'' या ''भारतीय राष्ट्रीय सेना'' (INA) नाम दिया बाद में अन्य भारतीय भी इसमें शामिल हुए जिसमे महिलाएँ भी थी। गाँधीजी, बोस की योजना से सहमत नहीं थे उन्हें नहीं लगता था कि जापान भारत को स्वतंत्र बनायेगा पर बोस अपने पथ पर चलते रहे और उनकी सेना ने जापान की रायल सेना का साथ दिया जो ब्रिटिशों के विरुद्ध युद्ध कर रही थी। युद्ध लगभग तीन वर्षों तक चला।

चित्र 14.3 सुभाषचन्द्र बोस

- क्यों जापानियों ने बोस को अनुमति दी कि वह बंदी सैनिकों को सेना में भर्ती कर ले?
- क्यों भारतीय सैनिक INA में शामिल हुये?
- भारतीय सैनिक युद्ध हारने और ब्रिटिशों के हाथ लगने से भयभीत क्यों नहीं हुये? ब्रिटिश उनके साथ क्या बर्ताव करते?

यह बड़ा ही विकट मुश्किल भरा समय था। कभी लगता था कि मित्र शक्तियाँ हारेगी। तभी रूस ने नाजी सेनाओं को स्टेलीनगार्ड में बुरी तरह परास्त किया तथा मित्र शक्तियों ने द्वितीय विश्व युद्ध जीत लिया। सुभाष चन्द्र बोस की INA इंडियन नेश्नल आर्मी ब्रिटिश सेना से हार गयी। तभी से यह प्रश्न बरकरार है कि सुभाष चन्द्र बोस गायब हो गये या मृत्यु को प्राप्त हो गये।

जून 1944 में जब विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी को जेल से रिहा कर दिया तथा भारतीय स्वतंत्रता के विषय में अगले दौर की वार्ता का फैसला लिया।

- 1942-45 की अवधि पर पुर्नविचार कीजिए कि क्यों भारतीय जन आंदोलन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खड़ा हुआ?

1946-48 लोकप्रिय लहर

राष्ट्रीय भारतीय सेना के सैनिक ब्रिटिशों द्वारा बंदी बना लिये गये तथा ब्रिटिश उन्हें सजा देना चाहते थे। सैनिक कानूनी कारवाई में कोर्ट मार्शल शुरू किया गया तथा उन्हें देशद्रोही मानकर फांसी की सज़ा निश्चित की गयी। जैसे INA का मामला आगे बढ़ा, असुरक्षा, असुविधा, नाखुशी का माहौल सारे भारत भर में फैल गया। राष्ट्रवादी चेतना की इस प्रसिद्ध लहर में हिंदू-मुसलमान पहचान और अलग राजनीति का कोई महत्व नहीं रहा। उदाहरण के लिए INA के

SCERT TELANGANA

फौजी मुस्लिम सम्प्रदाय के थे पर फौजियों के प्रति ब्रिटिश रवैये के खिलाफ आक्रोश व सांत्वना की लहर ने फ़ौजियों के धर्म के विषय में नहीं सोचा।

अगर हम भी युद्ध उपरांत की स्थितियों में होते तो शायद हम भी देश की परिस्थितियों को समझ पाते। लोग निसहाय से अनाज की कमी, अनाज के ऊँचे दामों, काला बाजारी से परेशान थे। मज़दूर अपनी कम मजदूरी से तंग थे और रेल्वे, पोस्ट ऑफिस तथा अन्य विभागों के सरकारी कर्मचारी मूल्यों के विरुद्ध राष्ट्र व्यापी हड़ताल पर जाना चाह रहे थे।

- कल्पना करो कि स्थितियों के दुःखदायी रुप से लोगों के जीवन पर कैसा असर पड़ा?
- किस तरह के भय को अन्य भारतीयों ने महसूस किया जब INA के सैनिकों को ब्रिटिशों ने देशद्रोही मानकर फांसी पर लटकाना चाहा जिन सैनिकों को वे अपना हीरो मानते थे?

18 फरवरी 1946 को रॉयल इंडियन नेवी बम्बई बंदरगाह के गार्डस ने खराब भोजन और ब्रिटिश अफसरों के गलत बर्ताव के खिलाफ भूख हड़ताल प्रारंभ कर दी। इस अनशन का प्रभाव न केवल मुम्बई अपितु सारे भारतीय बंदरगाहों तक फैला। विद्रोही गार्डस ने जहाज के ऊपर तिरंगा, हँसिया (Sickle) और हथौड़े (hammer) भाले के चिह्न वाला झण्डा लगा दिया। इस विद्रोही केंद्रीय हडताल समिति के अध्यक्ष थे एम.एस. खान। इनकी माँग थी अच्छा भोजन, श्वेत और काले सैनिकों को समान आय तथा INA के बंदियों की रिहाई व अन्य राजनीतिक कैदियों की भी रिहाई तथा भारतीय सैनिकों की इंडोनेशिया से वापसी।

चित्र 14.4 थल सेना के गार्डस का स्मारक जिन्होनें भारत की स्वतंत्रता के लिये 1946 में विद्रोह किया।

78 जहाजों, 20 बंदरगाह संस्थानों 20,000 गार्डस ने इस हड़ताल में भाग लिया। कई सौ विद्यार्थी हिन्दू और मुस्लिम दोनों, बम्बई के सडकों पर सर्मथन के लिये, निकल पड़े तथा सेना और पुलिस का सामना किया। 22 फरवरी को बम्बई के तीन लाख मिल मज़दूरों ने काम करना बंद कर दिया और दो दिन तक पुलिस और सेना से हिंसक रूप में जूझते रहे।

वर्ष 1946 का वर्ष हड़तालों, काम बंद करो का वर्ष था। देश भर के कारखानें व मिलें इससे जुड़ी थी। CPI और समाजवादी दल इन दिनों सक्रिय थे। सारा देश उस समय उबल रहा था।

बंगाल के गरीब कृषकों ने अपने जमींदारों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया। वे जिन जमीनों पर खेती कर रहे थे उसमें आधे हिस्से या उससे कम के स्थान पर वह अपने दो तिहाई भाग की मॉग कर रहे थे जिसे स्वीकारा गया। यह आंदोलन तेभाग (Tebhag) आंदोलन कहलाया जिसका संचालन प्रांतीय किसान सभा कर रही थी।

हैदराबाद में भी कम्युनिस्ट पार्टी ने तेलंगाना के किसानों के लिये भारी आंदोलन छेड दिया। तेलंगाना के कृषक अपने जमींदारो से अपनी उधार वाली भूमि, बेगार मज़दूरी को दूर कराकर उस जमीन को पाना चाहते थे जिसके नाम वह जमीन थी। किसानों ने अपने शासकों व सेना के विरुद्ध हथियार उठा लिये। लगभग 3000 किसानों ने इसमें भाग लिया। दूसरा एक ओर हथियार बंद किसान आंदोलन त्रावनकोर के पुन्नप्रा-वायालर (Vayalar) में प्रारंभ हुआ।

- विचार कीजिए कि उस समय की आम जनता की माँगे क्या थी?
- इन आंदोलनों में यह पाया कि धर्म, वर्ग भेद बीच में नहीं लाया गया। इन आंदोलनों में इनकी एकता के क्या कारण थे?

मुस्लिम लीग और कांग्रेस - शासन हस्तांतरण विषयक बातचीत

1945 में जब शीर्ष नेताओं द्वारा पुनः ब्रिटिशों से बातचीत प्रारंभ हुयी तो, ब्रिटिश पूर्ण भारतीय केन्द्रीय मंत्री परिषद् को स्वीकार कर चुके थे। सिर्फ वायसराय और सेना अध्यक्ष के विषय को छोड़कर यह पूर्ण स्वतंत्रता देने के पूर्व के कदम थे। वार्ता का यह दौर मुस्लिम लीग जिन्ना के इस प्रस्ताव से टूट गया कि केन्द्रीय परिषद के सभी मुस्लिम सदस्यों का चुनाव वह करेगी। इस माँग को सभी ने नहीं स्वीकारा। कांग्रेस के कई राष्ट्रवादी मुस्लिम नेताओं ने इसे नहीं स्वीकारा। मौलाना आज़ाद जो उस समय कांग्रेस अध्यक्ष थे उन्होने भी मुस्लिम लीग प्रस्ताव विरोधी प्रतिनिधित्व दल का नेतृत्व किया।

1946 में प्रांतीय सरकारों का चुनाव हुआ। मुस्लिम लीग ने सभी आरक्षित केन्द्रीय 30 सीटों को जीत लिया और 509 प्रांतीय आरक्षित सीटों में 442 सीटों पर विजयी हुई। इस तरह 1946 में मुस्लिम लीग ने स्वयं को मुसलमान मतदाताओं की प्रभावशाली पार्टी के रूप स्थापित किया और भारतीय मुसलमानों की एकमात्र आवाज के रूप में भारत में सिद्‌ध हुयी। 86% मुस्लिम मतों को उसने प्राप्त किया था। 1946 में कांग्रेस 91% गैर मुस्लिम मतों द्‌वारा केंद्रीय चुनाव में विजयी हुयी।

- मुस्लिम लीग की क्या माँगे थी और कांग्रेस ने इसे क्यों नहीं माना। क्या कांग्रेस के इन कारणों से आप सहमत हैं?
- आपके अनुसार 1946 के चुनाव परिणाम जनता की किस सोच को दर्शाते थे?

विभाजन के अतिरिक्त अन्य विकल्प

मार्च 1946 को ब्रिटिश संसद ने एक तीन सदस्यी समिति दिल्ली भेजी, जो लीग की मांगों का निरीक्षण करे और स्वतंत्र भारत की एक स्वीकृत परिकल्पना दे सके। समिति ने भारत का दौरा किया और तीन महीनों के उपरांत एक त्रिपक्षी प्रस्ताव रखा। जिससे भारत अखंड रह सके। प्रारंभ में सभी ने इसे स्वीकार किया पर यह स्वीकृति अधिक समय तक न रही, क्योंकि यह प्रस्ताव आपसी सहयोग व विरोधात्मक सुझावों पर आधारित थे इसलिये मुस्लिम लीग और कांग्रेस दोनों ने इस समीति के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

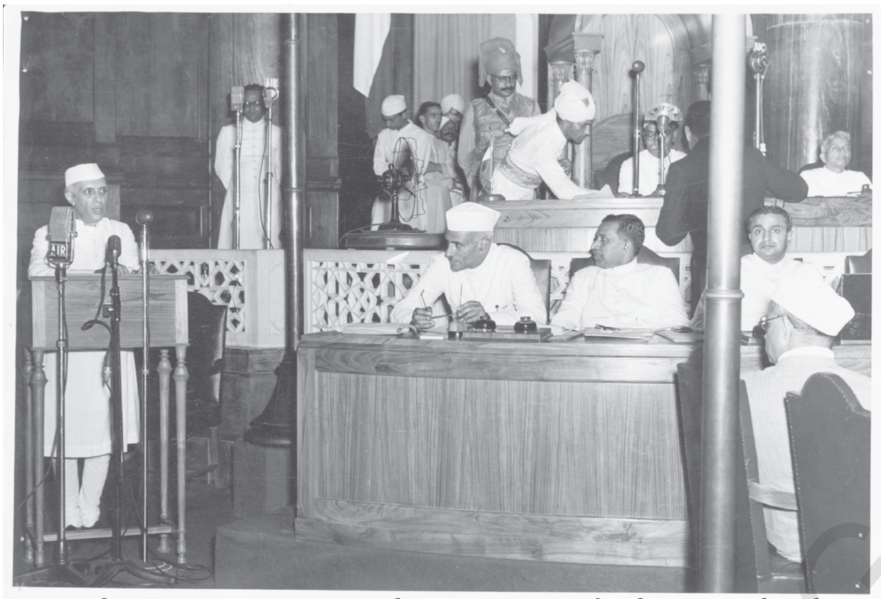

चित्र 14.5 जवाहर लाल नेहरु स्वतंत्रता की घोषणा करते हुये।

मुस्लिम लीग को यह लगने लगा था कि बातचीत से उनकी माँगे पूरी न हो सकेगी उसने जनता को सडकों पर आने की अपील की। इसने अपनी पाकिस्तान की माँग जीतने के लिए 'प्रत्यक्ष कार्य' करने का निश्चय किया तथा 16 अगस्त 1946 को पाकिस्तान की माँग को लेकर ''सीधे कारवाई दिवस'' के रूप में स्वीकार गया। कलकत्ता में इस दिन दंगें फूट पड़े। कई हजार व्यक्ति मारे गये। मार्च 1947 तक यह दंगे सारे उत्तर भारत में फूट पड़े।

मार्च 1947 के हिंसक दंगो के दबाव से कांग्रेस उच्च कमान ने पंजाब को दो भागों में विभक्त करने का फैसला लिया एक मुस्लिम बाहुल्य भाग पाकिस्तान तथा दूसरा हिन्दू/सिक्ख बाहुल्य क्षेत्र। भारत में कांग्रेस, बंगाल में भी इसी प्रकार के सिद्धांत लागू करने के लिए राजी हो गयी।

फरवरी 1947 में लार्ड माऊँटबैटन के स्थान पर वेवल को भारत का वायसराय बनाया गया। माऊँटबैटन ने आखिरी वार्ता के दौर के बाद यह निष्कर्ष दिया कि ब्रिटेन भारत को स्वतंत्रता प्रदान करेगा पर इसे विभाजित कर मुस्लिम अधिकता वाले क्षेत्रों जैसे पंजाब, उत्तर पश्चिमी फ्रंटियर पंजाब, सिंध, बलुचिस्तान और पुर्वी बंगाल के क्षेत्र नये देश पाकिस्तान के भाग होगे। औपचारिक सत्ता हस्तांतरण ब्रिटेन सरकार द्वारा पाकिस्तान को 14 अगस्त को किया गया, तथा 15 अगस्त 1947 को भारत को सत्ता सौंपी गयी। यह वह समाधान था, जिसने वर्ष भर के दंगों, हिंसक आंदोलनों आदि से प्रभावित जनता को बचाया।

विभाजन और स्थानांतरण

पाकिस्तान मुस्लिम देश के बन जाने से कई दु:खद अकल्पनीय स्थितियाँ लोग के बीच बन गयी। कई हिन्दू जो नयी बनी सीमा के इस ओर थे वे स्वयं को असुरक्षित समझ रहे थे और दबावपूर्वक वहाँ से भेजे जा रहे थे। इसी तरह कई मुसलमान जो सीमा के इस ओर थे, वो सीमा के उस पार जा रहे थे। सभी यह नहीं चाहते थे, कई लोगों, को इस बारे में पता भी नहीं था कि यह क्यों हो रहा है? क्यों उन्हें अपने घर, गाँव, शहर से भेजा जा रहा है? उनका गुस्सा भड़क रहा था। करीब 1.5 करोड़ लोग हिन्दू और मुसलमानों दोनो एक स्थान से दूसरे स्थान

SCERT TELANGANA

VOLKART SIMPLEX

The Statesman

(With which the FRIEND OF INDIA is Incorporated.)
PUBLISHED SIMULTANEOUSLY FROM CALCUTTA AND DELHI.

QUALITY There is TRUTH in our Quality. MODERN FURNISHERS

Vol. CXIII. No. 23112 REG. No. C193 CALCUTTA, FRIDAY, AUGUST 15, 1947. TWO ANNAS.

TWO DOMINIONS ARE BORN

Political Freedom For One-Fifth Of Human Race

POWER ASSUMED BY INDIANS

Constituent Assembly Members Take The Oath

WORK FOR COMMON PROSPERITY

From Our Special Representative

NEW DELHI, Aug 15.—Two new Dominions, India and Pakistan, were born at zero hour today, ushering in political freedom to 400 million people, constituting one-fifth of the human race.

AT a special session of the Indian Constituent Assembly, the House assumed full powers for the administration of the Indian Dominion.

The Constituent Assembly tonight passed Pandit Nehru's resolution prescribing the Oath. All the members took the Oath and then Dr Rajendra Prasad and Pandit Nehru left for Government House to request

[See Editorial Comment—Page 6.]

Lord Mountbatten to accept the post of Governor-General.

Pandit Nehru's resolution, which was seconded by Chaudhuri Khaliq-uz-Zaman, Leader of the Muslim League Party, expressed the hope that

(Continued on page 8, col. 3)

NO DISTURBANCE IN CALCUTTA

No incidents of a communal nature occurred in Calcutta and Howrah yesterday.

AUGUST 15, 1947.

A special Independence Day supplement is published with this issue of The Statesman.

An exclusive article by a special correspondent on the negotiations which led to India's freedom appears on Page 6.

H.E. Sir Frederick Burrows talking to Mr S C Roy Chowdhury, Mayor of Calcutta, at Dum Dum while waiting for the arrival of Mr C Rajagopalachari. Dr P C Ghosh is chatting to Maj.-Gen Ranking.—Statesman.

Close Friendship with Britain

Nehru's Reply to Mr. Attlee

NEW DELHI, Aug 15.—"My colleagues in the U.K. Government join with me in sending, on this historic day, greetings and good wishes to the Government and people of India, says a message from Mr Attlee to Pandit Nehru. He adds:

"It is our earnest wish that India may go forward in tranquillity and prosperity and, in so doing, contribute to the peace and prosperity of the world."

Pandit Nehru replied: "On behalf of my colleagues in the Government of India and myself I wish to express our grateful thanks for your message of greeting on this historic day when India emerges into freedom. That freedom means much to us, but it also means much to Asia and the world. We hope to utilize that freedom for the advancement of our own people as well as for the furtherance of the peace and prosperity of the world. In these great tasks we shall look forward to the closest co-operation with your Government."—API

VISCOUNT MOUNTBATTEN AWARDED EARLDOM

LONDON, Aug 14.—Viscount Mountbatten, Governor-General-designate of India, was today awarded an Earldom.—Reuter

Joyful Scenes In Calcutta

Celebrations By Hindus And Muslims

By a Staff Reporter

REMARKABLE signs of a return to communal amity after a year of bloodshed were seen in Calcutta last night and early this morning. Almost unbelievable scenes of fraternity and rejoicing were witnessed in some of the hitherto worst-affected areas of Central and North Calcutta, particularly along Chittaranjan Avenue, Lower Chitpur Road, Zakaria Street, Harrison Road, Bowbazar Street and Dhurrumtollah Street.

The city, till an early hour this morning, resounded to cries of "Hindu Muslim Ek Ho," "Jai Hind," "Bande Mataram," and "Inquilab Zindabad." The shouts emanated from lorry, bus and taxi loads of Hindus and Muslims, who drove through the streets shouting slogans, to which large friendly crowds of both communities thronging the streets readily and joyfully responded.

The first signs of a return of brotherly feeling between the two communities came with the city's preparations

(Continued on page 8 col 5).

Mr Rajagopalachari entering the Throne Room in procession for the office assumption ceremony.—Statesman.

Gandhi & Suhrawardy to Fast and Pray Today

Meeting Listens to Mahatma Without Interruption

By a Staff Reporter

MR Gandhi will celebrate Independence Day today, by observing a 24-hour fast and spinning and holding special prayer. At his prayer meeting last evening he invited the people to observe the day in a similar manner.

Mr H S Suhrawardy and Mr S M Osman, ex-Mayor and Secretary, Calcutta District Muslim League, will fast with Mr Gandhi.

Mr Gandhi and Mr Suhrawardy spent the second day of their joint peace mission in Belliaghatta, Calcutta, yesterday.

In contrast to the hostile demonstrations of Wednesday, their residence became a place of pilgrimage for thousands of people yesterday: a large number of them were women. Both Hindus and Muslims came in a constant stream from different disturbed localities of the city and placed their grievances before Mr

[See Editorial Comment—Page 6.]

Gandhi and sought his advice. At his prayer meeting a vast audience listened to him without interruption.

Later, Mr Suhrawardy also addressed a gathering.

Yesterday morning Mr Gandhi went round the neighbourhood of his residence and saw for himself some of the devastations caused by riots.

Mr S M Taufiq on behalf of the Calcutta District Muslim League and

(Continued on page 7 Col. 5)

CALCUTTA WEATHER

Rainfall for the 24-hour period ending 5 pm IST yesterday 0.44".

Maximum temperature in Calcutta yesterday was 92° and minimum 79°.

Maximum humidity was 92% and minimum 74%.

(Weather Readings: P 2.)

Sir Frederick Burrows, retiring Governor of Bengal, and Mr Rajagopalachari, Governor of West Bengal, photographed at Government House yesterday.—Statesman.

First Governor of W. Bengal

C. R. Sworn In This Morning

By a Staff Reporter

WITH the birth of the Indian Dominion His Excellency Mr C. Rajagopalachari assumed charge of the office of Governor of West Bengal at one o'clock (BT) this morning. Immediately afterwards Dr P. C. Ghosh, Chief Minister, West Bengal, and the members of his Cabinet were sworn in.

The ceremony took place in the Throne Room of Government House, Calcutta, in the presence of high-ranking civil and military officials and some distinguished citizens, the whole proceedings occupying a little over half an hour.

Mr Rajagopalachari's daughter also attended.

In order that the Calcutta ceremony should synchronize with the assumption ceremonies elsewhere in the Indian Dominion, the swearing-in was

(Continued on page 5 column 1.)

TWO HOLIDAYS

Members of The Statesman Staff will participate in the two public holidays on August 15 and 16 officially announced to celebrate the birth of the two new Dominions. There will, therefore, be no issues of the paper on August 16 and 17.

Mr Rajagopalachari taking the Oath of Allegiance before Mr Justice Mitter.—Statesman.

First Cabinet of India Begins to Function

Pandit Nehru Heads Dominion Ministry of Fourteen

NEW DELHI, Aug 14.—The first Cabinet of the Indian Dominion which will function from Aug 15, announced tonight, will be headed by Pandit Nehru. The Cabinet consists of the following Ministers: Pandit Nehru, Prime Minister, External and Commonwealth Relations, Scientific Research.

Sardar Patel: Home, Information and Broadcasting, States.

Dr Rajendra Prasad: Food and Agriculture.

Maulana Azad: Education.

Dr Matthai: Railways and Transport.

Sardar Baldev Singh: Defence.

Mr Jagjivan Ram: Labour.

Mr C H Bhabha: Commerce.

Mr Rafi Ahmed Kidwai: Communications.

Rajkumari Amrit Kaur: Health.

Dr Ambedkar: Law.

Mr Shanmukham Chetty: Finance.

Dr Shyama Prasad Mookerjee: Industries and Supplies.

Mr N. V. Gadgil: Works, Mines and Power.—API

INTERNATIONAL RIGHTS OF INDIAN DOMINION

NEW DELHI, Aug 14.—The Dominion of India will be solely entitled to all the international rights to which India was entitled. Moreover, the Dominion of India will continue to be a member of international organizations of which India was a member, and the Dominion of Pakistan will take such steps as may be necessary to apply for membership of international organizations.

This is the substance of the Indian Independence Order, International Arrangements, issued by the Viceroy today. The order is to have the force of an agreement between the two Dominions of India and Pakistan.—API

[See Editorial Comment—Page 6.]

Ω It's an OMEGA
Ch. ABRECHT
D-5, CLIVE BUILDINGS
CALCUTTA

चित्र 14.6 : भारतीय स्वतंत्रता पर समाचार पत्र की रिपोर्ट। आप इनमें से किन विभिन्न वस्तुओं को पहचान सकते हैं? चर्चा कीजिए।

भेजे गये। वे मारे गये, लूटे गये, जलाये गये। कम से कम दो से पाँच लाख हिन्दू और मुसलमान मारे गये। कुछ शरणार्थी बन गये और शरणार्थी कैंपों में रहने लगे। रेलों द्‍वारा वे नये घरों की खोज में इधर से उधर घूमने लगे। गाँधीजी दंगें प्रभावित लोगों के कैंपों, अस्पतालों व स्थलों पर जाकर बंधुत्व का संदेश देते और कहते यह वह स्वराज व स्वतंत्रता नहीं है जिसके लिये उन्होंने कठिन श्रम किया। राष्ट्रपिता गाँधीजी ने अनशन किया और प्रथम स्वतंत्रता दिवस नहीं मनाया।

गाँधीजी और नेहरू जी के प्रयासों से कांग्रेस ने ''अल्पसंख्यकों के अधिकार'' के प्रस्ताव को पारित किया। कांग्रेस कभी भी 'दो देशों के सिद्‍धांत' से सहमत नहीं थी। दबाव में उसने विभाजन को स्वीकारा। वह अब भी यह मानते है कि '' भारत एक ऐसी भूमि है जहाँ

चित्र 14.7 LIFE मैगजीन में प्रकाशित विभाजन के समय के चित्र मार्गरेट बोर्क-वाइट (Margaret Bourke-white) *के द्‍वारा खींचे गये।*

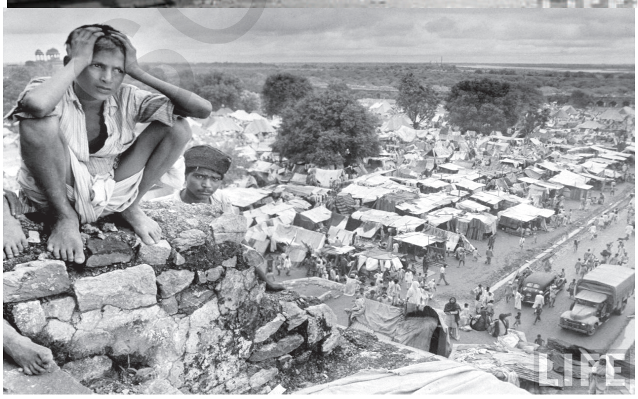

SCERT TELANGANA

पर कई धर्मों, जातियों और वर्गों का समूह है और ऐसा ही रहेगा।'' पाकिस्तान में स्थिति कैसी भी हो भारत एक ''प्रजातांत्रिक धर्म निर्पेक्ष देश'' बना रहेगा। जहाँ पर सभी नागरिक अपने अधिकारों का समानता से प्रयोग कर सकते हैं और सरकार उन्हें सुरक्षा प्रदान करेगी चाहे वह किसी भी धर्म संबंधी नागरिक हो।

गाँधी जी की हत्या

राष्ट्रपिता गाँधीजी 15 अगस्त, 1947 के दिन नोखाली (बंगाल) में दंगो से प्रभावित लोगों में शांति लाने का प्रयत्न कर रहे थे। वे 9 सितम्बर 1947 को दिल्ली वापस लौटे। गाँधीजी उत्तर पश्चिम भारत के भारी दंगों से नाखुश थे और लोगों में फैले भय को दूर कर शांति लाना चाहते थे। पर कुछ उग्र हिन्दू वर्ग गाँधीजी की राजनीतिक भूमिका से नाराज थे। और कई बार, उन्होंने सर्व धर्म प्रार्थना सभाओं को बाधा भी पहुँचायी। उनकी हत्या के दो दिन पहले भी उनके प्राण लेने का प्रयास किया गया। 28 जनवरी 1948 को गाँधीजी ने कहा कि यदि मुझे किसी विक्षिप्त (पागल) आदमी की गोली से मरना पड़े तो मैं हँस कर इसे स्वीकार करूँगा। मेरे दिल में कोई क्रोध नहीं है भगवान मेरे हृदय और होठों में रहेंगे।

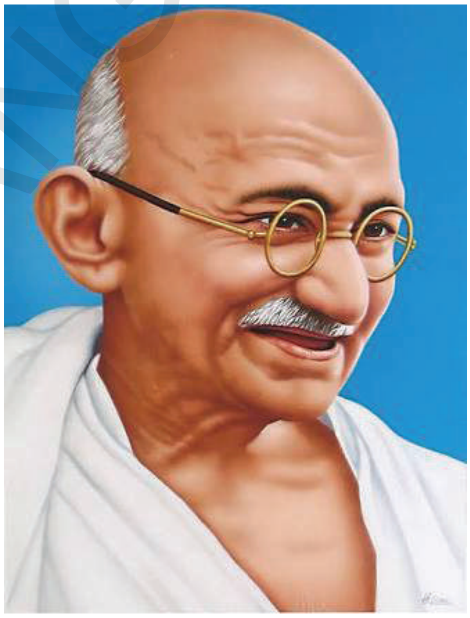
चित्र 14.9 महात्मा गाँधीजी

अंत में स्वतंत्रता के छः महीनों के भीतर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को 30 जनवरी 1948 की शाम, उनके सर्व धर्म प्रार्थना स्थल की ओर जाते समय तीन गोलियाँ मारी गया ने मरने के पूर्व गाँधीजी ने ''हे राम'' कहा। नथुराम गोडसे जिसने गाँधीजी को मारा था घटना स्थल से भाग गया और बम्बई में बंदी बनाया गया। वह हिन्दू महासभा का उग्र सदस्य था। उसके इस कार्य से हिन्दू महासभा को विरोध का सामना करना पडा और 14 फरवरी 1948 को हिन्दूमहासभा ने अपने राजनीतिक कार्य छोड़ दिये और केवल संगठन के कार्य में लग गए। भ्रमित गोडसे ने इस तरह अपने संघीय कार्य व दिशा को बाधा पहुँचायी।

राज्यों का विलय

जब ब्रिटेन सरकार ने स्वतंत्रता घोषित की उस समय लगभग 550 राजशाही सरकारें थी जिन्होंने संप्रभुता के विभिन्न स्तरों का लाभ उठाया था। लेकिन वे ब्रिटेन की सत्ता के प्रभाव में थी। स्वतंत्रता घोषणा के बाद उन्हें छूट थी, कि वह भारत में मिले या पाकिस्तान में शामिल हो या वे स्वतंत्र रहे। इन राजाओं की आम जनता प्रजा मंडल आंदोलन द्‌वारा प्रजातंत्र के अधिकारों को समझ चुकी थी और वह राजशाही शासन के विरोध में थी। त्रावनकोर और हैदराबाद के कृषक अपने जमीनदारों के खिलाफ हथियार उठा चुके थे।

कांग्रेस ने राजाशासित राज्यों की आम जनता के आंदोलन का समर्थन किया और उन्हें भारत के नये संविधान में शामिल होने का न्यौता दिया। सरदार पटेल को जुलाई 1947 में

इसका कार्यभार सौंपा गया उन्होंने राजाओं से बातचीत की और उनके भारत में मिलने की आवश्यक संभावनाएँ बताई तथा स्पष्ट संदेश दिया कि यदि वह ऐसा नहीं करते है, तो सेना द्वारा भारत के संगठन का काम किया जायेगा। 15 अगस्त 1947 तक सभी राज्यों ने इसे स्वीकार कर लिया केवल कश्मीर, हैदराबाद और जूनागढ़ राज्य इससे सहमत नहीं थे पर अगले दो वर्षों में यह राज्य भी भारत में शामिल हो गये।

राज्यों के शासन को सरकार ने ले लिया, तथा इन राज्यों के राजाओं को उनके खर्चे के लिये राशि घोषित की गयी जिसे प्रीवि पर्स कहा जाता था। हस्तांतरित राज्यों के लिये नयी शासक इकाईयाँ बनायी गयी। भारत के नये राज्यों के निर्माण की इस प्रक्रिया का पहला चरण 1956 तक चला। तथा 1971 में सरकार ने राजपरिवारों द्वारा उपयोग की जाने वाली उपाधियाँ और प्रीवि पर्स भी देना बंद कर दिया।

इस प्रकार नव भारत जिसे हम जानते हैं बना। वह 1947 में एक गरीब देश था जिसके पास कम मानवीय प्रगति और कम संगठनात्मक सुविधाएँ थी। दो शताब्दियों के उपनिवेशीकरण ने देश के सारे विकास के रास्ते बंद कर दिये थे और जनता के आत्मविश्वास को भी कमजोर कर दिया था। अब नये आत्मनिर्भर, समानता पूर्ण भारत को बनाना हमारे लिये एक चुनौती भी है और अवसर भी।

मुख्य शब्द

शासित दर्ज़ा (रूप)　　फूट डालो और राज करो　　पृथक चुनावी क्षेत्र

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें।

1. एक ऐसी तालिका बनाइए जो द्वितीय विश्व युद्ध के संबंध में अलग वर्गों और व्यक्तिगत भारतीय विचारों को दर्शाती है तथा कौनसे उतार चढ़ाव को इन वर्गों ने झेला है? (AS_1)
2. जिस नृशंस तरह से यहूदी और अन्य वर्ग जर्मनी में प्रताड़ित हुए उसे जानते हुये क्या हम नैतिक रूप से जर्मनी और जापान का साथ दे सकते थे? (AS_1)
3. भारत के विभाजन के कारणों की सूची बनाइए। (AS_1)
4. किस तरह से विभाजन के पूर्व विभिन्न सम्प्रदायों में शक्ति का संतुलन था? (AS_1)
5. किस तरह से ब्रिटिश उपनिवेशों ने "फूट डालो और राज करो" नीति का भारत में अनुसरण किया और यह किस तरह से नायजीरिया की स्थितियों से भिन्न व समान था? (AS_1)
6. विभाजन के पूर्व किन विभिन्न रूपों से राजनीति में धर्म का प्रयोग किया गया? (AS_1)
7. किस तरह स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम वर्षों में किसान और मज़दूर किस प्रकार गतिशील हुए? (AS_1)
8. विभाजन ने आम लोगों पर क्या प्रभाव डाला? तथा विभाजन के समय लोगों द्वारा स्थान बदलाव का राजनीतिक दायित्व क्या बना? (AS_1)
9. विभिन्न राज प्रांतों का भारत में विलय एक चुनौती पूर्ण कार्य था। चर्चा कीजिए। (AS_1)
10. भारत के राजनीति मानचित्र में निम्नांकित स्थानों को पहचानिए। (AS_5)
    1) कश्मीर　2) हैदराबाद　3) जूनागढ़　4) बंगाल　5) त्रावनकोर
11. सुभाष चंद्रबोस के व्यक्तित्व में आप को कौनसे गुण अच्छे लगे? क्यों? (AS_6)

SCERT TELANGANA

अध्याय 15

स्वतंत्र भारत के संविधान की रचना

(The Making of Independent India's Constitution)

भारतीय संविधान का पुनर्गमन (Revisiting Indian Constitution)

आरंभ करने से पहले 8 वीं कक्षा की सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का 13 वाँ अध्याय पढ़िए और भारतीय संविधान से संबंधित निम्नलिखित कार्य को पूरा कीजिए।

- 1) भारतीय संविधान के कुछ महत्वपूर्ण सहायक अंश है:-__________; __________; __________; __________
- 2) प्रस्तावना में बताये गये भारतीय संविधान के मूलभूत आदर्श क्या हैं?
- 3) भारतीय संविधान की प्रस्तावना के साथ-साथ नीचे दी गयी दोनों प्रस्तावनाएँ पढ़िए और देखिए कि इनमें क्या समानताएँ और अंतर हैं। याद रखिए कि संविधान अपने देश में होने वाली राजनैतिक घटनाओं को भी दर्शाता है। उन राजनैतिक घटनाओं को जोड़ने का प्रयास कीजिए जो संविधान में स्थान पाने वाले विचारों को प्रभावित कर सकती हैं।

नेपाल के अंतरिम संविधान की प्रस्तावना - 2007

हम, संप्रभुता और राज्य प्राधिकारिता नेपाल की जनता को सौंपते हैं। (1951) 2007 के पूर्व से लेकर अब तक विभिन्न समयों में नेपाल की जनता द्वारा, प्रजातंत्र, शांति और प्रगति के पक्ष में चलाये गये ऐतिहासिक संघर्षों और लोक आंदोलनों का आदर करते हैं। वर्ग, जाति, प्रांत और लिंग से संबंधित देश में प्रचलित समस्याओं के समाधान के लिए राज्य की विकासात्मक पुनः संरचना करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

प्रजातांत्रिक मूल्यों और मानदंडों जिसमें शासन की प्रतियोगितात्मक बहुदलीय प्रजातांत्रिक पद्धति, नागरिक स्वतंत्रता, मौलिक अधिकार, मानवाधिकार, वयस्क मताधिकार, समयानुसार चुनाव, प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता, स्वतंत्र न्यायपालिका और क़ानून के नियम की संकल्पना का समावेश है, हम उसके प्रति वचनबद्ध हैं। नेपाल की जनता के द्वारा, स्वयं अपने लिए संविधान का निर्माण करने तथा भयमुक्त वातावरण में निर्वाचन सभा के मुक्त और सही चुनावों में भाग लेने जैसे मूलभूत अधिकारों की गारंटी लेते हैं।

प्रजातंत्र, शांति, समृद्धि, प्रगतिशील सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन और संप्रभुता, एकीकृत स्वतंत्रता और देश की प्रतिष्ठा को केन्द्र में रखकर राजतंत्र को समाप्त करके, नेपाल को संघात्मक, प्रजातांत्रिक गणतंत्रात्मक राज्य घोषित करते हैं।

अब तक होने वाली क्रांतियों और आंदोलनों से प्राप्त उपलब्धियों के संस्थानीकरण के दृष्टिकोण से हम नेपाल के अंतरिम संविधान 2063(2007) की घोषणा करते हैं, जिसका निर्माण एक राजनैतिक अवबोध द्वारा हुआ है और यह तब तक लागू रहेगा जब तक कि संवैधानिक सभा द्वारा नये संविधान का निर्माण नहीं हो जाता ।

जापान के संविधान की प्रस्तावना 1946

हम जापानी लोग, राष्ट्रीय डाईट(diet) के चयनित प्रतिनिधियों द्वारा कार्य कर रहे हैं। हम, स्वयं को, तथा अपनी समृद्धि को जो अन्य देशों के साथ सहयोग का फल है, तथा अपनी स्वतंत्रता की सुरक्षा को निर्धारित करते हैं। सरकार के कार्यों के द्वारा हम फिर से युद्ध के भय की ओर नहीं बढ़ना चाहते हैं और घोषणा करते हैं कि सर्वोच्च शक्तियाँ जनता के पास ही रहेगी और हम दृढ़ता से संविधान को स्थापित करेंगे। सरकार जनता का पवित्र विश्वास है, ऐसी प्राधिकारिता है जो जनता द्वारा प्राप्त होती है, इसकी शक्तियों का प्रयोग जनता के प्रतिनिधियों द्वारा होता है तथा लाभ जनता द्वारा उठाये जाते हैं। यह मानव जाति का सार्वभौमिक सिद्धांत है जिस पर यह संविधान आधारित है। हम सभी संविधानों, नियमों, अध्यादेशों और पुर्नलेखों के संघर्षों को ठुकराते और खंडन करते हैं। हम, जापान के लोग हर समय शांति की कामना करते हैं और मानव संबंधों को नियंत्रित करने वाले उच्च आदर्शों में गहरी आस्था रखते हैं। संसार के शांतिप्रिय लोगों के लिए न्याय और विश्वास की कामना करते हुए हमारी सुरक्षा और अस्तित्व को संरक्षित रखना चाहते हैं। इस धरती से क्रूरता, असहनशीलता, गुलामी को मिटाकर अंतर्राष्ट्रीय समाज में एक सम्मानपूर्ण स्थान बनाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि संसार के सभी लोग भयमुक्त होकर शांति से जियें। हमारा विश्वास है कि कोई भी अकेला देश उत्तरदायी नहीं होता, किन्तु राजनैतिक नैतिकता के नियम सार्वभौमिक है और इस प्रकार के नियमों के पालन का दायित्व उन देशों पर है जो अपनी संप्रभुता को धारण करते हैं और अन्य देशों के साथ अपने संप्रभुत्व संबंधों को बनाये रखते हैं। हम, जापान के लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि सभी संसाधनों के साथ इन उच्च आदर्शों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमारी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को बनाये रखेंगे।

- राजनैतिक संदर्भ मे इन देशों के बीच क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं? इन घटनाओं के पहले क्या था? पिछले शासक कौन थे?
- किस प्रस्तावना में 'लिंग' शब्द का प्रयोग हुआ है?
- कौन सी प्रस्तावना शांति की कामना को दर्शाती है?

SCERT TELANGANA

- प्रस्तावना में लोक आंदोलनों को किस प्रकार दर्शाया गया है?
- अतीत की प्रस्तावनाओं में क्या समानताएँ और विषमताएँ थी?
- तीन देशों में आगामी समाज के लिए कैसे वादे किये गये थे?
- राजनैतिक व्यवस्था के स्वभाव के बारे में कैसे वादे किये गये?
- इन देशों के नागरिकों से कैसे वादे किये गये?

नेपाल की पृष्ठभूमि

राजा महेन्द्र द्वारा जारी किये गये नये संविधान के आधार पर 1959 ई में नेपाल में प्रथम चुनाव हुए। किंतु एक वर्ष के भीतर ही चयनित सरकार का पासा पलट गया और वास्तविक शक्तियाँ फिर से राजा के हाथ में आ गयी। प्रजातांत्रिक प्रतिनिधि सरकार के लिए जनता द्वारा किये गये निरंतर संघर्षो के कारण 1991 ई. में फिर से चुनाव हुए। इन चुनावों में नेपाल का कांग्रेस दल उच्च बहुमत से सत्ता में आया। साम्यवादी दल सरकार की इस व्यवस्था से संतुष्ट नहीं था क्योंकि अभी भी देश में राजतंत्र का ही शासन दिखायी पड़ रहा था। वे चाहते थे कि राजतंत्र का अंत हो और राजनैतिक व्यवस्था में पूर्ण सुधार हो। यह आंदोलन राजतंत्र के पक्ष और विपक्ष के बीच स्वयं एक सैन्य संघर्ष में बदल गया। 2007 में राजतंत्र के उन्मूलन से यह संघर्ष उच्चतम शिखर पर पहुँच गया।

वाद-विवादों का पठन (Reading Debates)

किसी भी देश का संविधान कुछ निश्चित आधारभूत ढाँचे और सिद्धांतों को उपलब्ध कराता है जिनके आधार पर राष्ट्र कार्य करता है और देश के भविष्य का निर्माण होता है। इसप्रकार संविधान के दो उद्देश्य होते हैं - अ) नागरिकों की भूमिका और अधिकारों तथा सरकार के विभिन्न अंगों जैसे कार्यपालिका, विधानमंडल और न्यायपालिका की संरचना और शक्तियों का खाका खींचना आदि। आ) भविष्य में समाज की प्रकृति को दर्शाना जिसका निर्माण राष्ट्र और समाज के संयुक्त प्रयासों द्वारा किया जाना है। इसप्रकार संविधान भविष्य में होने वाले क्रियाकलापों का अनिवार्य रूप से ढाँचा तैयार करता है और बताता है कि आगे बढ़ने के लिए किस प्रकार वर्तमान परिस्थितियों में सुधार होना चाहिए।

संविधान निर्माण की प्रक्रिया 2007 में शुरू हुई और 2015 तक भी यह पूर्ण नहीं हुई है। इसका कारण यह है कि कई मूलभूत मुद्दों पर नेपाल के विभिन राजनैतिक दल एक आम सहमति नहीं बना पा रहे हैं। संविधान निर्माण की प्रक्रिया, तर्क, चर्चा, संघर्षमय विचारों द्वारा अपनाये जाने वाले प्रारूपों और विषमताओं के निष्कासन की प्रक्रिया बन गयी है।

भारतीय संविधान का निर्माण :-

भारत का संविधान, संविधान सभा द्वारा बनाया गया और अपनाया गया है। यह ब्रिटिश उपनिवेशीय शासन के विरुद्ध भारतीय जनता द्वारा स्वतंत्रता के लिए किये गये लंबे संघर्ष का परिणाम था। जब ब्रिटिश सरकार ने भारतीय जनता को स्वतंत्रता देने का निश्चय कर लिया तो भारत की जनता के लिए स्वयं के शासन और दीर्घावधि उद्देश्यों के निर्माण के लिए संविधान की आवश्यकता का अनुभव हुआ।

SCERT TELANGANA